समर्पण ।

प्रभो ! आप काशीके राजा हैं, और किङ्कर नीच प्रजा है, प्रजाको अपने राजाके प्रसन्नार्थ कभी २ कुछ भेट अवश्य करना चाहिये,

परन्तु आप परिपूर्णकामको क्या भेट किया जाय कुछ दृष्टिमे नही आता, हाँ मेरी जाति लेखक की है, अतएव आपके प्रिय प्रजावोंके हितार्थ आपकी तथा आपके राजधानी काशीकी केवल किञ्चित् महिमा निज मतिअनुसार लिखकर अर्पण करता हूं।

आशा है कि श्री महाराज वो महारानी युगल कृपामूर्ति सकुटुम्ब, इसे देखि २ हँस २ कर अवश्य स्वीकार करैंगे।

सरकारी नीच प्रजा वो सेवक

हरिजनलाल।

सूचीपत्र ।

भूमिका ।

श्रीकाशी वार्षिक यात्रावली ।

श्रीगणेशाय नमः ।

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

॥ श्री गौरीशङ्कराभ्यांनमः ॥

भूमिका ।

इस असार संसार के प्राणीमात्रो मे श्रेष्ट पद मनुष्य ही को प्रदान किया गया है, कारण यह है कि इसमे हानि लाभ समझने की विशेष शक्ति है, जिसके बल से यह सदा सर्वोत्तम कार्यों को सुगम मे कर सकता है, परन्तु मेरे ऐसे मनुष्य इस पद को प्राप्त होकर भी केवल अपने शरीर ही के रक्षामे रहजाते हैं, यद्यपि इस शरीर ही के द्वारा चारो फल की प्राप्ती होती है, अतएव इसकी रक्षा भी आवश्यकता नुसार अवश्य होनी चाहिये, परन्तु इस शरीर की रक्षा करके इससे क्या मुख्य कार्य लेना चाहिये, सो भूल गए हैं,

मित्रो! इसका मुख्य कर्तव्य यही है कि गर्भवासादि महादुःखों का कारण जो आवागमन (जन्म मरण) है, उससे मुक्त होना, यदि यह शरीर यह काम न करसका तो निःसन्देह इसका धारण करना वा इसका पालन पोषणादि से रक्षा करनी व्यर्थ है,

परमात्मा ने जब एक से बहुत होने की इच्छा से माया का आश्रय लेकर भिन्न २ जीव जड चैतन्यमय अनेक प्रकार की सृष्टि की रचना किया, तभी उसने जीवों के प्राचीन संस्काररूप आगामी कर्मानुसार पाप पुण्य नर्क स्वर्ग, दुःख सुख, तथा उनके जानने वा उनसे निवृत्त होने के निमित्त कृपाकरि स्वयं चारो वेदों को प्रगट किया, और प्रेरणा करके अनेक ऋषियों द्वारा अनेक सद्ग्रन्थ जिसमें जीवों के कल्याणार्थ अनेक यत्न भरे हैं प्रकाशित करादिया है, वो उनके देखने वा समझने के लिये नेत्र वो बुद्धि भी दिये है, अब इतने पर भी जो जड जीव अपने

हानि लाभ को न जानकर अयोग्य ही कार्य किया करे तो क्यों न दोनों लोक में दुःख का भागी हो ।

शारिरिक रोगों से निवृत्त होने के लिये तो अनेक उपायों के ज्ञाता होते जारहे हैं परन्तु परलोक के लिये यथार्थ उद्योग करने वाले इस समय बहुत कम दीख पड़ते हैं, यद्यपि अनेक प्रकार की अवज्ञा और अज्ञान जनित पापों से जीवों का उद्धार करके पुनः अपने मे लीन करने के लिये उस परमकृपालु ने वेदों के द्वारा ब्रह्मज्ञान प्रगट कर दिया है, "ऋते ज्ञानान्मुक्तिः" "तरतिशोकमात्मवित्" इत्यादि बाक्यों से ज्ञान ही मुक्ति का हेतु हुवा, और उस ब्रह्मज्ञान साधन निमित्त तप, जप, योग, यज्ञादि अनेक उपाय भी बना दिये हैं । परन्तु तप, जप, योग यज्ञादि कलियुग में आयु, बुद्धि, विद्या, द्रव्य, और विशेषकर उद्योग के अभाव से, सर्वसाधारण से नहीं हो सकैंगे, यथा—

बहूपसर्गोयोगोयं कृच्छ्रसाध्यं तपोहियत् ।
योगाद्भ्रष्टस्तपोभ्रष्टोगर्भक्लेशसहः पुनः ॥ १४० ॥ (का० अ० २६)

अर्थात् योग तो अनेक बिघ्नो से भरा हुवा है, और तप बड़ा ही कष्ट साध्य है (और इसके बिना ज्ञान दुर्लभ है) अतः योग औ तपसे भ्रष्ट होकर बारंम्बार गर्भ वास का क्लेश सहना पड़ता है ।

अतएव वह सर्वशक्ति मान परम दयालू सर्वसाधारण जीवों के उपकारार्थ भी विशेषत्व युक्त स्वयं तीर्थ रूप ग्रहण करिके जगत मे प्रकाश मान हुवा, यथा ।

ब्रह्मैव तन्निर्गुणंनिर्विकारं निरन्तरं क्षेत्ररूपेणनित्यम् ।
तिष्ठत्येवन्त्यस्य कोयत्रनित्यं तद्रूपत्वात्सन्निहितएवास्ते ॥
विभूतिस्वां दर्शयिष्यन्गिरीशः क्षेत्राकारं प्राप्यतीर्थाकृतिश्च ॥(इतिपद्मपुराणे)

अर्थात् जो निरविकारनिर्गुण और नित्य ब्रह्म है, तद्रूपता से वही शङ्कर क्षेत्र (तीर्थ) रूप होकर अपने ऐश्वर्य को दिखलाता है ॥

तीर्थ शब्दका अर्थ तारना है अर्थात् जिसमें भवसागर से

तार देने की शक्ति हो वह तीर्थ है, और शास्त्रों में तीर्थों के (स्थावर, जंगम, मानस) तीन प्रकार वर्णन है, स्थावर भौमतीर्थ, जंगम, ब्राह्मणादि उपदेशक, मानस तीर्थ सत्यादिधर्म, यथा–

यथाशरीरस्योद्देशः केचिन्मेध्यतमः स्मृतः ।
तथापृथिव्यामुद्देशाः केचित् पुण्यतमाः स्मृताः ॥

अर्थात् शास्त्रकारोने लिखा है कि जिस प्रकार शरीर के विशेष २ भाग पवित्र है, उसी प्रकार पृथ्वीके भी कोई २ भाग अत्यंत पुण्यमय हैं, (उसीको स्थावर भौमतीर्थ कहते हैं)

ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं निर्मलं सर्वकामिकम् ।
येषां वाक्यो दकेनैवशुध्यन्ति मलिनाजनाः ॥

अर्थात् ब्राह्मण सर्वकाम के दाता निर्मल जंगम तीर्थ हैं, जिनके वाक्य रूपी जलसे जनों का मलिन मनशुद्धता को प्राप्त होता है ॥ (यह जंगम तीर्थ है)

सत्यंतीर्थं तपोतीर्थं तीर्थं मिन्द्रिय निग्रहम् ।
सर्वभूतदयातीर्थं सवत्रार्जव मेवच ॥ इत्यादि ।

अर्थात् सत्यतीर्थ है, तपतीर्थ है, और इन्द्रियों का जीतना तीर्थ है, सर्व प्राणियों पर दया करनातीर्थ है, वो कोमलसुभाव तीर्थ है, (यह मानसतीर्थ हैं) यह सब शंख के बचन हैं ।

परन्तु यहां (स्थावर) भौमतीर्थ से अभिप्राय है, इससे केवल भौमतीर्थ के विषय में लिखाजाता है, भूमि–के भी तीन विभाग किये गये हैं (भोग भूमि, कर्मभूमि, ज्ञानभूमि) भोगभूमि जिसके सेवन से लौकिक सुख प्राप्त हो (यथा इस समय इँग्लेण्डआदि माने गये हैं) और कर्म भूमि–जिस्के सेवन से परलोक सुख (स्वर्गादि) की प्राप्ती हो (यथा कुरुक्षेत्रादि) वो जिसके सेवन से अन्त समय ज्ञानको प्राप्त होकर इस अनित्य सदा चंचल आध्यात्मिक त्रिविध दुख के एक मात्र लीलास्थल संसार सागर से पार होकर परमानन्दमय शान्ति निकेतन नित्यधाम में पहुंच जाय उसे ज्ञान भूमि कहते हैं, (यथा श्री काशी, यहाँ अन्त समय साक्षात् शंकर ऐसेगुरु परम ज्ञानो पदेश करते हैं) भोग

भूमिके अतिरिक्त कर्म वो ज्ञान भूमिहीं को तीर्थ वा क्षेत्र कहते हैं, और कर्म भूमियों में प्रधान कुरुक्षेत्र है, सो कुरुक्षेत्र स्वयम काशी का साधक है यथा — महाभारतनीलकंठीटीकायाम्

" सर्वेषांतीर्थाणां कुरुक्षेत्रप्रापकत्वम् ।
कुरुक्षेत्रस्यतुकाशी प्रापकत्वम् "

अर्थात् सर्वतीर्थ कुरुक्षेत्र के प्रापक हैं, और कुरुक्षेत्र स्वयं काशी का साधक है ॥

क्रियार्थक "कृ" धातु से कुरुपद का निष्पत्ति और प्रकाशार्थक "काश" धातु से काशी पद की सिद्धि की आलोचना करने से हमारे सिद्धान्त की समीचीनता प्रति पन्न होगी ।

अब यहाँ यह शंका उत्पन्न हो सकती है कि परम ज्ञान स्वरूप विश्वेश्वर भगवान तो व्यापक रूप से सभी स्थानों पर हैं परन्तु सब स्थान काशी वा अपर तीर्थ (तारने वाले) नहीं माने गए इसका क्या कारण है ।

मित्रो ! यदि ऐसी तर्क की जाय तो इसकी गणना कुतर्क में होगी, क्योंकि उक्त लेख से यह सिद्ध हो चुका कि आदि सृष्टि ही से भूमि के तीन विभाग हो चुके हैं, तथापि पुनः भी सूचना कि जाती है. कि ईश्वर मय तथा ईश्वर रचित समस्त वस्तु हैं, परन्तु, उसकी इच्छा से प्रत्येक वस्तुवों के मुख्य २ गुण पृथक् २ हैं, इसमे तर्क की कोई आवश्यकता नहीं है, यथा सूर्य में प्रकाश, अग्नि मे उष्णता, चन्द्रमा मे शीतलता, भंग मे नशा, मिर्च मे तीतापन, जमाल गोटे मे रेचन (दस्तावर) शक्ति इत्यादि । अब इस विषय में यदि कोई तर्क करे कि ईश्वर सब में व्यापक रूप से समभाव है, अतएव सब के गुण एक ही से होने चाहिये, तो ऐसे तर्क को सिवाय कुतर्क के और क्या कहा जायगा, इसी प्रकार ईश्वर मय, तथा ईश्वर रचित भूमि के भिन्न २ भागों मे भी भिन्न २ गुण हैं, यथा, प्रायः कहा जाता है कि अमुक स्थान का जल वायु अच्छा है, तथा अमुक स्थान का नही, इसका क्या कारण है, जल वायु का भूमि से सम्बन्ध

है, जहाँ कि भूमि उत्तम होगी वहाँ के जल वायु भी उत्तम होंगे, और जो भूमि अच्छी न होगी वहां के जल वायू भी अच्छे न होंगे, जैसे प्रसिद्ध है कि अल मोड़ा की भूमि (भूआली) के सेवन करने से यक्ष्मा (तपेदिक) रोग अच्छा हो जाता है, तथा जिला मोतिहारी में रहने वालों का प्रायः गला फूल जाता है, और इसी प्रकार समुद्र में जहाँ का पानी अच्छा है चित्त में प्रसन्नता उत्पन्न होती है, वो जहाँ काला पानी पड़ता है, वहाँ जहाज के पहुँचने पर अनायास सब को मचली और वमन (क़य) होने लगती है। जब सब ही भूमि समान है तो सब के गुण भी समान होने चाहिये, एक दूसरे के प्रति कुल क्यों होते हैं, अच्छा भूमि को छोड़िये, यह तो मनुष्य के शरीर ही मे देखा जाता है कि (जैसा पूर्व में कहि आए है) कि कोई २ भाग पवित्र और कोई २ अपवित्र माने जाते हैं, उसी प्रकार भूमण्डलान्तरगत तीर्थ की भूमि मे भी पवित्रता वो तारने की शक्ति विशेष रक्खी गई है, और समस्त तीर्थों की अपेक्षा काशी में और भी विशेष तारणी (मुक्ति दायिनी) शक्ति मानी गई है, यह समस्त हमारे सनातन धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों से सिद्ध है यथा-

धर्मस्तु संपत्तिभरैः किलोह्यतेप्यर्थो हिकामैर्बहुदान भोगकैः।
अन्यत्र सर्वं सचमोक्षएकः काश्यां नचान्यत्र तथा यथात्र ॥२३॥ (का अ० ५)
अयोध्या यामथावन्त्यां मथुराया मथा पिवा।
द्वारवत्यां चकां ञ्च्यां वा माया पुर्यां मथोनृप ॥ ६३ ॥
अपिपातकि नोये च कालेन निधनंगताः।
तेहिस्वर्गादि हागत्य काश्यां मोक्षमवाप्नुयुः ॥६४॥ (का० ख० अ० २४)

अर्थात् किसी तीर्थ स्थान मे विशेष धन व्यय करने से धर्म का लाभ होता है, और कहीं पर बहुत भोगों की सामग्री के दान द्वारा, अर्थ और काम की भी प्राप्ती होसक्ती है, अथवा किसी एक ही स्थान में उक्त सब पाये जासक्ते हैं, परन्तु एक मोक्षपद जैसा काशी में प्राप्त होता है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं हो सकता, हेनृप ! अयोध्या, अवन्तिका, मथुरा, द्वारावती, काँची, अथवा मायापुरी

(हरिद्वार) में जो पातकी लोग यथा काल वासकरि मरजाते हैं, वह सब स्वर्ग से हो आकर यहां काशी ही में मोक्ष कों प्राप्त होते हैं ॥

अब यहाँ भी प्रश्न होसकता है कि तीर्थों मे भी न्यूनाधिक भाव क्यों रक्खा गया ?, काशी मे मोक्ष के कारण तो बहुत हैं, परन्तु ग्रन्थ के विस्तार भय सें थोड़े ही मे दिखाया जाता है, प्रथम युक्ति से इस प्रकार सिद्ध किया जाता है, कि यथा तीन पात्र हैं, उनमे एक खाली और दूसरे मे जल भरा हुवा है, परन्तु जल भरा पात्र भूमि सुडौल न होने किंवा वायु के स्पर्श से हिल रहा है, तीसरा जल से परिपूर्ण और शान्त है, यदि विचार दृष्टि से मध्यान्ह के समय इनमे देखा जाय तो एकही सूर्य का प्रति विंब तीनो पात्रो मैं पड़ रहा है, परन्तु जो खाली है उस्में बिलकुल नहीं दीख पड़ता, और जो हिलता है उसमे प्रति विंब दीख पड़ता है, परन्तु स्पष्ट नहीं, और जो जल से पूर्ण और शान्त है, उसमें पूर्ण रूप से स्वच्छतेजो मय भासता है। दूसरा उदाहरण यह है कि कहीं तीन स्थानपर अग्नि स्थापित हो उस्में एक स्थान मे राखसेढका हुवा, और दूसरे स्थानपर किंचित प्रकाशित, तथा तीसरे स्थान पर विशेष रूप से प्रज्वलित है, अब अग्नि का सम्बन्ध तीनो ही स्थानो मे है, परन्तु यदि कोई उनतीनो स्थानपर पृथक् २ तीन पात्र रखकर कुछ पाक बनाया चाहे तो जो अग्नि राखसेढका है उस पर के पात्र मे कदाचित् उष्णतादि आजाय, और जो किंचित् प्रकाशित है उसपर पंखे की सहायता आदि यत्नो से कुछ देर मे पाक तैयार होगा, परन्तु जो विशेष प्रज्वलित है उस पर बिना प्रयास ही शीघ्र परिपक्व हो जायगा। तीसरा उदाहरण यह है कि जैसे सूर्य सब स्थानपर एक रस प्रकाशमान है परन्तु उससे अग्नितभी प्रकट होगा कि जब आग्नेय काच (आतशीशीशा) का अवलम्ब लिया जायगा, इसी प्रकार समस्त ब्रह्ममय ब्रह्माण्ड तथा समस्त तीर्थ और श्रीकाशीजी मे अंतर समुझना चाहिये, और मुक्ति प्रद शंकर से मुक्ति भी तभी मिल सक्ती है कि जब श्रीकाशी

का अवलम्ब लिया जाय।

अब किंचित् सद्ग्रन्थों के प्रमाण से काशी की सब तीर्थों से विशेषता दिखाई जाती है, संसार मे जितने तीर्थ हैं, वह विश्वनाथ के अंश से प्रकाशित है, और इस काशी मे सच्चिदानन्द परब्रह्म विश्वनाथ ही मूर्तिमान होकर स्वयं विराजमान हैं, इससे अपरतीर्थ इसकी समता को नही पासकते। यथा—

विश्वेश्वरोयत्र नतत्राचित्रं धर्मार्थकामामृतरूप रूपः।
स्वरूप रूपः सहिविश्वरूपस्तस्मान्न काशी सदृशी त्रिलोकी॥९८॥ (का० खं० अ० ३)

अर्थात्—भला जहांपर धर्म, अर्थ, काम, और मोक्षको देनेहीं के लिये मूर्तिमान होकर भगवान विश्वेश्वर स्वयं विराजमान हैं, वहाँपर (मुक्ति लाभ) यह कौन आश्चर्य की बात है, क्योंकि वह विश्वनाथ अखण्ड सच्चिदानन्द साक्षात् विश्वरूप है, इसीसे त्रैलोक्य भी काशी के समान नही है।

और इसीसे यह काशी सर्व तीर्थोंसे, अधिक और सुगमता युक्त तथा शीघ्र अपना कर्तव्य भी दिखाती है, यथा—

निष्प्रत्यूहेनयोगेन नानाजन्मार्जितेनच।
यत्फलंलभतेऽन्यत्रतत्काश्यांत्यजतस्तनुम्॥ ३३॥
तप्त्वातपांसिसर्वाणि बहुकालं जितेन्द्रियैः।
यत्फलंलभ्यतेऽन्यत्रतत्काश्यामेक रात्रतः॥ ३४॥ (का० खं० अ० २६)

अर्थात्—अन्य स्थानो मे अनेक जन्मार्जितनिर्विघ्न योग के द्वारा जो फल प्राप्त किया जाता है, काशी मे वह (फल) केवल शरीर के त्याग मात्र से मिल जाता है॥ ३३॥ अन्यत्र बहुत काल जितेन्द्रिय होकर सर्वप्रकार की तपस्या करने से जो फल लाभ होता है, काशी मे वह फल एकरात्रिमात्र (जागरन) से हस्त गत हो सकता है॥ ३४॥

इसका कारण यह है कि यह पञ्चक्रोशात्मिका काशी नामकी भूमियथार्थ मेतेजो मय शिवलिंग (मूर्तिमान) है, यथा—

यल्लिङ्गं दृष्टवन्तौहि नारायण पिता महौ।
तदेवलोके वेदेच काशीतिपरिगीयते॥ ५३॥ (पद्मपुराणान्तर्गतकाशीमहात्म्ये)

अर्थात् जिसतेजो मयलिंग को नारायण और ब्रह्मा ने निरी क्षण किया था वही लिंग लोक और वेदमे काशी के नाम से निर्देश किया गया है ॥ ५३ ॥ तथा—

यत्तच्छि वानन्द मनन्त माद्यं यदावयोर्नित्यम भिन्नरूपम् ।
हृद्यं समस्तो पनिषत्सुभक्कै जानीहितेजस्तदहो विमुक्तम् ॥
ज्योतिर्लिङ्गत्वमेवार्ये लिङ्गीचाहं महेश्वरः ।
तदेतद विमुक्ताख्यं ज्योतिरा लोक्यतां प्रिये ॥ (सनत्कुमार संहितायाम्)

(अर्थात् श्री शंकर जी पार्वती जी से कहते हैं कि) हे प्रिये ! जो शिव (कल्याण रूप) आनन्द मय अनंत सब के आदि और उपनिषदों से जानने योग्य है और हम तुम दोनो का नित्य और अभिन्न रूप तेज है वही अविमुक्त (काशी) है ऐसा जानो, हे आर्ये ! ज्योतिर्लिङ्ग तुम हो और लिंग वान महेश्वर मै हुं, और वही यह ज्योति रूप अविमुक्त (काशी) है, इसे देखो ।

और इसका महा प्रलय मे भी नाश नही है, (महा प्रलय काल में किस रूप से रहती है सो कहते हैं,) यथा—

छत्राकारन्तुकिं ज्योतिर्जलादूर्द्ध्वं प्रकाशते ।
निमग्नायां धरण्यान्तु ननिमज्जति तत्कथम् ॥
सदाशिवो महादेवोलिङ्गरूपधरः प्रभुः ।
मयास्मृतो लोक गुप्त्यै प्रादेश परिमाणतः ॥
लिङ्गरूपधरः शम्भुर्हृदयाद् वहिरागतः ।
वृद्धिमासाद्यमहतीं पञ्चक्रोशात्मको भवेत् ॥ (इतिब्रह्मवैवर्तपुराणे)

(अर्थात् ऋषि गण जो अमर हैं, प्रलय समय मे श्री सनातन महा विष्णु से पूछते हैं,) हे भगवन् ! यह छत्र के आकार ज्योति जल के ऊपर क्या प्रकाशित है, जो प्रलय काल मे पृथ्वी के डूबने से भी नहीं डूबता ? (विष्णु ने कहा) हे ऋषियो ! लिङ्ग रूप धारी सदा शिव महादेव का हमने लोकों के लिये (आदि मे) स्मरण किया था, तब वह लिङ्ग रूप स्वयं प्रदेश (एक वित्ता) प्रमाण होकर हमारे हृदय से वही गर्त हुये पुनः अतिशय वृद्धि को पाकर पञ्चक्रोशात्मक (काशी) हो गए (यह सोइ है) तथा—

अविमुक्तं महत्क्षेत्रं पञ्चक्रोशपरीमितम् ।
ज्योति लिंगं तदेकं हिज्ञेयं विश्वेश्वराभिधम् ॥ १३१ ॥ (का० खं० अ० २६)

अर्थात्–पञ्चक्रोश परिमाण अविमुक्त (काशी) नामक जो महाक्षेत्र है, उसे एक ही विश्वेश्वर नामक ज्योतिर्लिङ्ग जानना चाहिये।

और काशी पृथ्वी से अलग वो चैतन्य रूप है, इससे प्रलय काल मे भी नाश को नहीं प्राप्त होती, यथा—

जड़त्वात्पृथिवीमग्ना सप्राणिनगकानना।
अजड़त्वादिदंलिङ्गं छत्राकारमवस्थितम्॥
तत्परं परमज्योतिः काशीति प्रथितं श्रुतौ।
तस्मात्काशीब्रह्मरूपाऽजड़ा पृथ्व्या न सङ्गता॥ (इति ब्रह्मवैवर्तपुराणे)
दैनं दिनेऽथप्रलयेत्रिशूलकोटौ समुत्क्षिप्य पुरीं हरः-स्वाम्।
बिभर्ति संवर्तमहाऽस्थिभूषणस्ततोहि काशी कलिकालवर्जिता॥ ११०॥
(का० खं० अ० ३०)

अर्थात् पृथ्वी जड़ है, इस से प्रलयकाल मे जल मे डूबजाती है, और यह शिवलिङ्ग रूप काशी जड़ नही चैतन्य है, इससे छत्राकार रहजाती है, अतएव वह ब्रह्मरूप काशी चेतन होने से पृथ्वी से संमिलित भी कदापि नही होसकती, और फिर दैनदिन (प्रलय काल) मे अस्थिमाला (मुण्डमाला) से विभूषित भगवान शिव-काशी को अपने त्रिशूल के अग्रभाग पर उठाकर रक्षा करते है (इसी से वहाँ पर कलिकाल का भी वश नहीं चलता) तथा–

तामसीं प्रकृतिं प्राप्य कालो भूत्वा चराचरम्।
ग्रसामि लीलया देवि काशीं रक्षामि यत्नतः॥ १३३॥
काशीवासिजनो देवि मम गर्भे वसेत्सदा।
अतस्तं मोचयाम्यंते प्रतिज्ञेयं यतो मम॥ १३२॥ (का० खं० अ० ३२)

अर्थात् मै (प्रलय मे तामसी प्रकृति धारण करके काल मूर्ति बनकर चराचर विश्व को लीलानुसार ग्रास कर जाता हूँ, परन्तु काशी को प्रयत्न से रक्षा करता हूँ, काशीवासी जन सर्वदा मेरे ही गर्भ मे निवास करते है, अतएव मै अन्तकाल समय मे उनका (अज्ञान) उड़ा देता हूँ, क्योकि यह मेरी प्रतिज्ञा है॥ (इतना ही नही किन्तु काशीवासी जनो के लिये अधिक परिश्रम भी किया जाता है) यथा–

ब्रह्मज्ञानेन मुच्यन्ते नान्यथा जन्तवः क्वचित्।
ब्रह्मज्ञानमये क्षेत्रे प्रयागे वा तनुत्यजः ॥ ११५ ॥
ब्रह्मज्ञानं कुतो देवि कलिनोपहतात्मनाम्।
स्वभावचञ्चलाक्षाणां तद्ब्रह्मेह दिशाम्यहम् ॥ ११८ ॥
ब्रह्मज्ञानं तदेवाह काशी संस्थिति भागिनाम्।
दिशामि तारकं प्रान्ते मुच्यन्ते ते तु तत्क्षणात् ॥ ११६ ॥ (का० अ० ३२)

अर्थात् जीवमात्र ब्रह्मज्ञान होने से मुक्त होते है, प्रयाग तीर्थ हो चाहे यह ब्रह्मज्ञान क्षेत्र काशी हो, विना ब्रह्मज्ञान के कही भी मुक्ति नही होसकती, और हे देवी ! कलि के द्वारा उपहत बुद्धि और स्वभावतः चञ्चलेन्द्रिय मनुष्यों को ब्रह्मज्ञान कहाँ हो सकता है, इसी कारण मै इसस्थान (काशी) मे अन्त समयपर ब्रह्मज्ञान का उपदेश करता हूँ, अतएव काशीवासी जन अन्तसमय उसी ब्रह्मज्ञानरूप तारक (मन्त्र) उपदेश से उसी क्षण मुक्त होजाते है ॥

और सबसे विशेषता तो यह है कि काशी मे मरनेवाले कैसाहू कोई हो सबकी एकही गति है, अर्थात् पुण्यात्मा हो अथवा पापी सबको एकही प्रकारकी मुक्ति मिलती है, यथा–

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रावै वर्णसंकराः।
स्त्रियो म्लेच्छाश्च ये चान्ये संकीर्णाः पापयोनयः॥
कीटाः पिपीलिकाश्चैव येचान्ये मृगपक्षिणाः।
कालेन निधनं प्राप्ता अविमुक्ते शृणुप्रिये ॥
चन्द्रार्द्धमौलिनः सर्वेललाटाक्षा वृषध्वजाः।
शिवे ममपुरे देवि जायन्ते नात्र संशयः ॥ (इति मत्स्यपुराणे)

(अर्थात्) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वर्णसंकर (दोगला) स्त्री, म्लेच्छ, संकीर्ण (हिन्दू, और म्लेच्छ से उत्पन्न) पापयोनी (चाँडालादि) और कीट, (फनगी आदि) चीटी, वो सब पक्षी और सब मृग अर्थात् जीवमात्र जो इस अविमुक्त क्षेत्र मे कालके बस देह त्याग करते है, सो सब मस्तक मे अर्धचन्द्रधारी, वो ललाट मे नेत्र और वृषवाहिनी बनकर सब शिवरूप हो जाते है, (सारूप्य मुक्ति पाते है)।

अतएव यह निश्चय है कि काशी में सबको अवश्य मुक्ति मिलती है , यथा–

अष्टाङ्गादिभिरन्यैश्च तपोयज्ञव्रतादिभिः।
साधितैः पाक्षकी सिद्धिरविमुक्ते निरर्गला ॥ (इति ब्रह्मवैवर्तपुराणे)

अर्थात् अष्टाङ्गादि योग, तप, यज्ञादि, तथा और यत्नो के करने से मोक्ष प्राप्त हो अथवा न हो सन्देही रहता है, परन्तु काशी मे तो मोक्षकी सिद्धि निश्चित है ॥

अपर विधि मे सन्देह रहने का कारण यह है कि किसी प्रकार मोक्षका कारण ज्ञान मनुष्य प्राप्त भी करले परन्तु वह ज्ञान अन्त समय स्थिर रहे वा न रहे, यथा–राजऋषि भरतकी कथा (देहत्यागसमय मृगशिशुकी चिन्ता करिके जन्मान्तरमे मृगत्वको प्राप्त हुये) प्रगट है, परन्तु परम कारुणिक शरणागत बत्सल श्रीविश्वनाथकी कृपासे यहाँ वह सब शंकाये नही है, क्योकि यहा ऐसे समय तारकमन्त्र (जो ब्रह्मज्ञानका मूल है) उपदेश किया जाता है कि जिस समय के पश्चात् किसी प्रकार की वासना नहीं हो सकती, इसके अतिरिक्त औरभी जिस उपाय वा जिस स्थान पर मोक्ष की प्राप्ती हो विश्वनाथ वो काशीही के द्वारा होगी यथा-

अनाराध्यमहेशानमनवाप्यच काशिकाम् ।
योगाद्युपाय विज्ञोपिननिर्वाणमवाप्नुयात् ॥ ३३ ॥ (का० खं० अ० २६)

अर्थात् योगादि उपायो के जाननेवाले भी यदि चाहै कि बिना महेश्वर की आराधना तथा काशीलाभ किये ही बिना मोक्ष पावै तो यह कदापि नही हो सक्ता, (यदि किसी विशेष कारण से प्रत्यक्ष काशी न प्राप्त कर सकै, तो ध्यान ही करना होगा, यह आनन्द मय सबकी आदि और उपनिषदों से जानने योग्यादि विशेष माहात्म्य युक्त परब्रह्मरूप काशी है, सनत्कुमारसंहितादि से पूर्व मे सिद्ध होचुका है, और परब्रह्म का निराकार, साकार दो रूप होना प्रसिद्धही है, अब साकार तथा निराकार रुप काशी की उपासना किस प्रकार होना चाहिये सो बैदिकीय आज्ञा निवेदन है–यथा।

अथ हैनमत्रिः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यंय एषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मातं कथमहं विजानीयामिति । सहोवाच याज्ञवल्क्यः सोऽविमुक्तः उपास्यो यएषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मासोऽविमुक्तेप्रतिष्ठितइति ॥ सोऽविमुक्तः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति । वरणायांनाश्यां चमध्येप्रतिष्ठित इति ॥ कावै वरणाकाचनाशीति सर्वानिन्द्रियकृतान्दोषान्वारयतीतितेन वरणा भवतीति सर्वानिन्द्रियकृता न्पापान्नाशयतीति तेननाशी भवतीति ॥

अर्थात् –याज्ञवल्क्यमुनि से अत्रिमुनि ने प्रश्न किया जो अनंत ऽव्यक्त स्वरूप आत्मा है तिसको मै किस प्रकार जानसक्ता हूं? याज्ञवल्यमुनि बोले, तिसके निमित्तऽविमुक्त (काशी) की उपासना करने योग्य है, क्योंकि जो अनंत अव्यक्त आत्मा है सो अविमुक्त, मे प्रतिष्ठित (विराजमान) है, और वह अविमुक्त, वरणा और असी के बीच मे विराजमान है, जो सर्वेन्द्रियकृत दोषो को वारण करती है उस नदी का नाम वरणा, और सर्वेंद्रियकृत पापो को नाश करनेवाली का नाम असी है ॥

यह साकार ब्रह्म उपासको के निमित्त आज्ञा है,अब ज्ञानी, योगी आदि निराकार ब्रह्मोपासकों के, वा जो किसी विशेष कारण से, साक्षात् काशी सेवन मे असमर्थ हों उनके निमित्त वाक्य है, यथा–

भ्रुवोर्घ्राणस्यचयः सन्धिः सएषद्यौर्लोकस्य परस्य च सन्धिर्भवतीति । एतद्वैसन्धि सन्ध्यां ब्रह्मविद उपासते इति । सोऽविमुक्तउपास्यइति । सोऽविमुक्तं ज्ञानमाचष्टे। यो वैतदेवं वेदेति।२।इति जावालोपनिषदन्तर्गत द्वितीय सम्वादे

अर्थात्–भृकुटी वो नासिका की सन्धी जो उत्तम स्वर्ग लोक की संधी है, जिस संधिरूप सन्ध्या की ब्रह्मज्ञानी उपासना करते है, तहाँ अविमुक्त (काशी) की उपसना (ध्यान) करनें योग्य है, सो अविमुक्त का (ध्यान उपासको का ज्ञानदाता है ।

अब इस वैदिक महावाक्य से स्पष्ट होगया कि साकार वा निराकार वादी (ज्ञानी, योगी, द्वैत, अद्वैत,) आदि सर्व मुमुक्षु जनोको मुक्ति काशी ही द्वारा मिलती है, किसी को प्रत्यक्ष कासी की उपासना से, किसी को ध्यान से, परन्तु बिना काशी के किसी का कल्यान नही है ॥

इसीसे कहा जाता है कि काशी एक अलौकिक मूर्ति है, यथा—

वाराणसीहकरुणामयदिव्यमूर्तिरुत्सृज्ययत्रतुतनुं तनुभृत्सुखेन।
विश्वेशहङ् महसियत्सहसाप्रविश्य रूपेणतांवितनुतां पदवीं दधाति ॥ ७१ ॥
(का० खं० अ० ३०)

(अ०) इस संसार मे वाराणसी साक्षात् करुणामई अलौकिक मूर्ति है, क्योकि जहाँ प्राणी मात्र सुखपूर्वक देह त्याग कर उसी समय विश्वेश्वर के ज्ञानरूप ज्योति मे प्रवेश कर तद्रूप कैवल्य पद को धारण करलेते है ॥

अब इससे विशेष क्या कहा जा सकता है। कि—

येषांक्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसीगतिः ॥ ७४ ॥ (का० खं० अ० ३२)

(अ०) जिनकी कही भी गति नही होसकती उनकी गति वाराणसी ही है ॥

परन्तु सुकृत मान, वो पापियो के गति मे इतना भेद अवश्य है कि सुकृतमानो की गति, बिना प्रयास, तत्काल ही, और पापियो को पाप कर्म के भोगो को, शीघ्र ही भोगाकर, तब मोक्ष प्रदान किया जाता है, परन्तु अपर तीर्थों की भाँति मृतक पापी अनेक योनी मे जनमते मरते यमयातना दुःख भोगते हुए जिस प्रकार कुछ काल मे मुक्ति के अधिकारी होते है, वैसे नही, यहा पर मरनेवाले पापी भी यमयातना वा पुनर्जन्म नही पाते, यहाँ ही भैरवी यातना द्वारा स्वच्छ करके मोक्ष दे दी जाती है, पर उस भैरवी यातना और यमयातना मे कितना अन्तर है सो निम्न उदाहरण से प्रगट किया जाता है। यथा—

दो पुरुष फोड़े के रोग से पीड़ित है उसमे एक तो भीरु [डरपोक) स्वभाव के कारण अज्ञपुरुषो की सम्मति से अनेक प्रकार के साधारण यत्न करते हुये कृमि कष्टादिको भोगते असाध्यता को प्राप्त हो जीवन प्रान्त दुख भोगनेवाला हो गया, कदाचित कभी दैव योग किसी अच्छे गुणी से भेट होगई तो आरोग्य हुआ, परन्तु बहुत कष्टो को सहकर बहुत काल में,

और दूसरा रोगी प्रथम ही किसी अच्छे डाक्टर के शरण मे पहुँच गया उसने तुरंत उचित यत्न से (चीरफाड़, मलमहपट्टी कर घाव पुराय) शीघ्र अच्छा कर दिया, परन्तु जिस समय नश्तर के लिये शस्त्र निकाला रोगी के मनमे यही आया कि बहुत दिनो का कष्ट सहना अच्छा पर यह महाकष्ट नही अच्छा, और जब नश्तर के पश्चात् दवा २ कर मवाद् निकालने लगा तब तो यही निश्चित हुवा कि ऐसे शीघ्र आरोग्य प्रद यत्न से वे यत्न ही दीर्घकाल तक कष्ट सहना अच्छा था।

बस ऐसे ही भैरवी यातना और यम यातना मे अंतर समुझना चाहिये, अतएव काशीवासी सज्जनो को चाहिये कि यदि आनन्द पूर्वक थोड़े ही परिश्रम मे मुक्तिलाभ चाहते हो तो यथा शक्ति विधिवत् काशीवास करै।

प्रायः धर्मपथ मे अज्ञ नवीन शिक्षितो के मन में यह तर्क उठता है कि " यह सब गपोड़े है जो कि केवल काशीखण्डादि दो एक ग्रन्थ जो कि काशी ही के माहात्म मे लिखे गए हैं (जैसा कि पूर्व मे प्रगट किया गया है) यह कैसे निश्चित किया जाय कि काशी का माहात्म्य निःसन्देह ऐसा ही है "।

इसके परितोष के लिये यदि उद्योग किया जाय तो इस पुस्तक के रखने के लिये बड़ेभारी स्थान की आवश्यकता होगी, और मेरे तथा कुतर्की महाशयो के आयुकाल मे पूर्ण हो सकै या न हो सकै, क्योकि समस्त विषयो के सन्देह माननीय विद्वानो के वाक्य तथा सद्ग्रन्थो के प्रमाणो से ही दूर होते है, सो इस काशीका अमित माहात्म्य किस महात्माके लेख वा सद्ग्रन्थ मे नही है, काशीखण्डादि दोएक ग्रन्थोही मे नही किन्तु अमित ग्रन्थो मे है, उनमेसे थोड़े ग्रन्थ जोकि मेरे देखे वा सुने है, केवल उनका नाम लिख देता हूँ जिनको सन्देह हो निकालकर देख लेवै यथा—यजुर्वेद, जाबालोपनिषद, रामतापिनी, लिखितस्मृति, शृंगिस्मृति, पाराशरस्मृति, महाभारत, (बनपर्व अ० ८४ ; भीष्म

पर्व, अ० २४, कर्णपर्व, अ० ५, अनुसासनपर्व, अ० ३०) तथा शिवपुराण, लिङ्गपुराण, स्कन्दपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, नारदीयपुराण, (उत्तरखण्ड, अ० २९; ४८, ४९, ५०, ५१) आदि ब्रह्मपुराण (अ० ११) कूर्मपुराण, ब्राह्मी संहिता, (अ० ३१ से-३५ तक) मत्स्यपुराण, (अ० १८० से--१८५ तक) पद्मपुराण, (सृष्टिखण्ड, अ० १४ तथा स्वर्गखण्ड, अ० ३३-से३७-तक, और भूमिखण्ड अ० ९१) वामनपुराण, (अ० ३) अग्निपुराण (अ० ११२) मार्कण्डेयपुराण (अ० ८) इसी प्रकार, वायुपुराण, सौरपुराण, भविष्यपुराण, शिवरहस्य, वालमीकीय रामायण, श्रीमद्भागवत देवीभागवत, सनत्कुमार संहिता, तिरस्थली सेतु, नैषधचरित्र, काशीरहस्य, काशीमाहात्म्य, काशीदर्पण, काशीप्रकाश, काशी स्थित चन्द्रिका, काशीमुक्तिविवेक, काशीतत्वविवेक, काशी विनोद, काशीकुतूहल, श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कृत रामायण, इत्यादि सनातन धर्म सम्बन्धी अनेक सद्ग्रन्थो मे तथा -अन्य देशीय वो अन्य धर्मावलम्वी निरपेक्ष यथार्थ वादी विद्वानो के लेख से भी काशीकी प्रशंसाही पाई जाती है, यद्यपि उनलोगो से और हमारे धर्म सम्बन्धी वार्ताओ से कोई प्रयोजन नही है, इस कारण उनके थोड़ेही लेखको बहुत समुझना चाहिये यथा-

Extract from "Benares, the sacred City sketches, of Hindu life and religion" by E. B. Havell, A. R. C. A., Principal of the Government School of Art, Calcutta. Chapter V. Page 80-81.

"It is not in its architectural features that the Chief attraction of Benares lies. It is a microcosm of Indian life, customs, and popular beliefs that it furnishes a never-ending fascination. Here the student may read a living commentary, more Convincing than any record ever written, painted, or sculptured, of the life of ancient Egypt, Babylon, Nineveh, and Greece. Here the artist may see before him in the flesh the models of classics

sculptors and painters, which might have served for the Panathenaic frieze, the statuettes of Tanagra and the frescoes of Pompeii. The painter need not search for subjects; he will rather be bewildered by the Kaleidoscope of changing scenes, groups and incidents, with marvellous backgrounds and surroundings, which pass before him in endless succession.

You may spend hours on the ghats and in the streets and temples watching the old-world customs and the simple faith of the common people, who, show an earnestness and deep religious feeling which many conventional Christians might study with advantage."

हिन्दी अनुवाद,

ई, बी,, हेवेल, ए-आर–सी–ए, प्रिंसपल, गवर्नमेन्ट स्कूल आफ़ आर्ट, कलकत्ता, अपने "बनारस" नामक ग्रन्थ मे (अ० ५-पृ० ८०-८२ मे) ऐसा लिखते हैं, केवल शिल्पविद्या वा, वास्तुविद्या की दृष्टि से ही काशी की रमर्णायता का परिचय नहीं मिलता किन्तु प्राचीन भारत के रहने सहने के ढंग और प्राचीन भारतीय रीतियो की भी काशी आदर्श है वो इसी कारण और भी रमणिय प्रतीत होता है। प्राचीन मिस्रवेबिलन् निनिवृ और यूनान के लोग कैसे रहते थे इसका भी पूरा २ पता काशी मे चल सकता है, शिल्प शास्त्र के जानने वाले के लिये भी यह अच्छा स्थान है, क्योंकि यहाँ अब भी ऐसे शिल्पकार और चित्रकार विद्यमान है जो टनैग्रा के शिल्पकारो, वा पांपिआइ के चित्रकारी से कम नही गिने जासकते। यहाँ चित्रकारी के विषयो की कमी नही है हम यहाँ प्रतिदिन ऐसे अनन्त विषय देखते है घाटो पर मन्दिरो मे अथवा सड़को पर भी घंटो खड़े रह कर हम संसार की प्राचीन रीतियो तथा साधारण लोगों के धार्मिक भाव और धर्म्म मे दृढ़ विश्वास का अनुभव करसक्ते है कि अपने लोगो के लिये यह धार्मिक निष्ठा सीखने की बात है।

Extract from "Kashi or Benares" by Edvin Greaves of London Missionary Society, Benares. Chapter I. page 1.

Benares or Kashi illustrions is a city of great antiquity, of unrivalled sanctity, and of boundless renown. So great is its antiquity, that its existence, apparently, long anticipotes the dawn of history. It seems perfectly clear from tradition that Benares first existed, and then the rest of the world was-formed round it.

That Benares dates from very early times is a matter that admits no doubt, and likewise that it was from very early times renowned for its religious associations.

Chapter II. page 13.

And possibly there is not a city in the whole world which represents a more picturesque appearance than does Benares when viewed from the Ganges or from the Dufferine Bridge.

Chapter II. page 21.

And yet Benares is a healthy city. Let the visitor wonder and wander.

Chaper II. page 31.

To pass along the Banks in the evening is like the walking through the city of London on a Sunday, it is without the bustling life, which is one of the most striking features of the whole scene.

एड्विन्ग्रीक्ब्ज साहब, लन्दन मिशनरी सोसाइटी बनारस, अपने पुस्तक " काशी या-बनारस " में-(अ० १ पृ० १ मे) ऐसालिखा है ।

अर्थात् काशी या बनारस, यह एक श्रेष्ट और प्राचीन-स्थान है, पवित्रता मे इसके समान कोई (अपर देश) नही है, और इस्की अमित महिमा संसार मे बिख्यात है । इस्के प्राचीनता तथा स्थिति का यही प्रमाण है कि जब से इतिहाँस लिखना आरम्भ हुवा, उस्के प्रथम से है, परम्परा के कथन से निश्चित होता है कि सृष्टी के रचना मे, इस्कीरचना सब से प्रथम हुई है, पुनः भूमण्डल इस्कीचारो दिशा मे रचागया है,

काशी बहुत ही प्राचीन स्थान है, इस विषय में शंका होही

नहीं सकती, और यह प्राचीन समय से धर्म सम्बन्धी बातों मे भी विख्यात है, अ० २–पृ० १३।

जब काशी की शोभा गङ्गाजी मे से (नौकाश्रय) अथवा डफरन् वृज् (राजघाट का रेलवेपुल) से अवलोकन की जाती है, तो यही मान नापड़ता है कि भूमण्डल मात्र मे ऐसामनोहर स्थान और कोई नहीं है, अ० २–पृ० २१।

यह काशी सब के लिये सुखद स्थान है, अत एव यहाँ जात्रियों को भली प्रकार विचरने दो, [इसकी शोभा को देख कर] विस्मित होने दो, अ० ३–पृ० ३१

सन्ध्या समय, [काशी] मे गङ्गाजी के तटपर का टहलना लन्दन नगर [जोकि इस समय श्रीमती राजधानी हो रही है, और रविवार को जहाँ कुछ और भी तैयारी होती है, तिस] रविवार के टहलने के समान [सुखदायक] है,

इत्यादि अमित लेखकोंने श्रीकाशी की यथामति बहुत प्रसंसा लिखी है, तथापि काशी की महिमा अकथ्यही कही जाती है, यथा

अविमुक्त गुणान्वक्तुं देवदानव मानवैः । नशक्यन्तेऽप्रमेयत्वात् स्वयंयत्र-भवःस्थितः ॥ (इति मत्स्यपुराणे)

अर्थात् जिसमें आप श्रीविश्वेश्वर ही बास करते हैं उस अविमुक्त क्षेत्र (काशी) के गुण देवता दानव और मनुष्य नहीं कह सकते कारण यह है कि काशी के गुण अप्रमेय (गणना रहित) हैं तथा

अविमुक्तस्य माहात्म्यं षट् भिर्वक्त्रैः कथंमया ।
वक्तुंशक्यं नशक्नोति सहस्रास्योपि यत्परम् ॥ ७८ ॥ (का० खं० अ० २५)

अर्थात् षड़ानन कहते है कि जिस अविमुक्त क्षेत्र (काशी) का माहात्म्य सहस्र मुख से अनन्त (शेषजी) भी नहीं कह सकते तो उसे इन छ मुखों से मैं कैसे कह सकता हूँ (अर्थात् नहीं कह सकता, इससे अकथ्य है) इत्यादि–

अब उक्त लेखों द्वारा विद्वानों के निकट तो पूर्णतः सिद्ध हो गया कि काशी क्षेत्र के समान सर्वप्रकार सबको सुखद वो परमपुनीत स्थान दूसरा कोई नहीं है, और इससे यह उपदेश भी हो रहा है कि जो लोग काशी के अतिरिक्त अपर देशों में बसे हैं, वह अवश्य काशी के प्राप्ती का उद्योग करैं, और जिनको प्राप्त हो गई है वह बड़भागी पुरुष कदापि परित्यागन करैं क्योंकि मुक्ति यहां हीं मिलती है, यथा

एवंज्ञात्वातुमेधावीनाविमुक्तं त्यजेन्नरः।
अविमुक्तप्रसादेन विमुक्तोजायते यतः॥ ७७॥ (का० खं० अ० २५)

अर्थात् यह विचार कर बुद्धिमान मनुष्य को कभी काशी न छोड़ना चाहिये कि इस काशी के प्रसाद से (महादुर्लभ) मुक्ति प्राप्त होती है।

किन्तु काशी का त्याग इहाँ तक मना है कि तीर्थ वा किसी देवता के दर्शनार्थ भी कहीं बाहर न जाया जाय यथा

तीर्थार्थी न वहिर्गच्छन्नदेवार्थी कदाचन।
सर्वतीर्थानि देवाश्चवसन्त्यत्राविमुक्तके॥
अविमुक्तं समासाद्यनत्यजेन्मोक्षकामुकः॥ (इति ब्रह्मवैवर्तपुराणे)

अर्थात् तीर्थ वा देवता के अर्थ भी काशी के बाहरनहोना चाहिये क्योंकि सब तीर्थ वो सब देवता काशी में वास करते हैं, अतएव अविमुक्त (काशी) को प्राप्त होकर मोक्षाभिलाषी पुरुष कदापि नहीं त्याग करैं॥

अब काशी में किस प्रकार बास करना चाहिये उसका सारांश संक्षेप मे आगे लिखाजाता है।

॥ काशीवास विधि ॥

प्रथम काशी मे निम्न वस्तुवों का परित्याग करना चाहिये,

१—अन्य वर्ण वा जाति का अनुकरण (अर्थात् अपने २ वर्ण और जाति के अनुसार, श्रुति शास्त्र सम्मत धर्म जैसा कि जिनके बड़े लोग करते चले आते हों, उसको छोड़ कर अपर

वर्ण वा जाति की नक़ल) नकरै यदि करे तो उसके लिये काशी फली भूत नहीं होती, यथा

स्वस्वजात्यनुसारेण यो धर्मो यस्य कीर्तितः।
तत्तद्धर्मपरैरेव सेव्यावाराणसीपुरी॥
अन्यैः संसेव्यमानासाकीकटान्नातिरिच्यते॥ (इति पद्मपुराणे)

अर्थात् अपने २ जाति के अनुसार जो धर्म जिसके (शास्त्र में) कहे गए हैं, उसी धर्म मे जो जाति तत्पर रहती है, उन्हीं का वाराणसी सेवन सफल होता है, और जो लोग अपने धर्म को छोड़ अन्य धर्म मे रत रहते हैं, उनके निमित्त काशी कीकट [मगध] देश के समान है, [अर्थात् उनको मुक्ति नहीं देती]

२-मद्य मांस का सेवन न करना चाहिये, इस्के सेवन से शङ्कर प्रसन्न नहीं होते किन्तु रुष्ट हो निकट होकर भी दूर होजाते हैं, यथा-

क्वमांसक्व शिवेभक्तिः क्वमद्यंक्वशिवार्चनम्।
मद्यमांसरतानांच दूरेतिष्ठतिशङ्करः॥ ६०॥ (का० खं० अ० ३)

अर्थात् कहाँ मांस भोजन और कहाँ शिव की भक्ति, वो कहाँ मद्य पान और कहाँ शिव का पूजन ? (अर्थात्) महादेव मद्य और मांस सेवन करनेवाले से दूर ही रहते हैं, (तो ऐसे काशीवास वा शिव भक्ति से क्या लाभ होगा अर्थात् कुछ नहीं

३-शिव भक्तों को पीड़ित, तथा-काशी वा शिव शास्त्र की निन्दा, काल भैरव, वो काल भैरव के भक्तों से विरोध न करना चाहिये, इस्के विपरीत करने से मुक्ति नहीं प्राप्त हो सकती, किन्तु अनेक विघ्न प्राप्त होते हैं । और अन्त में नर्क की प्राप्ती होती है, यथा

अत्रोषित्वापीशभक्तान्विरुणद्धितुयः कुधीः
पुर्यैद्रुह्याति वामूढस्तस्यान्यत्रात्र नोगतिः॥ १३७॥
कालभैरवभक्तानां सदाकाशी निवासिनाम्।
विघ्नंयः कुरुतेमूढः सदुर्गतिमवाप्नुयात्॥ १४८॥
विश्वेश्वरे पियेभक्तानोभक्ताः कालभैरवे।
काश्यांते विघ्नसंघातं लभंतेतुपदेपदे॥ १४९॥ (का० खं० अ० ३१)

शिवनिन्दारतोमूढ़ः शिवशास्त्र विनिन्दकः ।
तस्यनोनिष्कृतिर्दृष्टाक्वापिशास्त्रेपिकेनचित् ॥ ३९ ॥
शिवनिन्दारतायेच शिवभक्तजनेष्वपि ।
तेयान्ति नरकेघोरेयावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥ ४१ ॥ (का० खं० अ० ७१)

अर्थात् इस काशी मे बासकर के भी जो शिव भक्तों को पीड़ा देता है, अथवा काशी पुरी की निन्दा करता है, उस मूर्ख को न यहाँ गति मिलती, और न किसी दूसरे स्थानपर मिल सक्ती है, जो मूढ़जन सदा काशी निवासी कालभैरव के भक्तों के लिये विघ्न करता है उसे दुर्गति प्राप्त होती है जो कोई विश्वेश्वर का भी भक्त होवै पर कालभैरव पर भक्ति न रखता हो तो उसे काशी मे पद २ पर विघ्न मिलता है, और जो मूढ़ जन शिवके निन्दक हों अथवा शिव शास्त्र के निन्दा मे तत्पर रहैं उनका निस्तार शास्त्र मे कहीं पर किसीने नहीं देखा है; जो लोग शिव की निन्दा अथवा शिव भक्तों की निन्दा करते हैं वह जब तक चन्द्र सूर्य हैं घोर नर्क में पड़ते हैं ।

४—शिव वो बिष्णु, पार्वती, वा लक्ष्मी, मे भेद न मानना चाहिये [प्रायःमतमतान्तर के भेद तथा वेसमुझी से शिव वो विष्णु मे लोग भेद मानते हैं, परन्तु सो भेद इस ज्ञान भूमि काशी में न होना चाहिये] और जो यहाँ भेद मानते हैं सो मूढ़ बुद्धि समुझे जाते हैं, यथा—

विष्णुरुद्रान्तरं चैव श्रीगौर्योरन्तरं तथा ।
गङ्गागौर्यन्तरंचैव योब्रूतेमूढ़धीस्तुसः ॥ ८४ ॥ (का० खं० अ० ८७)

अर्थात् विष्णु, और महादेव तथा पार्वती, वो गङ्गा मे जो भेद मानता है सो मूढ़ बुद्धी है (अर्थात् अपने हानि वो लाभ को नहीं समुझता, तात्पर्य ऐसे भेद बुद्धि वालों को भी यहाँ मुक्ति नहीं मिलती)

५—काशी पुण्य भूमि है, यहाँ किसी प्रकार का पाप भरसक न होना चाहिये, यदि पुरुष किसी विषय का आशक्त होय तो उसे चाहिये कि काशी के बाहर होकर मनोरथ

पूर्ण करे, परन्तु इस भूमि पर नहीं, यथा-

पापमे वहि कर्तव्यं मतिरस्ति यदीदृशी । सुखेनान्यत्रकर्तव्यं मह्यीह्यस्तिमहीयसी॥ ९५ ॥ अपिकामतुरोजन्तु रेकांरक्षति मातरम् । अपि पापकृता काशीरक्ष्यामोक्षार्थिनैकिका ॥ ९६ ॥ (का० खं० अ० २२)

अर्थात् यदि किसी का पापही करतव्य हो, ऐसही बुद्धी है तो इतनी बड़ी पृथ्वी पड़ी है, (काशी छोड़कर) अन्यत्र (जो कुकर्म चाहै) सुख पूर्वक करै, परन्तु कामातुर होने पर भी, प्राणी जैसे माता को बचाते हैं, वैसेही पापी होने परभी मोक्षार्थी पुरुषों को अकेली काशी भूमि तो सर्वथा बचादेनी चाहिये, इत्यादि (इसके अन्तरगत सब पाप आगए)॥

अब यहाँ यह तर्क उत्पन्न हो सकता है कि काशी वासियों को काशी मे मलमूत्रादि भी न त्याग करना चाहिये क्योंकि पुण्य भूमि मे इसका त्याग करना भी पापही है, मित्रो ऐसा नहीं, काशी शङ्कर का उदर है और काशी वासी उसमे गर्भ के वालक सदृशनिवास करते हैं, तो जीव पड़जाने पर जैसे बालक माता के उदर में मलमूत्रादि त्याग कर दोष भागी नहीं होता तैसेहीं काशी वासी भी [पंचक्रोशी यात्रा के अतिरिक्त] काशी मे मलमूत्र त्याग कर दोष भागी नहीं होते, यथा ।

तस्मात्काश्यां देवगेहेस्थितानां पुण्य कारिणाम् ।
अपराध सहस्राणि क्षमतेधूर्जटिर्घृणी ॥ (इति अग्निपुराणे)

अर्थात - (काशी त्याग क्षण मात्र वर्जित है) अत एव इस काशी रूपदेव गृह मे वास करने वाले पुण्यात्माओं के (मलमूत्र त्याग, तथा थूकना आदि) हज़ार अपराध दया वान विश्वेश्वर क्षमा करते हैं,

और काशी वासियों को अन्य जल न प्राप्त होनेपर गङ्गा-जल से मलमूत्र की शुद्धी करने मे भी दोष नहीं है, यथा —

सर्वाणियेषांगाङ्गेयैस्तोय-कृत्यानिदेहिनाम् ।
भूमिष्ठा अपितेमर्त्या अमर्त्या एववैहरे ॥ (इति काशीखंडे)

अर्थात्-जिस काशी वासियों के देह सम्बन्धी अथवा अपर सब कृत्य गङ्गाजल से होते हैं, वह मर्त्य (मनुष्य) पृथीवी मे स्थित हो कर भी अमर्त्य ही (देवता ही) के समान है,

—:०:—

आवश्यक कर्तव्य ।

१-मुक्ति चाहने वाले काशी वासियों को नित्यही उत्तर वाहिनी गङ्गा मे स्नान वो शिवलिङ्ग [विश्वेश्वरादि] का पूजन वो इन्द्रिय निग्रह आदि करना चाहिये, यथा

सेव्योत्तर वहानित्यं लिंगमर्च्यं प्रयत्नतः ।
दमोदानंदयानित्यंकर्तव्यं मुक्ति काङ्क्षिभिः ॥ ६५ ॥ (का० खं० अ० ६४)

अर्थात् मुक्ति चाहने वाले को नित्यही उत्तर वाहिनी का सेवन और प्रयत्न पूर्वक शिवलिङ्ग का पूजन वो इन्द्रियों को रोकना, यथाशक्ति दान तथासमस्त जीवों परसदैव दया करना चाहिये, (इसश्लोकमे भी अहिंसाकी सूचना कीगई है)

मणिकर्णिका स्नान और सन्ध्याप्राणा याम तथा विश्वनाथ के पूजन से ही, संसार भरके तीर्थों मे स्नान वो (रामेश्वरादि) सर्व शिवलिङ्गोंके पूजन और योगाभ्यास के करने का जो फल होता है सो सब सहजही मे मिल जाता है, यथा-

अन्यत्र योगाभ्यसना द्यावज्जन्मयदर्ज्यते ।
वाराणस्यांतदेकेन प्राणायामेन लभ्यते ॥ २८ ॥
सर्वतीर्थावगाहाच्च यावज्जन्मयदर्ज्यते ।
तदानन्दवनेप्राप्यं मणिकर्ण्येक मज्जनात् ॥ २९ ॥
सर्वलिंगार्चनात्पुण्यं यावज्जन्मयदर्ज्यते ।
सकृद्विश्वेशमभ्य र्च्यश्रद्धयातद वाप्यते ॥ ३० ॥ (का० खं० अ० ९६)

अर्थात् अन्यत्र जन्मभर जोगाभ्यास करने से जो फल प्राप्त होता है सो फ़ल बाराणसी मे एक ही प्राणायाम से मिलता है, और इस आनन्दवन (काशी) मे मणिकर्णिका पर केवल एक डुबकी से जो पुन्य होता है सो पुण्य जन्मभर सव तीर्थों मे स्नान करने पर भी नहीं मिल सकता, तथा जीवन

पर्यन्त समस्त शिवलिङ्ग (रामेश्वरादि) के आराधना से जो पुन्य मिलना कठिन है, सो पुण्य श्रद्धापूर्वक केवल एकही वार विश्वेश्वर के पूजन से शीघ्र ही मिल जाता है, अतएव और कुछ न हो तो प्रतिदिन मणिकर्णिका स्नान वो विश्वनाथ दर्शन होना चाहिये।

२—यदि किसी विशेष कारण से गंगास्नान वो विश्वेश्वरादि महान्‌लिङ्गों का किसी दिन दर्शन न हो सके तो घरही पर मार्जन करि किसी शिवलिङ्ग का दर्शन करके तब भोजन करना चाहिये, विना शिवलिङ्ग के दर्शन किये भोजन करना काशी वासियों को अत्यन्त दूषित है, यथा

परोहिनियमश्चैव मांविलोक्ययदश्यते।
माम नालोक्ययद्भुक्तं तद्भुक्तं केवलंत्वघम् ॥ ७६ ॥ (का० खं० अ० ६३)

अर्थात् (शंकर जी पार्वती जी से कहते हैं कि) मेरा दर्शन करके तभी भोजन करना यह बहुत ही उत्तम नियम है, क्योंकि मेरे दर्शन किये विनाहीं जो कुछ भोजन किया जाता है वह केवल पाप और हीन भोजन होता है।

३—यदि विद्या वा सतसंग से सद्धर्म का कुछ बोध हो तो यथा वकाश सामान्य जनों को सद्धर्म का उपदेश करना चाहिये, इससे अत्यन्त पुण्य का लाभ होता है यथा

येकाश्यांधर्म्मभूमिष्ठानिवसन्ति मुनीश्वराः।
ते तारयन्ति चात्मानं शतपूर्वान् शतावरान् ॥ ८ ॥ (का० मा० अ० २)

अर्थात् जो मनन शील महात्मा जन सद्धर्म उपदेश करते हुये काशी मे निवास करते हैं, वे अपने साथ पिछिली सौ पीढ़ियों को भी लेकर इस संसार सागर से पार उतरते हैं॥

४—क्रोधादि को जीतकर अपना अन्न खाते हुये काशी वास करने का महत्फल है।

संवत्सरं वसंस्तत्रजितक्रोधोजितेन्द्रियः।
अपरस्वविपुष्टांगः परान्न परिवर्जकः ॥ ६२ ॥
परापवादरहितः किं चिद्दानपरायणः।
समाःसहस्रमन्यत्र तेनतप्तं महत्तपः ॥ ६३ ॥ का० खं० अ० २५)

अर्थात् जो क्रोध वो इन्द्रियों को जीतकर अपने धन से अपना पालन पोषण करता हुवा पराए अन्न वो निन्दा को त्याग कर कुछ दान देता हुवा एक वर्ष परयन्त काशी वास करैतो उसै अन्यत्र सहस्र वर्ष तप करने का फल प्राप्त होता है।

५–काशी में विशेष करके हिंसा न करने के निमित्त फल दरसाया गया है, यथा–

अन्यत्र: प्राणिमात्रोपि रक्षणीय: प्रयत्नत: ।
एकस्मिन्रक्षिते जन्तावत्रकाश्यां प्रयत्नत: ।
त्रैलोक्यरक्षणात्पुण्यं यत्स्यात्तत्स्यान्नसंशय: ॥ १९ ॥ (का० खं० अ० ९६)

अर्थात् प्रयत्नपूर्वक काशी मे प्राणीमात्र की रक्षा करना चाहिये. क्योंकि यदि काशी मे प्रयत्नपूर्वक एक भी जन्तु की रक्षा हो सके तो निःसन्देह त्रैलोक्य भर के रक्षण का पुण्य होता है।

६–उक्त सर्व धर्म पालन से भी अधिक फलप्रद काशी-वासियों के लिये काशी अन्तर्गत यात्रा का बड़ा भारी माहात्म्य लिखा है, यहाँ तक कि और कोई विधि हो सके अथवा न हो सकै यात्रा तो अवश्यही होनी चाहिये, सो यात्रा आगे लिखी हुई यात्रावली से प्रगट होगी।

अब यहाँ एक प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि यदि परम दुर्लभ मुक्ति उक्त किंचित यत्न वा काशी वास करने से प्राप्त होती है, तो सब लोग काशीवास वा काशीयात्रा करके सहज में क्यों नहीं प्राप्त करलेते ?

इसका कारण यह है कि काशीवास वा काशी यात्रा की ओर बुद्धि आना पूर्व पुण्यो के प्रभाव वो श्रीविश्वनाथ के कृपा के आधीन है, यथा—

विश्वेशानुगृहीतानां विच्छिन्नाखिलकर्मणाम् ।
भवेत्काशीं प्रतिमतिर्नेतरेषां कदाचन ॥ १३० ॥
काशींप्रतिमनोतेषां निःशेषक्षालितैनसाम् ।
तएवमानवा लोके सत्यंनृपशवोपरे ॥ १३१ ॥ (का० खं० अ० ५०)

अर्थात् काशी की यात्रा की ओर उन्हीं की बुद्धि आसक्ती है, जिनपर विश्वनाथ की पूरी कृपा होती है, और जो अपने समस्त कर्म बन्धनों को काट चुके हैं, तथा जो लोग अपने समस्त पापों को धो डालते हैं,

उन्हीं का मन काशी की ओर झुकता है, और इसके अतिरिक्त दूसरों की बुद्धि, इधर कभी नहीं आसकती, जिन की मति काशी की ओर झुकती है, वही लोग संसार मे यथार्थ मनुष्य कहे जासकते हैं, अपर लोग सचमुच मनुष्यरूप पशुही हैं, और निःसन्देह जिसने काशी की यात्रा नहीं की उसका संसार में मनुष्य जन्मही लेना व्यर्थ है, अत एव इसे व्यर्थ न खोना चाहिये यथा-

श्रेयसांभाजनंचैतन्नृजन्म न मुधानयेत् ।
देवानामपि दुष्प्राप्यंकाशीसंदर्शनादृते ॥ १३३ ॥ (का० खं० अ० ५०)

अर्थात् समस्त कल्याणो का आधार और देवतों को भी दुष्प्राप्य (दुर्लभ) इस मनुष्यजन्मको विना काशीदर्शन (जात्रा) के वृथा नहीं खोना चाहिये ।

काशी की यात्रा करनेवाले मनुष्यों की क्या बड़ाई की जाय जब कि काशी की गलियो मे विचरनेवाले पशु भी देवतों से अच्छे माने जाते हैं, यथा

वरमेतेपिपशव आनन्दवनचारिणः ।
सदानन्दाः पुनर्देवा न नन्दनवनाश्रिताः ॥ १४ ॥ (का० खं० अ० ८५)

अर्थात् आनन्दवन (काशी) मे विचरनेवाले पशुगण नन्दनवनाविहारी देवतों के अपेक्षा (मुकाविले) बहुत ही अच्छे हैं, क्योंकि यह सब सदा आनन्दमय (जीवन्मुक्त) होगए हैं, और देवता नहीं ॥

अत एव मनुष्यमात्र को चाहिये कि प्रयत्नपूर्वक काशी मे वास करि यथाशक्ति काशी की सदा यात्रा करता रहै, विना यात्रा के कभी दिन व्यर्थ न होने देवै, यथा

नवन्ध्यं दिवसंकुर्याद्विनायात्रां क्वचित्कृती ॥ १०१ ॥ (का० खं० अ० १००)

अर्थात् पुण्यवान् जन विना (काशी की) यात्रा के कभी

दिन को व्यर्थ न जाने देवैं, तथा—

श्रद्धापूर्वमिमा यात्राः कर्तव्या क्षेत्रवासिभिः ।
पर्वस्वपि विशेषेण कार्या यात्राश्चसर्वतः ॥ १०० ॥ (का० खं० अ० १००)

अर्थात् काशीवासियों को काशी की यात्रा श्रद्धापूर्वक करनी चाहिये और जिस दिन कोई पर्व हो, उसदिन तो पर्व सम्बन्धी यात्रा अवश्य होनीही चाहिये, अभिप्राय कोई दिन व्यर्थ न जाने देवै, यथा

यस्यवन्ध्यंदिनंयाति काश्यां निवसतः सतः ।
निराशाः पितरस्तस्य तस्मिन्नेवदिनेऽभवन् ॥ १०२/२ । १०३/१ ॥ (का० खं० अ० १००)

अर्थात् काशीवास करनेवाले जिस सज्जन का कोई दिन व्यर्थ बीत जाता है, उस दिन उनके पितृगण निराशहो जाते हैं,।

अब उक्त लेखों से बुद्धिमानजन पूर्णरीति से समझ लेंगे कि काशीवासियों के लिये, परमार्थ साधनके अर्थ मुख्य कर्तव्य काशी यात्रा शीघ्र फल दात्री की कितनी आवश्यकता है ॥इति॥

इस यात्राका सद्यःफल ।

यह अनुचर पत्नी संयुक्त शारीरिककष्ट से अत्यन्त क्लेशित था, एक दिन मेरे उपर परमकृपा करनेवाले श्री पं० सिद्धेश्वरी जी (मो० जनार्दनपूर, जि० शाहाबाद निवासी) तथा पं० धर्म्मदत्तजी (नीची ब्रम्हपुरी, श० काशीनिवासी) मुझे प्रसिद्ध महात्मा श्री कचाबाबा जी (मो० जाल्हूपूर, जि० काशी) के शरण मे ले गये, उन्होंने मेरी दीनतापर दया करके आज्ञा दिया कि तुम अपने आराधना से भैरव जी को प्रसन्न करो, इससे बढ़कर शीघ्र आरोग्यप्रद और कोई उपाप नहीं है, निदान मै उनसे बिदा होकर अपने घर आय इसी विचार मे था कि किस प्रकार श्री भैरव जी को प्रसन्न करूँ, एक दिन पडा २ काशी खण्ड देख रहा था तो उसमे एक स्थान पर कथा आई कि भैरव जी काशी की यात्रा करनेवाले से शीघ्र प्रसन्न होते हैं, यह बात मुझे अत्यन्त प्रिय लगी, उसी समयसे कई महीनेमे काशी-

खंडादि ग्रन्थों से मुख्य २ यात्रावोंका आकर्षण करके इस काशी तत्वभास्कर उपनाम काशी वार्षिक यात्रा नामक ग्रन्थ को तैयार किया, और उसी के अनुसार चैत्र शु० १ सं० १९६९ वि० से यात्रा भी आरम्भ कर दिया, यात्रा आरम्भ करते ही स्त्री पुरुष दोनो शनैः २ आरोग्य होने लगे, वो थोडेही दिनमे विना किसी अपर यत्नके भली प्रकार आरोग्यता प्राप्त हुई, और यात्रा भी एक साल मे निर्विघ्न समाप्त होगई, इस प्रकार लौकिकमे अनुभव होनेसे परलोकके कल्याणपर भी विश्वास हुआ, अब अपने मित्रगणो के हितार्थ परोपकार बुद्धिसे इसे प्रकाशित करके आशा करता हूँ कि सर्व बुद्धिमान जन इसको परमहितैषी जानि इसके अनुसार यात्रा करके दोनो लोक मे कल्याण के भागी होकर मेरे परिश्रमको सफल करैंगे ॥

(काशी वार्षिक यात्रा विधि सूचना)।

स्मरण रहे कि वार्षिक यात्रा तिथी के अनुसार होगी, परन्तु दैनिक वा किसी २ महीने मे कोई २ पर्व ऐसे आते हैं जोकि महीना तिथि वार नक्षत्र योगादिके संयुक्त होते हैं और उनके माहात्म्य विशेष हैं, सो जिसमे कि श्रद्धालु महात्मा लोग स्वयं वा किसी ज्योतिषी द्वारा पचाङ्गसे आगामी पर्वोंको प्रथमही से निश्चित करि २ उस्के प्राप्ती निमित्त उत्सुक रहा करैं, प्रथमहीं सूचना कर दी गई है।

और किसी २ दिनकी यात्रा जोकि काशीखण्डादिके लेखसे विशेष चक्करकी समुझी जाती थी किन्तु सर्वसाधारणके लिये कठिन थी, सो दर्शन ही का अमित महातम समझकर सुगम कर दी गई है, यदि किसी को काशीखण्डादि ही के विधि-से करना होतो उस्के प्रमाणके श्लोकोंको देखकर उस्के अनुसार करैं और प्रायः बहुतसी ऐसी भी प्रतिष्ठित यात्रा हैं कि जिस्की कोई वार वा तिथि आदि नहीं निश्चित है, जिस दिन चाहैं कर

सक्ते हैं, सो जिस दिन वा तिथिमे कोई निश्चित यात्रा नहीं है, रख दी गई है, जिसमे कि वार्षिक यात्राके सम्बन्धसे वह सब यात्रा भी होजायँ, उस यात्राके प्रमाणमे तिथि आदि की लेख नहीं पाई जायगी, उक्त लेखके अतिरिक्त और भी जो बहुतसी तिथि छूटी हैं, जिस दिन किसी प्रकार की कोई यात्रा निश्चित नहीं है, उस दिन आवश्यक नित्य यात्रा (मणिकर्णिका-घाट स्नान श्री विश्वनाथादि देव दर्शन,) तथा दैनिक (जो दिन हो वह) यात्रा भी संमिलित करिके करना चाहिये।

और इस समय कलिकाल तथा यवनराजधानीके अनीति-युक्त उपद्रवसे, बहुतसे तीर्थ वो लिङ्ग (शिवमूर्ति) आदि लोप हो गये हैं तथापि उस स्थान ही की यात्रा वो पूजन से भी वही फल प्राप्त होता है, यथा

कलावत्यन्तगोप्यानि भविष्यन्ति गिरीन्द्रजे।
परं तेषां प्रभावो यः स स्वस्थानं न हास्यति॥ (इति काशीखण्डे)

अर्थात् " शंकरजी पार्वतीजीसे कहते हैं,, हे पार्वती ? कलियुगमें, लिङ्ग वा तीर्थ प्रायः अत्यन्त गुप्त हो जाँयगे, परन्तु उनका जो विशेष प्रभाव है, सो अपने स्थान को नहीं छोड़ेगा। और अन्य शास्त्रों मे भी कहा है कि " कलौस्थानानिपूज्यन्ते " अतएव गुप्त हुये मूर्ति वा तीर्थके स्थान ही का दर्शन वो पूजन करना चाहिये॥

और बहुतसे देवता तथा तीर्थके स्थान ऐसे हैं कि जो अब लोगोंके मकानमे पड़गए हैं, जिस्का प्रायःसबको पता नहीं लगता, पण्डालोग इधर उधर बहकाकर पुजा लिया करते हैं, तिस्को प्रगट करने के निमित्त मालिक मकानादिका नाम तथा-जिन स्थानोंमे नम्बर महाल, वो नम्बर मकानकी तखती लगी है, वह नं० इस ग्रन्थ मे उस देवता आदि के यात्रा सम्बन्धमे, रखे गए हैं, जिसके सहारे यात्रियोंको अब किसीसे पूछनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, नम्बर देखते २ स्वयम् पहुँच जा सकते हैं।

विशेष सूचना ।

जो महाशय श्री काशीजीकी वार्षिक यात्रा सविधि निरन्तर प्रतिज्ञापूर्वक एक वर्षमे किया चाहैं तो यदि हो सकै तो एक पठित कर्मकाण्डी तथा काशीका ज्ञाता ब्राह्मणको भी बराबर अपने साथ २ रक्खा करैं, इससे यह अभिप्राय सिद्ध होगा कि किसी २ दिन किसी २ स्थान पर पिण्डदान वा तर्पण आदि मन्त्र वा स्तुति सम्बन्धी कार्य पड़ते हैं,तो वह कार्य सुगमतासे विधिपूर्वक होते जाँयगे, तथा यह एक वर्ष की यात्रा है कदाचित किसी दिन कुछ शारीरिक व्यवस्था ठीक न रही अथवा किसी प्रकारका विघ्न उपस्थित होगया तो उस दिनकी यात्रा अपने स्थानापन्न करके उस ब्राह्मणद्वारा पूर्ण हो जा सक्ती है, और यद्यपि इसमे पता पूर्णरीतिसे दिया है तथापि एक ज्ञाताके रहनेसे भटकना न पड़ैगा, वो इस यात्राको आरम्भ करनेके लिये शुभ दिन वा शुभ मुहूर्त के विचारकी भी कोई आवश्यकता नहीं है, जिस दिन इच्छा हो आरम्भ कर देवै, इसके लिये वही शुभ दिन वही शुभ मुहूर्त है, कि जिस दिन इस यात्राका विचार मनमें उत्पन्न हो यथा–

काशी मुद्दिश्य यातानां सर्वः स्यात्समयः शुभः ।
मङ्गलं सकलं वस्तु न किञ्चिद्विचारयेत् ॥ इति ब्रह्मवैवर्तपुराणे)
तथा–सदा कृतयुगं चास्तु सदा चैवोत्तरायणम् ।
न ग्रहास्तोदयकृतो दोषो विश्वेश्वरालये ॥ (इति काशीखण्डे)

अर्थात्–काशीके उद्देशसे यात्रा करनेवालोंको सबही काल शुभ है, और सबही वस्तु मङ्गल है । इसका किञ्चित् भी विचार न करना चाहिये, तथा काशीमें सदा कृतयुग [सतयुग] और उत्तरायण है, और ग्रहोंके उदय वो अस्तका दोष भी विश्वेश्वरके आलयमे नहीं है, अर्थात् जब इच्छा हो यात्रा आरम्भ कर देना चाहिये ॥

और काशीयात्रामे जहाँतक निबह सकै सवारी और टाट आदि किसी किसिमका जूता व छाताका अवलम्ब न लेवै,

और धर्मयुक्त रहै, काशीयात्रामे सवारी तो यहांतक त्याज्य है कि जब विष्णु भगवान काशीकी यात्रामे आते हैं, तब गरुड़को काशीके सीमाके बाहर ही छोड़ दिया करते हैं, यथा–

पंचक्रोश्याश्च सीमानं प्राप्य देवो जनार्दनः ।
वैनतेयादवारुह्य करे धृत्वाध्रुवंततः ॥ ११२ ॥ (काशीखण्ड अ० २१)

अर्थात् वे जनार्दन देव पंचक्रोशीके सीमापर पहुँचकर गरुड़से उत्तर ध्रुवको हाथसे पकड़ [काशी सीमाके भीतर चले]

यात्रा आरम्भके एक दिन प्रथम मणिकर्णिका घाटस्नान करि नित्ययात्रा जैसा कि नीचे लिखा है प्रार्थना संयुक्त करै, अर्थात् प्रथम ढुण्ढिराज दर्शन वो पूजन तथा प्रार्थना, यथा

काशीकीं वार्षिकींयात्रां कर्तुमिच्छाम्यहं प्रभो ।
प्रार्थयेत्वांजगतत्पूज्य काशीजन विमोक्षक ॥
एतत् विधिश्चसंभारो निर्वाह्यस्ते कृपावशात् ।
अज्ञान सेवकंमत्वाकुरुयदु चिंत भवेत् ॥

हे प्रभो ! मैं काशीकी वार्षिक यात्रा करना चाहता हूँ, सोहे जगत पूज्य वो काशी सेवन करनेवालों को मोक्ष देनेवाले, मैं आपकी प्रार्थना करता हूँ कि इसयात्रा के विधिका संभारतथा निर्वाह आपके कृपाके आधीन है, मुझे आज्ञान सेवक समुझकर जैसा उचित हो वैसा किया जाय,(यह प्रार्थना ढुण्ढिराज सेकाल भैरव तक सर्व पुरुषवाचीदेतों के आगे करना चाहिये)

दण्डपाणी (ज्ञानवापी मसजिद के पीछे गली मे) दर्शन पूजन उक्त प्रार्थना करते हुये, ज्ञानवापी की प्रदक्षिणा करके, द्रौपदादित्य(विश्वनाथजीके सटे हनुमानजीके मंदिर नं० ३१/७ में अक्षयवटके नीचे) दर्शन पूजन उक्त प्रार्थना करते हुए, विष्णु भगवान (विश्वनाथजीके मंदिरके घेरमें, दक्षिण वो पश्चिमके कोनेपर) दर्शन वो पूजन और उक्त प्रार्थना करिके तत्पश्चात्, विश्वनाथजीका यथाशक्ति सविधि पूजन वो पूर्वोक्त प्रार्थना और साष्टाङ्ग दण्डवत वो परिक्रमा करि, पुनः श्रीअन्नपूर्णाजीका पूजन करिके इस प्रकार प्रार्थना करै, यथा–

काशिकीं वार्षिकींयात्रां कर्तु मिछाम्यहं शिवे ।
प्रार्थयेत्वां जगत्पू काशी जन विमोक्षिके ॥
एतत् विधेश्चसंभारो निर्वाह्यस्ते कृपावशात् ।
अज्ञाने सेवकं मत्वाकुरुयदुचितं भवेत् ॥

हे शिवे (अन्नपूर्णे) मैं काशीकी वार्षिकयात्रा किया चाहता हूं, सो हे जगत पूज्ये वो काशी सेवन करनेवालोंको मोक्षदेनेवाली, मैं आपकी प्रार्थना करता हूं, कि इस यात्राके विधिका संभार तथा निर्वाह आपके कृपाके आधीन है, मुझे आज्ञान सेवक समुझकर, जैसा उचित हो वैसा किया जाय ॥

पुनः कालभैरवकी पूजा वो पूर्वोक्त प्रार्थना (ढुण्ढिराजके निकट जो की गई है) करि अपने घर जाय, एक समय हविष्य अन्न (खीर) खाकर सनियम रहै, दूसरे दिनसे इस ग्रन्थके अनुसार, बार तिथि, तथा पर्व योगादिकी यात्रा देख २ कर बराबर करता रहै, और जिस दिन जहाँ वो जिस प्रधान देवताके दर्शनको जाय, वहांके समीपी देवतोंका भी दर्शन पूजन करता रहै । और जिस दिन कोई यात्रा न हो मणिकर्णिका स्नान वो पूर्वोक्त क्रम से विश्वेश्वर का दर्शन करता रहै ॥

इस यात्राके करनेमें मुझे पं० विहारीलालजी मिश्र (मो० काज़ीमंडी श० काशीनिवासी) तथा बलभद्रजी पण्डा यात्रा-वाल, (मो० अम्बियाकी मंडी, श० काशी निवासी) से जो की काशी यात्राके पूर्णज्ञाता हैं, अत्यन्त सहायता मिली है, मैं उनका परम अनुग्रहीत हूं ॥

॥ इति ॥
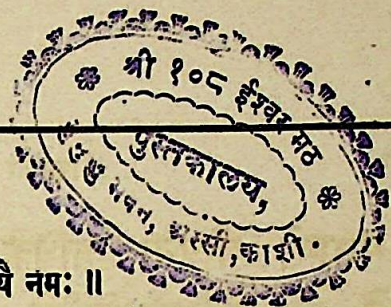
॥ श्रीवाराणसीदेव्यै नमः ॥

अथ श्रीकाशी वार्षिक यात्रावली ।

(ग्रन्थके विस्तारभयसे अब आगे प्रमाणोके श्लोकों-का सारांश संक्षेपमे प्रथम ही लिख दिया जायगा भूमिकाके समान पश्चात् अक्षरार्थ नही रहैगा)

नित्ययात्रा

श्रीगङ्गाजी –(मणिकर्णिकाघाट) स्नान करि विधिवत (जैसा कि आगे लिखा है) श्रीविश्वनाथजीका दर्शन करना चाहिये, यही नित्ययात्रा है, काशीवासियोको यह यात्रा प्रतिदिन प्रयत्नपूर्वक करनी चाहिये, इस्के करनेसे मनुष्य साक्षात् शिवरूप होकर पुनर्जन्म वो मरणसे छूट जाता है यथा (श्रीशंकरवाक्य पार्वती प्रति)

यात्राद्वयं प्रयत्नेन कर्तव्यं प्रतिवासरम् ॥ $\frac{१}{२}$ ॥ आदौ स्वर्गत-रङ्गिण्यास्ततो विश्वेशितुर्ध्रुवम् ॥ $\frac{२}{२}$ ॥ (का० खं० अ० १००)

कारण कि काशी केउत्तर वाहिनी गङ्गा (मणिकर्णिका घाट) का माहात्म्य, कुरुक्षेत्रसे कैगुना अधिक है, अर्थात् गङ्गोत्रीसे समुद्रपर्यंत कहीं भी गङ्गामे स्नान किया जाय तो तिस्का फल कुरुक्षेत्र के समान होता है, और जहाँ विन्ध्या-चलसे मिली है वहाँ कुरुक्षेत्रसे दसगुना अधिक फल प्राप्त होता है, वो जहाँ पश्चिमवाहिनी हो गई है, वहाँ विन्ध्याचल-

संगमसे सौगुना अधिक, और काशीमे जो उत्तरवाहिनी है सो पश्चिमवाहिनीसे भी हज़ारगुणा अधिक फलदात्री कही गई है, यथा

कुरुक्षेत्रसमा गङ्गा यत्र कुत्रावगाहिता । कुरुक्षेत्राद्दशगुणा यत्र विन्ध्येनसङ्गता॥ ततः शतगुणा प्रोक्ता यत्र पश्चिमवाहिनी। तस्मात्सहस्रगुणिता काश्यामुत्तरवाहिनी॥ (इति भविष्यपुराणे)

किन्तु श्रीगङ्गाके माहात्म्यको अन्यमतावलम्बी विद्वान भी मानते हैं, यथा अमेरिकाके एक प्रसिद्ध महाशय मार्कट्वेन् साहब ने अपने ट्रैम्प्स ऐब्रोड़ नामक ग्रन्थ अ० ६५—पृ० ३४४ मे लिखा है।

Extra from "More Tramps Abroad" by Mark Twain, of America. Chapter LV. page 344.

For ages and ages the Hindoos have had absolute faith that the water of the Ganges was utterlly pure, could not be defiled by any contact whatsoever and infallibly made purea nd clean whatsoever, thing touched it. They still believe it, and that is why they bath in it and drink it, caring nothing for it seeming filthness and the floating corpses. The Hindoos have been laughed at, these many generations, but the laughter will meet to modify itself a little from now on. How did they find out the waters' secret in those ancient ages. Had they germ scientists then we do not know. We only know that they had a civilization long before we emerged from savagery.

अर्थात् चिरकालसे हिन्दू जातिका ऐसा दृढ़ विश्वास है कि गङ्गाजल अत्यन्त पवित्र है, इसको कोई वस्तु मलिन नही कर सकती वरन जिस वस्तुका सहयोग होता है, वह वस्तु स्वयं अवश्य पवित्र हो जाती है। वर्तमान समयमे भी हिन्दू जातिकी वही अटल भक्ति है। अतएव

बाह्यरूपसे गङ्गाजल चाहे कितना ही मलिन क्यों न प्रतीत होता हो वा मृतशव ही उस्पर क्यों न तरते हों हिन्दूलोग यहां भक्तिपूर्वक स्नान करते हैं, और गङ्गाजल पीते हैं, लोग आजतक हिन्दुवोंकी इन सब बातों पर हँसते थे, परन्तु मुझको आशा है कि अब आगे वह लोग ऐसा न करेंगे (न हँसेगे) मुझको बड़ा आश्चर्य होता है कि हिन्दू जाति गङ्गाजलके प्रभावको इतने पहिले कैसे जान गई थी (जब कि साइँस विद्या आदिका प्रचार नहीं था) क्या इस जाति में पहिले ऐसे वैज्ञानिक तत्ववेत्ता थे ? हमलोग इस्का उत्तर नहीं दे सकते, परन्तु एतना अवश्य जानते हैं कि इस जाति की सभ्यता बहुत प्राचीन है और हमलोग नितान्त असभ्य और जंगली थे (इस लेखका यही तात्पर्य है कि पहिले हिन्दू जाति के लोग बड़े वैज्ञानिक थे, गङ्गादिका माहात्म्य अपने विज्ञान द्वारा जाँचकर जो कुछ लिखा है, बहुत सही है) अन्य लोगों का इतना ही लेख बहुत समझना चाहिये।

तथा विश्वेश्वरलिङ्गदर्शन माहात्म्य।

आलस्य करके भी जो कोई अपने घर से श्रीविश्वनाथजी के मन्दिर तक जाता है, उसको पद २ में अश्वमेधयज्ञसे अधिक पुण्य प्राप्त होता है, और जो मनुष्य उत्तरवाहिनी गङ्गामें स्नान करिके बड़ी श्रद्धासे विश्वनाथ दर्शनको जाता है, उस्के पुण्य का तो अन्त ही नहीं है, यथा

आलस्ये नापियोयायादूगृहाद्विश्वेश्वरालयम् । अश्वमेधा-

धिक्कोधर्मस्तस्यस्याच्चपदेपदे ॥ ८६ ॥ यः स्नात्वोत्तरवाहिन्यां यातिविश्वेशदर्शने । श्रद्धयापरया तस्यश्रेयसोंतोनविद्यते ॥ ८७ ॥ (का० खं० अ० ३)

॥ श्रीविश्वनाथ दर्शन विधि ॥

प्रथम [१] ढुण्ढिराजगणेश (प्रसिद्ध), तत् पश्चात् [२] दण्डपाणि भैरव (ज्ञानवापी मसजिदके पीछे गलीमे), पुनः उत्तर फाटकसे ज्ञानवापीमे आकर परिक्रमा वो आचमन करि, खिड़कीके राहसे विश्वानथजीके सदर दरवाज़ेसे होते हुए द्रौपदादित्य, (मो० विश्वनाथजी, शनिश्चर मूर्तिके सामने हनुमानजीके मन्दिर नं० $\frac{७}{३१}$ के घेरे मे अक्षयवटके नीचे), पुनः [५] श्रीविष्णु दर्शन (विश्वनाथ के घेरेमे दरवाज़से घुसतेही बाम भागमे) ततपश्चात् श्रीविश्वनाथजीका दर्शन, पुनः अन्नपूर्णाका दर्शन करना चाहिये, (इस प्रकार दर्शन करनेसे विश्वानथकी एक परिक्रमा होजाती है, किन्तु इसी प्रकार श्रीविश्वेश्वर की श्रीमुखवाक्य भी है, यथा ।

१ ढुण्ढि प्रणम्य पुरस्तवपादपद्मं योमां नमस्यति पुमानिह काशिवासी । तत्कर्णमूलमधिगम्य पुरादिशामि तत्किंचिदत्रनपुनर्भवतास्ति येन ॥ ३४ ॥ (का० खं० अ० ५७)

२ त्वत्साक्षात्कृतेक्षेत्रवरं हि यक्षराट् कस्त्वामनाराध्य विमुक्तिभाजनम् । सभाजनं पूर्वत एव ते चरेत्ततः समर्चां मम भक्त आचरेत् ॥ ॥९७ ॥ (का० खं० अ० ३२)

४ प्राग्रवेत्वां समाराध्य यो मां द्रक्ष्यति मानवः । तस्य त्वं दुःखतिमिरमपानुद निजैः करैः ॥१७॥ (का०खं०अ०४९)

५ आदावनाराध्य भवंतमत्रयोमां भजिष्यत्य पिभक्तियुक्तः । समीहितं तस्य न सेत्स्यति ध्रुवं परात्परामेम्बुजचक्रपाणे ॥ ॥ ३१ ॥ (का० खं० अ० ९८)

त्वमन्नदः काशिनिवासिनां सदा त्वं प्राणदो ज्ञानद एक एव हि।
त्वं मोक्षदो मन्मुखसूपदेशतस्त्वं निश्चलां सद्वसतिं विधास्यति॥
मद्भक्तियुक्तोपि विना त्वदीयां भक्तिं न काशीवसतिं लभेत।
ज्ञानोदतीर्थे विहितोदकक्रियो यस्त्वां समाराधयिता गणेशम्॥
(का० खं०)

यथा प्रचार पूजनान्तर्गत, गङ्गा जल, वा ज्ञानवापीजल छानकर, तथा पञ्चामृतसे विश्वनाथलिङ्गको स्नान कराने का, अमित फल लिखा है यथा

विधाय महतीं पूजां पञ्चामृतपुरःसराम्।
अस्य लिङ्गस्य लभते पुरुषार्थचतुष्टयम्॥ २९॥
वस्त्रपूतजलैर्लिङ्गं स्नापयित्वा ममामराः।
लक्षाश्वमेधजनितं पुण्यमाप्नोति सत्तमः॥३०॥(का०खं०अ०९९)

---

* अथ वारादि यात्रा *

(यह वारयात्रा तिथियात्रामे सम्मिलित होकर प्रतिदिन वा जिस दिन केवल नित्ययात्रा हो, जब इच्छा हो करता रहै, और जो दैनिक यात्रा पर्व तिथि नक्षत्र वो योगादिसे संमिलित हैं वह तो उसी दिन होना चाहिये जिस दिन पड़ी हों, इसका विचार हर महिनेके आरम्भ मे होजाना चाहिये) ×

* मङ्गलवार * मङ्गलेश्वर—दर्शन (मो० संकठाघाट प्रसिद्ध आत्मावीरेश्वरके मन्दिरमे) तथा आत्मा वीरेश्वरादि समीपी देवदर्शन।

× व्यतीपात योगमे (१) ज्ञानवापीके निकट पिंडदान करना.
,, (२) पादोदकतीर्थ(वरणासंगम) पर स्नान तर्पण गोदान. का.खं. ८१४

श्रीदुर्गादेवीदर्शन, (मो० दुर्गाकुंड प्रसिद्ध नं० २०/१ के समीप) यथा–

अष्टम्यांच चतुर्दश्यां भौमवारे विशेषतः।
संपूज्या सततं काश्यां दुर्गा दुर्गतिनाशिनी॥८२॥(का०खं०अ०७२)

दुर्गाकुण्ड स्नान वा मार्जन-प्रथम दुर्गविनायक (दुर्गाजी के पिछवाडे नं० २७/२) पश्चात् दुर्गाजी, तथा चण्डभैरव,(दुर्गाजीके घेरेमे कालीजीके मन्दिरमे) वो कुक्कुटेश्वर,तिलपर्णेश्वर (इसी मन्दिरके द्वारपर बलिप्रदान होता है) समीपी देवदर्शन।

श्रीभैरवयात्रा (कालभैरव प्रसिद्ध) मङ्गल तथा रविवार वो १४ तिथिको दर्शन करने से सर्वपातक नाश हो जाते हैं, और न करनेसे पुण्यक्षय होता है, जैसे कृष्णपक्षमे चन्द्रमा यथा–

भौमे भैरवयात्रा च कार्या पातकहारिणी ॥ ७४ ॥
(का० खं० अ० १०१) तथा–
अष्टम्यांच चतुर्दश्यां रविभूमिजवासरे।
यात्रां च भैरवीं कृत्वा कृतैः पापैः प्रमुच्यते ॥ ४७ ॥
कालराजं न यः काश्यां प्रतिभूताष्टमीकुजम्।
भजेत्तस्य क्षयेत् पुण्यं कृष्णपक्षे यथा शशी ९९ (का०ख.अ.३१)

तथा कालेश्वर (दण्डपाणिकी गली नं० १६/४७ वो कालमाधव (काठकी हवेलीके उत्तर–पश्चिमके कोनेपर) इत्यादि समीपी देवदर्शन ॥

श्रीबन्दीदेवी दर्शन (दशाश्वमेध घाटके ऊपर प्रागेश्वरका मन्दिर, बलभद्र पण्डाके मकान नं० १६/६८ मे) मंगलवार को व्रत-(एकवेर एक अन्न भोजन) करि, दर्शन वो

पूजनसे कहीं कैसहू वन्दी (कैदी) हो, कैदसे छूटजाता है ॥ यथा–

भौमवारे सदा पूज्या देवी निगड़भञ्जनी ।
कृत्वैकभुक्तं भक्त्यात्र वन्दीमोक्षणकाम्यया ॥ ४८ ॥
दूरस्थोपि हि यो बन्धुः सोपि क्षिप्रं समेष्यति ।
वन्दीपदजुषापुंसा श्रद्धया नात्र संशयः ॥५०॥ (का.खं.अ.७०

मङ्गलवारसंयुक्त चौथ–अङ्गारकेश्वर (अग्नीश्वर) दर्शन, (मो० गणेशघाटकेऊपर, छोढ़ियाजीके म० नं० ५४/१ मे) ऐसे दिन इनके दर्शन वो पूजन, वो प्रणाम करनेसे मनुष्योंको कभी कहीं कोई ग्रहजनित बाधा पीड़ा नही करसकती यथा-

अङ्गारकचतुर्थ्यां ये स्नात्वोत्तरवहाम्भसि ।
अभ्यर्च्याङ्गारकेशानं नमस्यन्ति नरोत्तमाः ॥ १५ ॥
न तेषां ग्रह पीड़ा च कदाचित्क्वापि जायते ।
अङ्गारकेन संयुक्ता चतुर्थी लभ्यते यदि ॥१६॥ (का० खं० अ.१७)

तथा–उपशान्तेश्वर (नं० ६४/४ इत्यादि समीपी देवदर्शन)

गणेशयात्रा–(मो० बड़े गणेश प्रसिद्ध नं० ५१/२ के समीप इसी पर्व (मङ्गलवार युक्त चौथ) को पूर्वकालमें गणेशजी उत्पन्न हुयेथे, इस कारण यह पर्व पुण्यसमृद्धिके अर्थ कहा-गया है ॥ यथा–

अङ्गारकचतुर्थ्यांतु पुरा जज्ञे गणेश्वरः ।
अतएव तु तत्पर्व प्रोक्तं पुण्यसमृद्धये ॥ १९ ॥ (का० खं० अ० १७)

तथा जम्बुकेश्वरादि समीपी देवदर्शन (गणेशजीके उत्तर-द्वारपर) इसके अतिरिक्त, इस पर्वको बुद्धिमान लोग ग्रहणके समान कहते हैं, ऐसे समय, दान, हवन, जपादि

सब अक्षय होता है, और श्रद्धायुक्त श्राद्ध करनेसे इस एक ही श्राद्धसे पितृगण बारह वर्षपर्यन्त तृप्त बने रहते हैं, यथा-

उपरागसमं पर्व तदुक्तं कालवेदिभिः।
तस्यां दत्तं हुतं जप्तं सर्वं भवति चाक्षयम् ॥ १७ ॥
श्रद्धया श्राद्धदा ये वै चतुर्थ्यङ्गारयोगतः।
तेषां पितॄणां भविता तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥ १८ ॥ (का० खं० अ० १७)

मङ्गलवार तथा भरणी नक्षत्रयुक्त-चतुर्दशी यमतीर्थ (मो० संकटाघाट प्रसिद्ध) स्नान पिण्डदान सतिल तर्पण, यमेश्वर, (घाट किनारे) तथा यमादित्य (म० न० ५८/८६ मे) दर्शन पूजन प्रणाम करनेसे मनुष्य पित्रों के ऋण से छूटजाता है, गया जाने तथा विशेष दक्षिणाके श्राद्धका कौन प्रयोजन है, यदि काशीके यमतीर्थपर उक्त योग मे श्राद्धका औसर मिलजाय यथा-

यमतीर्थे चतुर्दश्यां भरण्यां भौमवासरे।
तर्पणं पिण्डदानं च कृत्वा पित्रनृणी भवेत् ॥ १११ ॥
किं गयागमनैः पुंसां किं श्राद्धैर्भूरिदक्षिणैः।
यदि काश्यां यमे तीर्थे योगेस्मिञ्श्राद्धमाप्यते ॥ ११४ ॥
श्राद्धं कृत्वा यमे तीर्थे पूजयित्वा यमेश्वरम्।
यमादित्यं नमस्कृत्य पितॄणामनृणो भवेत् ॥ ११५ ॥
(का० खं० अ० ५१)

हरिश्चन्द्रेश्वर (५८/८२) वसिष्ठेश्वर (५८/७८) आत्मावीरेश्वरादि समीपी देवदर्शन ॥

मंगलवार-अमावास्या-(मो० केदारघाट प्रसिद्ध) केदार तीर्थ में स्नान, करि यदि कोई स्थिर चित्तसे पिण्डदान

करै तो उस्के एकसौ एक पुरुषा भवार्णवसे पार होजाते हैं किन्तु फिर गया श्राद्धकरनेकी कोई आवश्यकता नहीं रहजाती) यथा—

केदारतीर्थेयः स्नात्वा पिण्डान्दास्यति चात्वरः।
एकोत्तरशतं वंश्यास्तस्य तीर्णा भवाम्बुधिम् ॥ ५८ ॥
भौमवारे यदा दर्शस्तदा यः श्राद्धदो नरः।
केदारकुण्डमासाद्य गयाश्राद्धेन किंततः ॥ ५९ ॥

(का० खं० अ० ७७) केदारेश्वर (प्रसिद्ध) नीलकण्ठेश्वर श्यामकार्तिकादि समीपीदेवदर्शन ॥

❀ बुद्धवार ❀ बुद्धेश्वर—(मो० आत्मावीरेश्वर प्रसिद्ध के घेरेमे) इनके दर्शन वो पूजनसे, बुद्धी की प्राप्ती होती है, अगाध संसार मे गिरकर भी गोता नही खाता और साधुजनोके नेत्रोमे चन्द्रमाके तुल्य कान्ति मान सुन्दर वदन होकर अन्तमे बुद्धलोक मे निवास करता है, यथा—

काश्यां बुधेश्वरसमर्चनलब्धबुद्धेः।
संसारसिन्धुमधिगम्य नरो ह्यगाधम् ॥
मज्जेन्न सज्जनविलोचनचन्द्रकान्तिः।
कान्ताननस्त्वधिवसेच्चबुधेऽत्रलोके ॥६६॥ (का० खं० अ० १५)

तथा मङ्गलेश्वर, आत्मावीरेश्वरादि समीपीदेवदर्शन ॥

❀ बृहस्पतिवार ❀ बृहस्पतीश्वर—(मो० आत्मावीरेश्वरके समीप प्रसिद्ध) इन्के दर्शन से, मनुष्य अन्तमे बृहस्पतिलोक में निवास पाता है और पुष्यनक्षत्रयुक्त बृहस्पतिवारको दर्शन पूजन जो कुछ करेगा वहसब सिद्धिको प्राप्त होगा, यथा

गुरुपुष्यसमायोगे लिङ्गमेतत्समर्च्य च।
यत्करिष्यन्ति मनुजास्तत्सिद्धिमधियास्यति ॥ ६० ॥

चन्द्रेश्वराद्दक्षिणतो वीरेशान्नैर्ऋतस्थितम्।
आराध्यधिषणेशं वै गुरुलोके महीयते ॥६३॥ (का०खं०अ० १७

तथा-आत्मावीरेश्वरादि समीपी देव दर्शन ॥

बृहस्पतिवार–पुष्य–शुक्लाष्टमी, व्यतीपात योग, इन सबो के एकत्र प्राप्त होनेपर, ज्ञानवापी (मो०प्रसिद्ध विश्वनाथ-जीके समीप) स्नान वो श्राद्ध करने से गयाश्राद्धसे कोटि-गुणा अधिक फल होता है, यथा–

गुरुपुष्यसिताष्टम्यां व्यतीपातो यदा भवेत्।
तदात्रश्राद्धकरणाद्गयाकोटिगुणं भवेत् ॥३६॥ (का०खं०अ०३३)

विश्वनाथजी आदि समीपी देव दर्शन ॥

❋शुक्रवार❋ शुक्रकूप, अथवा गङ्गास्नान, सन्ध्या, तर्प-णादि वो शुक्रेश्वर–(मो० कालिकागली, विश्वनाथजीके दक्षिण नं० २) इनके दर्शन से सर्व सिद्धियोंका लाभ होता है तथा एक वर्ष परयन्त प्रति शुक्रवारको व्रतकर दर्शन पूजन करनेसे पुत्रवान्, वो वीर्यवान (पुरुषत्वयुक्त) और सौभाग्यादिसे पूर्णताका फल प्राप्त होता है, अन्तमे शुक्रलोक के सुखको भोगता है, यथा–

शंकरउवाच–त्वयेदं स्थापितंलिङ्ग शुक्रेशमितिसंज्ञितम्।
येऽर्चयिष्यन्ति मनुजास्तेषां सिद्धिर्भविष्यति ॥ २४ ॥
आवर्षं प्रतिशुक्रं ये नक्तव्रत परा नराः।
त्वद्दिने शुक्र कूपे ये कृतसर्वोदकक्रियाः ॥ १२५ ॥
शुक्रेशमर्चयिष्यन्तिशृणु तेषां तु यत्फलम्।
अवन्ध्यशुक्रास्ते मर्त्याः पुत्रवन्तोऽतिरेतसः ॥ १२६ ॥
पुंस्त्वंसौभाग्यसंपन्ना भविष्यन्ति न संशयः।

व्यपेतविघ्नास्ते सर्वे जनाः स्युः सुखवासिनः ॥ १२७ ॥

(का० खं० अ० १६)

कालीजी (म० न० २/३४ मे) वो भवानीशङ्कर (म० न० २/१५ मे) समीपी देव दर्शन ।

❀ शनैश्चरवार ❀ शनैश्चरेश्वर-(विश्वनाथजीके घेरेमें दक्षिण वो पश्चिमके कोने-परिक्रमा मार्गमे) इनके दर्शन वो पूजन से शनैश्चरग्रह पीड़ा नही देते, यथा-

शनैश्चरेश्वरं दृष्ट्वा वाराणस्यां सुशोभनम् ।
शनिबाधा न जायेत शनिवारेतदर्चनात् ॥ १२७ ॥
विश्वेशाद् दक्षिणे भागे शुक्रेशा दुत्तरेण हि।
शनैश्चरेश मभ्यर्च्य लोकेऽत्रपरि मोदते ॥ १२८ ॥

(का० खं० अ० १७)

विश्वनाथ तथा शनिश्वरादि समीपी देव दर्शन ॥

शनैश्चरवारयुक्त प्रदोष-(शनिप्रदोष) कामेश्वर दर्शन (मो० त्रिलोचनगञ्जके समीप नं० २/४) इसदिन इनके दर्शनसे काम जनित अनेक पापोंकी यम जातना नही सहनी पड़ती, यथा-

यः प्रदोषेत्रयोदश्यां शनिवासरसंयुजि ॥ ७५/१ ॥
त्वत्स्थापितं च कामेशलिङ्गं द्रक्ष्यति मानवः ॥ ७६/१ ॥
सर्वकामकृतादोषाद्यामीं नाप्स्यति यातनाम् ॥ ७७/१ ॥

(का० खं० अ० ८९)

तथा-त्रिलोचनादि समीपी देवदर्शन ॥

❀ रविवार ❀ गभस्तीश्वर-(मङ्गलागौरीके घेरेमें नं० ३४/८५) तथा मङ्गलागौरि वो मयूखादित्यादि समीपी देव दर्शन ॥

कमलेश्वर तथा अश्वतरेश्वर—(मो० गोमठके समीप, काका रामजीकी गली) दर्शन वो पूजन - **मणिकर्णिकेश्वर**-(उसी गली मे महाराज बरदवानके घेरेमें नं० १५/११) इत्यादि समीपी देव दर्शन ॥

साम्बादित्य—(सूर्य कुण्ड प्रसिद्ध) अरुणोदय समय सूर्य कुण्ड मे स्नान वो इनके दर्शन और पूजन से कुष्ठादि रोग छूट जाते हैं, और स्त्री विधवा वो बन्ध्यापन दोष से बच जाती है यथा—

साम्बकुण्डेनरः स्नात्वा रविवारेऽरुणोदये ।
साम्बादित्यं च संपूज्य व्याधिभिर्नाभिभूयते ॥ ४८ ॥
न स्त्री वैधव्यमाप्नोति साम्बादित्यस्य सेवनात् ।
वन्ध्या पुत्रं प्रसूयेत शुद्धरूपसमन्वितम् ॥ ४९ ॥

(का० खं० अ० ४८)

ध्रुवेश्वर—साम्बादित्यसे पूर्व दिशा गोसाँई काशीगिरिके हाते नं० ४७/१ में) समीपी देवदर्शन ॥

द्वादशादित्य दर्शन—(यह यात्रा भी समस्त रविवार तथा चैत्र के रविवारको और रविवारके दिन जब षष्ठी वा सप्तमी हो जिस्को पद्मक योग कहते हैं होनी चाहिये, यह पद्मक योग सहस्र सूर्यग्रहण के समान माना जाता है ऐसे दिन सर्व विघ्नोंके शान्त्यर्थ द्वादशादित्यकी यात्रा अवश्य करनी चाहिये) यथा—

रविवारे रवेर्यात्रा, षष्ठ्यां वा रविसंयुजि ।
तथैव रविसप्तम्यां, सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ ७५ ॥

(का० खं० अ० १००)

तथा-(द्वादशादित्य नाम स्थान वो पृथक् २ दर्शन माहात्म्य)

१ केशवादित्य-(मो० वरणासंगम, आदिकेशवके मन्दिरमे) इनके दर्शनसे भक्तोंका अज्ञान रूप अन्धकार दूर होजाता हैं, और मनोवाञ्छित फल प्राप्त होता है, वो ज्ञानतत्वको पाकर अन्तमे निर्वाण पदका भागी होता है, यथा-

अतः स केशवादित्यः काश्यां भक्ततमोनुदः।
समर्चितः सदा देयान्मनसो वाञ्छितं फलम् ॥ ७३ ॥
केशवादित्यमाराध्य वाराणस्यां नरोत्तमः।
परं ज्ञानमवाप्नोति येन निर्वाणभाग्भवेत् ॥ ७४ ॥
(का० खं० अ० ५१)

आदिकेशवादि समीपी देवदर्शन।

२ अरुणादित्य-(मो० त्रिलोचन घाट, त्रिलोचननाथके घेरेमे पूर्वदिशा परिकर्मामार्गमे) इनके सेवनसे किसी भाँतिकी व्याधियाँ तथा कोई उपसर्ग बाधा नही पहुँच सकती,और न कदापि शोकाग्निही दहन कर सकतीहै यथा-

व्याधिभिर्नाभिभूयन्ते नोपसर्गैश्च कैश्चन।
शोकाग्निना न दह्यन्ते ह्यरुणादित्यसेवनात् ॥२३॥(का०खं०अ०५१)

त्रिलोचननाथादि समीपी देवदर्शन।

३ खखोलादित्य-(मो० त्रिलोचन बाजारके समीप कामेश्वरनाथके द्वारपर वामभागमे म० न० २/४) इनके दर्शनसे मनुष्य समस्तपापोंसे छूट जाता है, और अपने अभिष्ट फलको पाता है, तथा तुरन्त रोगोंसे निरोग हो जाता है, यथा-

तस्य दर्शनमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
काश्यां पैशङ्गिले तीर्थे खखोल्कस्यावलोकनात् नरश्चिन्तित
माप्नोति निरोगो जायते क्षणात् ॥१५०॥ (का०खं०अ० ५०)

कामेश्वरनाथादि समीपी देवदर्शन ।

४ मयूखादित्य-(मो०पञ्चगङ्गाघाट,मंगलागौरीके मन्दिर नं० २४/८५ के भीतर, खम्भेमे) श्रीशंकर वाक्य-इनके सब दिनके दर्शनसे कोई व्याधी नही होती, और रविवारके दर्शनसे कभी दरिद्री नहीं होता यथा-

मयूखादित्य इत्या ख्यातस्त्वंतेदितिनन्दन ॥ ९३ ॥
त्वदर्चनान्नृणां कश्चिन्नव्याधिः प्रभाविष्यति ।
भविष्यति न दारिद्र्यं रविवारे त्वदीक्षणात् ॥ ९४ ॥
(का० खं० अ० ४९)

गभस्तीश्वर मङ्गलागौरीं आदि समीपी देवदर्शन ।

५ यमादित्य-(मो० संकटाघाट,वसिष्ठेश्वरके समीप घाटकी सीढ़ीपर म० नं० ५६/८० में) अपने दर्शन करनेवालेको यह यमयातनासे बचा देते है, यथा-

यमेन स्थापितो यस्मादादित्यस्तत्र कुम्भज ।
अतः सहि यमादित्यो यामींहरतिं यातनाम्॥१०९॥ (का०खं०अ०५१

वसिष्ठेश्वरादि समीपी देवदर्शन ॥

६ गंगादित्य-(मो० ललिताघाट, ललिताजीके मन्दिरके घेरेमे म० नं० ३१/६३ में) इनके आराधनासे मनुष्य नतो कभी कोई दुर्गती ही भोगता, और न रोगीही होता है, यथा-

गङ्गादित्यं समाराध्य वाराणस्यांनरोत्तमः ।
न जातु दुर्गतिंक्वापि लभते नच रोगभाक् ॥४॥(का० खं०अ०५१)

ललिता देवी, काशी देवी, गङ्गाकेशवादि समीपी देवदर्शन।

७ वृद्धादित्य-(मो० मीरघाट, हनुमानजीके मन्दिरके सामने पश्चिमदिशा, बाबू मोहनसिंहके मकान नं० ४२/१२ मे) इनको नमस्कार करनेसे मनुष्य कभी दुर्गतीको नही भोगता किन्तु अपने अभिष्ट सिद्धिको प्राप्त करता है, यथा-

वृद्धादित्यं नमस्कृत्य वाराणस्यां रवौ नरः।
लभेदभीप्सितां सिद्धिं नक्वचिद् दुर्गतिं लभेत् ॥ ४२ ॥
(का० खं० अ० ५१)

हनुमानजी आशाविनायक, धर्मेश्वर, विशालाक्षीआदि समीपी देवदर्शन ॥

८ द्रौपदादित्य-विश्वनाथजीके समीप, हनुमानजीके मन्दिर म० नं० ८/३१ मे अक्षयवटके नीचे इनके आराधनासे मनुष्य कभी क्षुधासे पीड़ित नही होता और प्रथम जो इनकी पूजा करि विश्वेश्वरका दर्शन करता है, उसके दुःखरूपी अन्धकार को यह विश्वेश्वरके वरदानसे अपने किरणों द्वारा दूर करते हैं, यथा-

विश्वेशाद्दक्षिणे भागे योमां त्वत्पुरतः स्थितम्।
आराधयिष्यातिनरः क्षुद्बाधा तस्य नश्यति ॥ १५ ॥
प्रागवेत्वां समाराध्ययोमां द्रक्ष्यति मानवः।
तस्य त्वं दुःखतिमिरमपानुद निजैः करैः ॥ १७ ॥

(का० खं० अ० ४९) नकुलेश्वर, हनुमानजी, विश्वनाथ, अन्नपूर्णादि समीपी देवदर्शन ॥

९ लोलार्क-(भदैनी तुलसीदासजी क स्थानके समीप कूप

के भीतर मढ़ी मे) इनके दर्शन से काशीवासियोंका सदा योग क्षेम होता है, और गङ्गासे संगम जो यह लोलार्क कूप है, इसमे स्नान करि दान होम देवपूजनादि जो कुछ कर्म किया जाता है वह सब अनन्तफलदायक होता है, यथा—

लोलार्कस्त्वसिसंभेदे दक्षिणस्यां दिशि स्थितः।
योगक्षेमं सदा कुर्यात्काशीवासिजनस्य च ॥ ४९ ॥
लोलार्कसंगमे स्नात्वा दानं होमं सुरार्चनम्।
यत्किंचित्क्रियते कर्म तदानन्त्याय कल्पते ॥ ६३ ॥

(का० खं० अ० ४६) अर्कविनायकादि समीपी देवदर्शन ॥

१० विमलादित्य-(जंङ्गमवाड़ी, खारीकुवाँके समीप, हरिकेशनाथ तथा मन्दिर नं० ३३/३३ के समीप) इनके केवल दर्शन हीसे कुष्ट रोग नष्ट होजाता है, यथा-

इत्थं सविमलादित्यो वाराणस्यां शुभप्रदः।
तस्य दर्शनमात्रेण कुष्टरोगः प्रणश्यति ॥ ९९ ॥

(का० खं० अ० ५१)-हरिकेशनाथादि समीपी देवदर्शन ॥

११ साम्बादित्य-(सूर्य्यकुण्ड प्रसिद्ध) जो मनुष्य आदित्यवारके अरुणोदयकालमे, भक्तिपूर्वक साम्बकुण्डमे स्नान करि, साम्बादित्यकी पूजा करे तो वह कदापि रोगोंसे पीड़ित नहीं होसकता, यह मूर्ति परम मङ्गलदायनी है, इस्के पूजन वो आठ परिक्रमासे, मनुष्य पापरहित होजाता है, और पूर्णरूपसे काशीवास करनेका फल पाता है, यथा—

साम्बकुण्डे नरः स्नात्वा रविवारेऽरुणोदये।
साम्बादित्यंच संपूज्य व्याधिभिर्नाभिभूयते ॥ ४८ ॥

विश्वेशात्पश्चिमाशायां साम्बेनात्र महात्मना। सम्यगाराधिता मूर्तिरादित्यस्य शुभप्रदा ॥ ५५ ॥

तमभ्यर्च्य नमस्कृत्य कृत्वाष्टौच प्रदक्षिणाः। नरो भवति निष्पापः काशीवासफलं लभेत् ॥ ५६ ॥ (का० खं० अ० ४८)

द्विमुखविनायक साम्बादित्यसे पश्चिम, ध्रुवेश्वर पूर्वदिशा काशीगिरी गोसाईं के हाते नं०४७/१)मेइत्यादि समीपी देवदर्शन

१२ उत्तरार्क-अलईपुर (वक्रार्ककुण्ड)बकरियाकुंड, प्रसिद्ध यह अपनी यात्रा से दुःखसंघात को दूर हटाकर परमानन्द देते हुये, सर्वदा काशी की रक्षा करते हैं, यथा—

अथोत्तरस्यामाशायां कुण्डमर्काख्यमुत्तमम्। तत्र नाम्नोत्तरार्केण रश्मिमाली व्यवस्थितः ॥ १ ॥

तापयन्दुःखसंघातं साधूनाप्याययन्रविः। उत्तरार्को महातेजाः काशीं रक्षति सर्वदा ॥ २ ॥ (का० खं० अ० ४७)

यह स्थान यवनी(मुसलमानी) मुहल्लामे पड़ जानेसे भ्रष्ट होगया, मूर्ति लोप होगई, अर्ककुण्ड अब बकरियाकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है, और उत्तरार्कके स्थान रविवार को ग़ाज़ीमियाँ पूजायमान हैं, इति द्वादशादित्य यात्रा समाप्त।

⁂सोमवार⁂ज्ञानवापी यात्रा,[ज्ञानवापी प्रसिद्ध] सोमवार को जो कोई स्नान, सन्ध्या, देव ऋषि पितृ तर्पण, और यथा—शक्तिदान, वो प्रेमसंयुक्त इसी जल से स्नान कराय श्री विश्वनाथका पूजन करता है, वह नर पापरहित वो कृत कृत्य होजाता है, और समस्त तीर्थोंके जलसे समस्त शिवलिङ्गोंके नहवानेका फल पाता है, यथा—

ईशानतीर्थे यः स्नात्वा विशेषात्सोमवासरे। संतर्प्य देवर्षि-

पितॄन्दत्वा दानं स्वशक्तितः ॥ ४२ ॥

ततः समच्चर्य श्रीलिङ्गं महासंभारविस्तरैः। अत्रापिदत्वा नानार्थान्कृतकृत्यो भवेन्नरः ॥ ४३ ॥

उपास्य सन्ध्यां ज्ञानोदे यत्पापं काललोपजम्। क्षणेन तदपाकृत्य ज्ञानवाञ्जायते द्विजः ॥ ४४ ॥

ज्ञानोदतीर्थपानीयैर्लिङ्गं यः स्नापयेत्सुधीः। सर्वतीर्थोदकैस्तेन ध्रुवं संस्नापितं भवेत् ॥ ४९ ॥ (का० खं० अ० ३३)

विश्वनाथादि समीपी देवदर्शन।

करुणेश्वर—(लाहौरीटोला, फूटेगणेश, बाबू माधोप्रसाद खत्रीके मकानके समीप मन्दिर नं० ३८ में) सोमवार यद्यपि शङ्करमूर्तिमात्रके पूजनका दिन है, तथापि करुणेश्वर लिङ्ग को परमप्रिय है, उक्तदिन को एकवार हविष्य भोजन करिके, करना (कनैल) के पुष्पसे जो कोई इनका पूजन करता है, उसको यह कभी काशीक्षेत्रसे बाहर नही करते और जो वर्षभर प्रति सोम्वारको उक्त रीतिसे पूजन करता है, उसको मनोवाञ्छित फल देते है, यथा—

न तं क्षेत्राद्बहिःकुर्यात्तस्मात्कार्यं व्रतं त्विदम्। तत्पत्रैस्तत्फलैर्वापि संपूज्यः करुणेश्वरः॥ यो वर्षं सोमवारस्य व्रतं कुर्यादिति द्विजः। प्रसन्नः करुणेशोऽत्रतस्यदास्यति वाञ्छितम् ॥ (काशीदर्पणे)

त्रिसन्ध्येश्वरादि समीपी देवदर्शन।

सोमवार (अमावस्यायुक्त) चन्द्रकूप, स्नान वो पिण्डदान, (मुहल्ला सिद्धेश्वरी, सिद्धेश्वरीके मन्दिरके घेरेमे, म०न० ५/६७ मे) ऐसे योगमे एक दिन प्रथम अर्थात् चतुर्दशीको उपवास कर रात्रीमे जागरण करिके प्रातःकाल (सोमवती अमावस्या योग) मे चन्द्रकूपके जल से स्नान वो सन्ध्या आदि उदक

क्रियाओं को समाप्त करि, कूपके समीप ही सविधि श्राद्ध करनेसे, सब पित्रोंका पूर्णरूपसे उद्धार हो जाता है, अर्थात् गयामे पिंडदान करनेसे पूर्वजोंकी जैसी तृप्ति होती है वैसीही तृप्ति यहां के पिण्डदान से भी होती है, यथा—

प्रातः सोमकुहूयोगे स्नात्वाचन्द्रोदवारिभिः ॥ ५० ॥
उपास्य सन्ध्यां विधिवत्कृतसर्वोदकक्रियः।
उपचन्द्रोदतीर्थेषु श्राद्धं विधिवदाचरेत् ॥ ५१ ॥
कुर्वञ्छ्राद्धं च तीर्थेस्मिञ्छ्रद्धयोद्धरतेखिलान्।
गयायां पिण्डदानेन यथा तुष्यन्ति पूर्वजाः ॥ ५४ ॥
तथा चन्द्रोदकुण्डेऽत्र श्राद्धैस्तृप्यन्ति पूर्वजाः।
गयायांच यथामुच्येत्सवर्णात्पितृजान्नरः ॥ ५५ ॥

(परन्तु तीर्थश्राद्धमे, आवाहन और अर्घ्यदान नहीं करना चाहिये केवल वसु, रुद्र, और आदित्यस्वरूप, पिता, पितामहादि तीनोको प्रयत्नपूर्वक पिंडदान किया जाय यथा—

आवाहनार्घ्यरहितं पिंडान् दद्यात्प्रयत्नतः।
वसुरुद्रादितिसुतस्वरूपपुरुषत्रयम् ॥ ५२ ॥ (का०खं०अ० १४)

चन्द्रेश्वर, तथा सिद्धेश्वरी आदि समीपि देवदर्शन।

कपिलधारा तीर्थ—(शंकरवाक्य) सोमवारयुक्त अमावास्या तिथिमे यहां श्राद्ध करनेसे अक्षय फल प्राप्त होता है, प्रलयकालमे समुद्रके भी जल सूख जाते हैं, परन्तु सोमवती अमावास्यामे इस कपिलधारा तीर्थपर अनुष्ठित श्राद्धका कभी क्षय नहीं होता यदि सोमवती अमावास्यामे यहाँ श्राद्ध किया जाय तो फिर गया क्षेत्र अथवा पुष्करमे

श्राद्धानुष्ठान करनेका क्या प्रयोजन है, बहुत क्या कहूं स्वर्ग, क्या अन्तरिक्ष क्या भूमण्डल सर्वत्र के जितने तीर्थ हैं सो सब सोमवती अमावास्या पर्वको, कपिलधारा तीर्थपर विराजमान रहते हैं, सूर्य्यग्रहणके समय कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और गङ्गासागरके संगममे पिण्डदान करनेसे जो फल मिलता है सो फल इस वृषभध्वज तीर्थ (कपिल-धारा) मे भी मिलता है किन्तु सोमवती अमावास्याको यहाँ श्राद्ध करनेसे गयाश्राद्ध का अठगुणा अधिक पुण्य होता है, और जो लोग उक्त पर्वपर पितरोंकी तृप्ती कामना से यहाँ पर ब्राह्मणभोजन करावैंगे उनका किया हुवा श्राद्ध अनन्त फल दायक होगा यथा—

अन्यं विशेषं वक्ष्यामि महातृप्तिकरं परम्।
कुहूसोमसमायोगे दत्तं श्राद्धमिहाक्षयम् ॥ ५५ ॥
संवर्त काले संप्राप्ते जलराशिर्जलान्यपि।
क्षीयन्ते न क्षयत्यत्र श्राद्धं सोमकुहूकृतम् ॥ ५६ ॥
अमासोमसमायोगे श्राद्धं यद्यत्र लभ्यते।
तीर्थे कापिलधारेऽस्मिन् गयया पुष्करेण किम् ॥ ५७ ॥
दिव्यान्तरिक्षभौमानि यानि तीर्थानि सर्वतः।
तान्यत्र निवसिष्यन्ति दर्शे सोमदिनान्विते ॥ ५९ ॥
कुरुक्षेत्रे नैमिषेच गङ्गासागरसंगमे।
ग्रहणे श्राद्धतो यत्स्यात्तत्तीर्थे वार्षभध्वजे ॥
गयातोष्टगुणं पुण्यमस्मिंस्तीर्थे पितामहाः।
अमायां सोमयुक्तायां श्राद्धैः कापिलधारिके ॥ ६९ ॥
सूर्येन्दुसंगमे यत्र पितॄणां तृप्तिकाम्युकाः।
ब्राह्मणान्भोजयिष्यन्ति तेषां श्राद्धमनन्तकम् ॥ ६६ ॥
(का० खं० अ० ६२)

वृषभध्वजादि समीपी देवदर्शन ॥ (इस तीर्थके सविस्तर माहात्म्य " कपिलधारामाहात्म्यनाम " की एक पुस्तक मेरे यहां पृथक् भी छपी है) । इति बारादिक यात्रा ॥

अथ वार्षिकयात्रान्तरगत मासिकयात्रा

(कोई २ दैनिक यात्रा जोकि माससे सम्बन्ध रखती हैं प्रेमियोंके स्मरणार्थ महीनेके प्रथमही लिखदी गई हैं, ताकि वार वो तिथि दोनोंको प्रथमही से समुझकर उस्के अनुसार यात्रा करैं)

॥ चैत्रशुक्लपक्ष ॥

* चैत्र मासका प्रथम रविवार * साम्बादित्यदर्शन ।

ऐसे दिन विधिवत् जो साम्बकुण्ड (सूर्यकुण्ड) मे स्नान वो साम्बादित्यका दर्शन और अशोकके फूलसे पूजन करते हैं सो मनुष्य शोकरहित तथा वर्षभरके किये हुये पापोंसे बाहर होजाते हैं यथा—

मधौ मासि रवेर्वारे यात्रा सम्वत्सरी भवेत् ।
अशोकैस्तत्र संपूज्य कुण्डे स्नात्वा विधानतः ॥ ५३ ॥
साम्बादित्यं नरो जातु न शोकैरभिभूयते ।
संवत्सरकृतात्पापाद्वहिर्भवति तत्क्षणात् ॥ ५४ ॥
(का० ख० अ० ४८)

* चैत्र शु० १ * (नवरात्रारम्भः) कुष्माण्ड (दुर्गा) दर्शन (दुर्गाकुण्ड म० नं० २७ के समीप प्रसिद्ध) यद्यपि श्रीदुर्गायात्रा प्रतिअष्टमी, चतुर्दशी तथा मङ्गलवारको निश्चित है, उसदिन

निरन्तर दर्शन पूजन होना चाहिये, और जो कदाचित् किसीसे यह न बन पड़े तो शुभार्थी लोगोंको चाहिये कि चैत्र तथा कुंवारके नवरात्रमे सकुटुम्ब प्रतिदिन प्रयत्नपूर्वक इनकी यात्रा करै नवरात्रमे प्रतिदिन दर्शन वो पूजनसे यह सर्व विघ्नराशियोंका नाश करदेती हैं, और सुमतिको देती हैं, इसके अतिरिक्त नवरात्रभर दुर्गाकुण्डमे स्नान करि,दुर्गतिहारिणी दुर्गादेवीका दर्शन वो पूजन जो कोई करता है, यह उसके नव जन्मोंके संचित पापोंको नाश करदेती हैं और यदि नव दिन भी न हो सकै तो एक दो दिन (नवरात्रके आदि अन्त) की यात्रा तो अवश्यही करनी चाहिये,और जो दुर्बुद्धिजन प्रतिवर्ष (किसी नवरात्रमे किसी एक दिन भी) दुर्गादेवीकी यात्रा नही करता उसे काशीमे पद २ पर सहस्रों विघ्न उपस्थित होते हैं यथा—

अष्टम्यांच चतुर्दश्यां भौमवारे विशेषतः ।
संपूज्या सततं काश्यां दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥ ८१ ॥
प्रतिसम्वत्सरं तस्याः कार्या यात्रा प्रयत्नतः ।
शारदं नवरात्रंच सकुटुम्बैः शुभार्थिभिः ॥ ८५ ॥
नवरात्रे प्रयत्नेन प्रत्यहं सा समर्चिता ।
नाशयिष्यति विघ्नौघान्सुमतिंच प्रदास्यति ॥ ८३ ॥
दुर्गाकुण्डे नरः स्नात्वा सर्वदुर्गतिहारिणीम् ।
दुर्गासम्पूज्य विधिवन्नवजन्माघसुत्सृजेत् ॥ ८७ ॥
यो न साम्वत्सरीं यात्रां दुर्गायाः कुरुते कुधीः ।
काश्यां विघ्नसहस्राणि तस्य स्युश्चपदेपदे ॥ ८६ ॥
(का० खं० अ० ७२)

कालीजी (दुर्गाजीके घेरेमे) चण्डभैरो, (कालीजीके मन्दिरमे) दुर्गविनायक कुक्कुटेश्वर, तिलपर्णेश्वर (इन्हीके द्वारपर बलिप्रदान होता है) इत्यदि समीपी देवदर्शन ॥ * (अथ वाराहपुराणोक्त देवीकवचान्तर्गत नवरात्रके नव दिनमे नवदुर्गा दर्शन) * यथा—

प्रथमं शैलपुत्रीच द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥
पञ्चम स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीतिच ।
सप्तमंकालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥
नवमं सिद्धिदा मोक्ता नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥

उक्त लेखानुसार नवदिनकी नवदुर्गा यात्रा पृथक् २ लिखी जाती हैं, प्रथम *(चैत्र शु० १)* शैलपुत्री —(वर्णातट मढ़ियाघाट, ववाइनकी कुटी, शैलेश्वरके मन्दिरमे) शैलेश्वरादि समीपी देवदर्शन ॥

* चैत्र शु० २ * ब्रह्मचारिणी दुर्गा—(दुर्गाघाट, पण्डित दीनानाथ तथा शिवबालकजी दिक्षितके मकान नं. ३१/४० मे।)

चैत्र० शु० ३ पार्वतीश्वर (त्रिलोचनघाट, आदिमहादेव के घेरेमे नं. ३१/२९) इस तिथिको इनके पूजन वो दर्शनसे मनुष्य (स्त्री हो वा पुरुष) इस लोकमे सौभाग्यका भाजन होता है, और परलोकमे उत्तमगति प्राप्त होती है, किन्तु फिर कभी गर्भमे वास नहीं पाता यथा

चैत्रशुक्लतृतीयायां पार्वतीशसमर्चनात् ।
इह सौभाग्यमाप्नोति परत्र च शुभां गतिम् ॥२२॥

पार्वतीश्वरमाराध्य योषिद्वा पुरुषोपि वा।
नगर्भमाविशेद्भूयो भवेत्सौभाग्य भाजनम् ॥ २३ ॥२४॥
(का० खं० अ० ९०)

तथा आदिमहादेव, महा योगेश्वर, नर्मदेश्वर, त्रिलोचन-नाथादि समीपी देवदर्शन ॥

मङ्गलागौरी - आराधन - (पञ्चगङ्गाघाट, मन्दिर नं० में) उक्ततिथिको व्रत करि सविधि इनके दर्शन पूजन, तथा रात्री जागरण पुनः प्रातःकाल १२ कुमारियोंके पूजन वो भोजन तथा यथाशक्ति दक्षिणा देकर मङ्गलागौरी देवी सहित परिक्रमा करै तो पृथ्वी भरके परिक्रमाका फल होता है, और "मङ्गलागौरी वो मङ्गलेश्वर प्रसन्न हों," यह कहकर व्रतका पारण करै, तो उसे कभी असौभाग्य वो दरिद्रता न घेरेगी अत एव समस्त काशीनिवासियोंको अपने समस्त विघ्नो की शान्ती वो सुखके लिये इनकी अवश्य आराधना करनी चाहिये, यथा-

चैत्रशुक्लतृतीयायामुपोषणपरायणः।
महोपचारैः संपूज्य दुकूलाभरणादिभिः ॥ ८१ ॥
रात्रौ जागरणं कृत्वा गीतनृत्यकथादिभिः।
प्रातः कुमारीः संपूज्य द्वादशाच्छादनादिभिः ॥ ८२ ॥
संभोज्य परमान्नाद्यैर्दत्वान्येभ्योपि दक्षिणाम् ॥
क्षितिप्रदक्षिणफलां मङ्गलैका प्रदक्षिणाम् ॥ ८३ ॥
भोजयित्वा महार्हान्नैः प्रीयेतां मङ्गलेश्वरौ ॥ ८५ ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य प्रातः कृत्वाथ पारणम्।
नदुर्भगत्वमाप्नोति न दारिद्र्यं कदाचन ॥ ८६ ॥
सर्वविघ्नप्रशान्त्यर्थं सदा काशीनिवासिभिः ॥ ९२ ॥
(का० खं० अ० ४९)

गभस्तीश्वर, मयूखादित्यादि समीपी देवदर्शन।

चित्रकूप स्नान, चित्रगुप्तेश्वर दर्शन (रेशमकटरा नं० ३७) तथा चित्रघण्टा देवी दर्शन-(चौकके समीप, चन्दूकी गलीमे मकान नं० ४४ के समीप)

इस दिन इनकी प्रयत्न पूर्वक यात्रा और महोत्सवयुक्त रात्रि जागरण करिके पूजन करना चाहिये, इससे मनुष्य यमराजके वाहन (भैंसे) के गलेके घण्टेका शब्द नही सुनने पाता, किन्तु जो मनुष्य विचित्रफलदायक चित्रकूपमे स्नान करके (चित्रकूप चित्रगुप्तेश्वरके मन्दिर रेशम कटरामे है) चित्रगुप्तेश्वर तथा चित्रघण्टा देवीका दर्शन करलेता है, वह चाहै कैसहू पातकी हो, परन्तु उसका पाप चित्रगुप्तजीके लिखने योग्य नही होता, और स्त्री हो वा पुरुष इनके दर्शन वो पूजन न करनेसे उसको सहस्रोंही विघ्न पद पद पर धर दबाते हैं, यथा-

चैत्रशुक्लतृतीयायां कार्या यात्रा प्रयत्नतः।
महामहोत्सवः कार्यो निशि जागरणं तथा ॥ ४१ ॥
महापूजोपकरणैश्चित्रघण्टां समर्च्यच।
शृणोति नान्तकस्येह घण्टां महिषकण्ठगाम् ॥ ४२ ॥
योषिद्वा पुरुषो वापि चित्रघण्टां न योर्चयेत्।
काश्यां विघ्नसहस्राणि न सेवन्ते पदेपदे ॥ ४० ॥
चित्रकूपे नरः स्नात्वा विचित्रफलदेनृणाम्।
चित्रगुप्तेश्वरं वीक्ष्य चित्रघण्टां प्रपूज्यच ॥ ३८ ॥
बहुपातकयुक्तोपि त्यक्तधर्मपथोपि वा।
न चित्रगुप्तलेख्यः स्याच्चित्रघण्टार्चको नरः ॥ ३९ ॥
(का० खं० अ० ७०)

विश्वभुजा देवी-(लाहौरी टोला, धर्मेश्वरके पास) इस तृतीया को मनोरथ तृतीया भी कहते हैं, वर्षभर प्रत्येक शुक्ल तृतीयाको व्रत करि विधिवत् इनका पूजन करै, और इस तृतीया को विशेष महोत्सव युक्त पूजन करि के व्रतकी समाप्ती कीजाय, अथवा इसी तृतीयाको व्रत करि यथाशक्ति सविधि पूजन करै, तो इसके करनेसे भी सर्व मनोरथ सिद्ध होजाते हैं यथा-

मनोरथतृतीयायां व्रतं पौलोमि तच्छुभम् ।
पूज्या विश्वभुजा गौरी भुजविंशतिशालिनी ॥ २८ ॥
वरदोऽभयहस्तश्च साक्षसूत्रः समोदकः ।
देव्यापुरस्ताद्व्रतिना पूज्यआशाविनायकः ॥ २९ ॥
यो यो मनोरथो यस्य सततं विन्दतेध्रुवम् ॥
मनोरथतृतीयाया व्रतस्यचरणाद्व्रती ॥ ७३ ॥ (का० खं० अ० ८०) आशाविनायक, धर्मेश्वर, विशालाक्षी आदि समीपीदेवदर्शन ॥

*चैत्र शु०४*कूष्माण्डदुर्गा(श्रीदुर्गाजी, दुर्गाकुण्ड प्रसिद्ध) म० नं० २७/१ के समीप) इनका दर्शन यहाँ वाराहपुराणके मतसे लिखा गया है, ।

चैत्र शु० ५ स्कन्दमाता दर्शन-(वागेश्वरीजी, जेतपुरा प्रसिद्ध है) सिद्धेश्वर, ज्वरहरेश्वरादि समीपी देवदर्शन ॥

* चैत्र शु० ६ * कात्यायनीदुर्गा-(सङ्कटाघाट, वीरेश्वरके मन्दिरमे,) दर्शन पूजन, तथा वीरेश्वर, बृहस्पतीश्वर, वसिष्ठेश्वर, अरुन्धती, कृष्णेश्वर हरिश्चन्द्रेश्वरादि समीपी देवदर्शन ॥

*चैत्र शु०७*कालरात्री दर्शन-(कालीजी प्रसिद्ध, कालिका गली नं० ३/४ मे) तथा शुक्रेश्वर, भवानीशङ्कर (बाबूराम पण्डाके मकान नं० २/१६ मे) इत्यादि समीपी देवदर्शन ॥

* चैत्र शु० ८ * (महाष्टमी, अशोकाष्टमी) महागौरी (=संकटाजी प्रसिद्ध,म०नं०५/९६ मे) तथा-अन्नपूर्णा (विश्वनाथजी के समीप प्रसिद्ध) काशीवासियोंको इनका दर्शन वो पूजन और आठ प्रदक्षिणा सदा करना आवश्यक है, और चैत्र शु० ८ को तो इनकी महायात्रा है, व्रत करि १०८ प्रदक्षिणा वो रात्रि जागरण पुनः ९ को प्रातःस्नान करि सविधि पूजन अवश्य करना चाहिये, इस प्रदक्षिणा के करने से सहज ही मे सब पर्वत समुद्र आश्रम, आरण्योंके सहित सप्तद्वीपा पृथ्वीके परिक्रमाका फल होजाता है, यह न होसके तो ८ प्रदक्षिणा तो अवश्य करना चाहिये, यह देवी अपने भक्तोंही को काशीमे स्थिर वास, वो अन्तमे मोक्षकी भिक्षा देती है, यथा-

भक्तानां कामदा नित्यं भवानी वाससंप्रदा।
अतोभवानी सम्पूज्या काश्यां तीर्थनिवासिभिः ॥ १२९ ॥
अष्टौ प्रदक्षिणादेवाः प्रत्यहं तुष्टितत्परैः।
नमनीयौ प्रयत्नेन भवानीशङ्करौ सदा ॥ १२८ ॥
चैत्राष्टम्यां महायात्रां भवान्याः कारयेत्सुधीः।
अष्टाधिकाः प्रकर्तव्याः शतकृत्वः प्रदक्षिणाः ॥ १२६ ॥
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपवती मही।
सशैला ससमुद्राच साश्रमा चसकानना ॥ १२७ ॥
कुर्याज्जागरणं रात्रौ महाष्टम्यां व्रती नरः।

प्रातर्भवानीमभ्यर्च्य प्राप्नुयाद्वाञ्छितंफलम् ॥ १३४ ॥

(का० खं० अ० ६१)

"योगक्षेमं सदा कुर्याद्भवानी काशिवासिनां ॥ तस्माद्भवानी संसेव्या सततं काशिवासिभिः"

श्रीविश्वेश्वरादि समीपी देव दर्शन ।

तथा—महामुण्डादेवी (जैतपुरा, वागेश्वरी प्रसिद्ध) इस महाष्टमी को इनके दर्शन वो पूजनसे मनुष्य यशस्वी, पुत्र पौत्रसे परिपूर्ण, तथा लक्ष्मीवान होता है, इस तिथि को इनका यह माहात्म्य काशीखण्ड के मति से है, यथा—

तत्र चण्डी महामुण्डा भक्तविघ्नोपशान्तिदा ।
बलिपूजोपहाराद्यैः पूज्यास्वाभीष्टसिद्धये ॥ १९ ॥
तस्या यात्रां नुयः कुर्यान्महाष्टम्यां नरोत्तमः ।
यशस्वी पुत्रपौत्राढ्यो लक्ष्मीवांश्चापि जायते ॥ १६ ॥
(का० खं० अ० ६६)

मन्दाकिनी तीर्थ-(कम्पनीबाग) मे स्नान करि, मध्यमेश्वर दर्शन-(राजा शिवप्रसादके बारहदरीके पीछे, उत्तरदिशा) इस स्नान, वो दर्शन, पूजन, तथा यहाँ रात्रि जागरणसे कभी मनुष्य शोकभागी नही होता, किन्तु सदैव आनन्दमूर्ति बना रहता है, अन्तमे एकइस पीढीके साथ रुद्रलोकमे बहुत दिन रहकर पुनः मुक्त होजाता है, यथा—

स्वर्गलोकेपि सापुण्या किं पुनर्मानवे मुने ।
तदुत्तरेमध्यमेशो मध्ये क्षेत्रं स्वपित्यहो ॥ १४९ ॥
मन्दाकिन्यां नरः स्नात्वा दृष्ट्वा वै मध्यमेश्वरम् । १५३/२ ॥
तत्र जागरणं कृत्वा ऽशोकाष्टम्यां मधौ नरः ।
नजातु शोकं लभते सदानन्दमयो भवेत् ॥ १५० ॥
एकविंशत्कुलोपेतो रुद्रलोके वसेच्चिरम् ॥ १५४/१ ॥
(का० खं० अ० ९७)

पितामहेश्वर, इरावतेश्वरादि समीपी देवदर्शन।

• छाग वक्रेश्वरीदेवी दर्शन–(कपिलधारा, वृषभध्वजेश्वरके दक्षिण) इन्की प्रसन्नतासे काशीमे वास मिल सकता है, क्योंकि दिनरात यह विघ्नोकी भक्षण करनेवाली हैं, अत एव महाष्टमीको इनका दर्शन वो पूजन अवश्य करना चाहिये यथा–

छागवक्रेश्वरी देवी दक्षिणे वृषभध्वजात्।
अहर्निशं भक्षयति विघ्नौघतरुपल्लवान्॥ ७४॥
तस्या देव्याः प्रसादेन काशीवासः प्रलभ्यते।
अतश्छागेश्वरीदेवीं महाष्टम्यां प्रपूजयेत्॥७६॥(का०खं०अ०७०)

वृषभध्वजादि समीपी देवदर्शन।

* चैत्र शु० ९ * (रामनवमी) श्रीरामतीर्थ –(रामघाट, वा रामेश्वर घाट, पञ्चक्रोशी) मे स्नान, यहाँके केवल स्नान ही से विष्णुलोककी प्राप्ती होती है, यथा–

ततस्तु रामतीर्थञ्च वीररामेश्वराग्रतः।
तत्तीर्थस्नानमात्रेण विष्णुलोकमवाप्नुयात्॥ ६९॥
(का० खं० अ० ८४).

तथा रामेश्वर दर्शन (रामेश्वर ५ हैं, १ रामघाट तीरे मढ़ीमे, २ मानमन्दिरघाट मं० नं० ४५/२४ मे, ३ हनुमानघाट मं० नं० ५/११ हनुमानजीके सामने, ४ रामकुण्ड लक्ष्मीकुण्डके पश्चिम, ५ पञ्चक्रोशीके मार्गमे प्रसिद्ध है) यह सब मूर्त्तियां भी रघुनाथ हीके हाथकी स्थापित हैं इससे काशीवासियोंको उस महा वाक्यका माहात्म्य यहाँही फलीभूत हो सकता है, जैसा

श्रीतुलसी कृतरामायण मे कहा है, जे रामेश्वर दरसन करिहहिं। ते तनु तजि मम धाम सिधरिहहिं॥ जो गङ्गाजल आनि चढाइहिं। सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहिं॥

सिद्धेश्वरीदर्शन-(सिद्धेश्वरी मुहल्ला म० नं० ४७ मे) चन्द्रेश्वर, चन्द्रकूपादि समीपी दर्शन ॥ तथा—

सिद्धमाता दर्शन-(सिद्धमाता की गल्ली, प्रसिद्ध म०नं०२५मे)

चैत्र शु० ११ विष्णुतीर्थ-(पञ्चगङ्गा, तथा-वरणासङ्गम, ललिताघाट, शङ्खधारा) स्नान, एकादशीको यहाँ स्नान करनेसे बड़े २ फलोंके लाभ होते हैं, यथा—

सम्प्राप्य वासरं विष्णोर्विष्णुतीर्थेषु सर्वतः।
यात्रा कार्या प्रयत्नेन महाफलसमृद्धये॥
कार्तिक्यां सूकरक्षेत्रे चैत्र्यां गौरीमहाहृदे।
शङ्खोद्धारे हरिदिने यत्फलं तत्फलन्त्विह॥२९॥ (का०खं०अ०८१)

उक्त तीर्थों के समीपी देवदर्शन॥

ज्ञानवापीयात्रा-(ज्ञानवापीविश्वनाथजींकेसमीप प्रसिद्ध) एकादशीका व्रत किये हुये मनुष्यको ज्ञानवापीकी प्रदक्षिणा करिके पुनः तीन चिल्लू उसका जल पी लेना चाहिये, इसके पीनेसे हृदयमे (भूत, भविष्य, वर्तमानके दोषोंका नाशक) तीन लिङ्ग उत्पन्न होजाते हैं. यथा—

एकादश्यामुपोष्यात्र प्राश्नाति चुलुकत्रयम्।
हृदये तस्य जायन्ते त्रीणि लिङ्गान्यसंशयम्॥४१॥ (का०खं०अ०३३)

उक्त सबवाक्य समस्त एकादशियोंके निमित्त हैं, जिससे जब बन पड़े यात्रा करें यहाँ केवल स्मरणार्थ लिखी गई हैं

मोदादि पञ्चविनायक विश्वनाथादि समीपी देवदर्शन।

चैत्र शु० १२ काशीदेवी दर्शन- (यह दो स्थान पर मूर्तिमान हैं, १ ललिताघाट, ललिताजीके मन्दिरमे० नं० ३९/६३ मे, २ काशीपुरा) इनके दर्शनसे पापमे बुद्धि नही जाती, किन्तु धर्ममे लगाती हैं, यथा-

> द्वादश्यां प्रातरर्च्याथां काशीयः पूजयेत्सुधीः।
> तस्य पापे न रमते बुद्धिर्धर्मे प्रवर्तते ॥ (इति का० रहस्ये)

यह चैत्रहीके शु० १२ के लिये नही किन्तु समस्त महीने की द्वादशीके निमित्त वाक्य है, तथा- समीपी देवदर्शन।

चैत्रशु० १३ कामेश्वर दर्शन- (त्रिलोचनगञ्जके पास म० नं० २/४ इस तिथिको त्रिलोचनघाट स्नान करि इनके दर्शनसे मनोवाञ्छित फल मिलता है यथा-

> रुद्रावासाद्दक्षिणतः कामेशं लिङ्गमुत्तमम्।
> तद्दक्षिणे महाकुण्डस्नानाच्चिन्तितकामदम् ॥ ९६ ॥
> चैत्रशुक्ल त्रयोदश्यां तत्र यात्राचकामदम् ॥९७॥(का०खं०अ०९७

उपशान्तेश्वर, हिरण्यगर्भेश्वर, प्रणवविनायक त्रिलोचननाथ, आदि महादेव, पार्वतीश्वरादि समीपी देवदर्शन।

चैत शु० १४ (वाराही चौदस) पशुपतीश्वर दर्शन- (नन्दनसाहुके मुहल्लेके दक्षिण, पशुपतीश्वरके नामसे महला, प्रसिद्ध है म० नं० ५५/४७ मे) इस तिथिको व्रत करिके पवित्र मनसे यात्रा दर्शन पूजन तथा रात्रीमे वहीं जागरण कियाजाय, अमावास्याको प्रातः पुनः स्नान वो पूजन करके पारण करना चाहिये, ऐसा करनेवाला मनुष्य सब वन्धनोंसे छूटजाता है यथा

तत्र चैत्रचतुर्दश्यां शुक्लायां शुचिमानसैः।
कार्या यात्रा प्रयत्नेन रात्रौ जागरणस्तथा ॥ १०९ ॥
पूजयित्वापशुपतिमुपोषणपरायणाः।
पशुपाशैर्नबध्यन्ते दर्शे विहित पारणाः॥ ११० ॥
(का० खं० अ० ६१)

गायत्री देवी आदि समीपी देवदर्शन ॥

वाराहीदेवी दर्शन-(मीरघाट, पं० हरिराम पण्डाके मकान-नं० ५३ मे) इस तिथी को इनका भी दर्शन करना चाहिये॥

त्रिकोणयात्रा-प्रथम दुर्गाकुण्ड स्नान, दुर्गादेवी दर्शन पुनः लक्ष्मीकुण्ड स्नान (वा मार्जन) लक्ष्मीदेवी दर्शन तत् पश्चात् वागीश्वरीदेवी दर्शन (जैतपुरा प्रसिद्ध), पुनः विश्वनाथ आदि देव दर्शन (यह यात्रा यदि होसके तो प्रति १४ को होनी चाहिये)

चैत्र शु० १५ कृत्तिवासेश्वर दर्शन-(हंसतीर्थ, तालाब-के पश्चिम तटपर, रायललनजीके बाग नं० ४९/४३-४४ के घेरेमे) शङ्करवाक्य पार्वती प्रति, संसारि लोग जो कि सदाचारसे हीन, सत्य, शौच, (पवित्रता) से रहित माया, दम्भ, लोभ, मोह, अहं-कारादिसे पूर्ण हैं, और ब्राह्मण लोग जो कि शूद्रोंके अन्नसे जिव्हास्वाद लेनेवाले, लालची, सन्ध्या, जप, यज्ञादिसे दूर भागनेवाले हैं, वह सब इस तिथिको हंसतीर्थमे स्नान करि पित्रोंको तर्पण करके महोत्सव युक्त सर्व लिङ्गोमे मस्तक रूप कृत्तिवासेश्वर लिङ्गका दर्शन वो पूजन करके कृतकृत्य हो, सब पापों से छूटकर पुण्यात्मा लोगों की नाईं सुखपूर्वक मोक्ष पदको प्राप्त होते हैं अन्त समय मेरेही शरीरमे लीन हो

जाते हैं, उनका फिर जन्म नही होता, यथा।

शुक्लायां पञ्चदश्यांयश्चैत्र्यां कर्तामहोत्सवम्।
कृतिवासेश्वरे लिङ्गे नस गर्भप्रवेक्ष्यते ॥ ४६ ॥
तस्मिन्कुण्डे नरः स्नात्वा कृत्वा चपितृतर्पणम्।
कृतिवासेश्वरं दृष्ट्वा कृतकृत्यो नरोभवेत् ॥ ४९ ॥
अतीव मलिनात्मानो महामलिनकर्मभिः।
क्षणान्निर्मलतांयांन्ति हंसतीर्थकृतोदकाः ॥ ५८ ॥
काश्यां सदैव वस्तव्यं स्नातव्यं हंसतीर्थके।
द्रष्टव्यः कृतिवासेशः प्राप्तव्यं परमंपदम् ॥ ५९ ॥
काश्यांलिङ्गान्यनेकानिमुने सन्ति पदेपदे।
कृतिवासेश्वरंलिङ्ग सर्वलिङ्गशिरः स्मृतम् ॥ ६० ॥
सदाचारविनिर्मुक्ताः सत्यशौच पराङ्मुखाः।
माययादम्भलोभाभ्यां मोहाहंकृति संयुताः ॥ ३६ ॥
शूद्रान्नसेविनो विप्रा जिह्वला अतिलालसाः।
सन्ध्यास्नानजपेज्यासु दूरीकृतमनोधियः ॥ ३७ ॥
कृतिवासेश्वरं प्राप्य सर्वपापविवर्जिताः।
सुखेन मोक्षमेष्यन्ति यथासुकृतिनस्तथा ॥ ३८ ॥
कृतिवासेश्वरं लिङ्ग येर्चयिष्यन्ति मानवाः।
प्रविष्टास्ते शरीरेमे तेषां नास्ति पुनर्भवः ॥ ४१ ॥
(का० खं० अ० ६८)

रत्नेश्वर, सतीश्वर (वृद्धकालके सडकमे) इत्यादि समीपी देवदर्शन।

केदारेश्वर-(केदारघाट, प्रसिद्ध) चैत्र शु० १५ को इनकी यात्रा भी जो दृढ़ चित्तसे करता है, उसके जन्म भरके पाप उसी क्षणमें नष्ट हो जाते हैं, और केदारेश्वरके मन्दिरका शिखर देखि तथा वहांका गङ्गाजल पीकर तो सभी कोई अपने सात जन्मोके पापोसे छूट जाते हैं,

इसमे कुछ सन्देह नहीं है, (तो फिर साक्षात् दर्शनकी महिमा क्या कहा जाय) हिमालय पर्वतपर चढ़कर केदारनाथके दर्शनसे जो फल प्राप्त होता है, काशीमे केदारेश्वरके दर्शन-से उसका सातगुणा अधिक फल मिलता है, जैसे हिमालय पर निर्मल गौरीकुण्ड, हंसतीर्थ, और मधुश्रवा गङ्गा विराजमान हैं वैसेही काशीमे भी सब ज्योंके त्यों वर्त्तमान हैं, केदार तीर्थ (केदारघाट) मे स्नानकरि यदि कोई स्थिर चित्तसे पिण्डदान करे तो उसके एकसौ एक पुरुष भवार्णवसे पार हो जाते हैं, जैसी कि एक ब्रह्मचारीकी कथा है, यथा—

प्रतिचैत्रं सदा चैत्र्यां यावज्जीवमहं ध्रुवम् ।
विलोकयिष्ये केदारं वसन्वाराणसीपुरीम् ॥ २६ ॥
तेन यात्राः कृताः सम्यक् षष्टिरेकाधिका मुदा ।
आनन्दकाननेनित्यं वसता ब्रह्मचारिणा ॥ २७ ॥
केदारं यातुकामस्य पुंसोर्निश्चितचेतसः ।
आजन्मसंचितं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥ ४ ॥
दृष्ट्वाकेदारशिखरं पीत्वातत्रत्यम्बुच ।
सप्तजन्म कृतात्पापान्मुच्यते नात्रसंशयः ॥ ८ ॥
तुषाराद्रिं समारुह्य केदारं वीक्ष्ययत्फलम् ।
तत्फलं सप्तगुणितं काश्यां केदारदर्शने ॥ ४६ ॥
गौरीकुण्डं यथातत्र हंतीर्थं च निर्मलम् ।
यथामधुस्रवागङ्गा काश्यां तदखिलं तथा ॥ ४७ ॥
केदारतीर्थे यः स्नात्वा पिडान्दास्यति चात्वरः ।
एकोत्तरशतं वंश्यास्तस्योत्तिर्णाभवाम्बुधिम् ॥ ५८ ॥
(का० खं० अ० ७७)

नीलकण्ठेश्वर, (घाटकिनारे, मन्दिरद्वारके वामभागमें) अम्बरीषेश्वर, (नीलकण्ठेश्वरके वायव्यकोणपर) इन्द्रद्युम्ने-

श्वर (नीलकण्ठेश्वरके दक्षिण) लम्बोदर, गणेश (चिन्तामणि विनायक प्रसिद्ध,) चित्राङ्गदेश्वर (केदारेश्वरके उत्तर भागमे कुमार स्वामीके मठ नं० १५/५ मे) कालेञ्जरेश्वर, क्षेमेश्वर, (क्षेमेश्वरघाट, चित्राङ्गदेश्वरके उत्तर) इत्यादि समीपी देवदर्शन ।

होतीऔरभी विशेषता

* चैत्र शु० १५ (चित्रानक्षत्रयुक्त) * चन्द्रेश्वरदर्शन- सिद्धेश्वरीमहल्ला, सिद्धेश्वरीके मन्दिर, म० नं० ५८/४७ मे) ऐसे समय तारकज्ञानार्थ काशीनिवासियोंको अवश्य दर्शन करना चाहिये, इस क्षेत्रविघ्नविध्वंसनी यात्राके करनेसे, यदि कोई अन्यत्र भी जाकर मरे तो पापपुञ्जपङ्क्तिको भेद कर चन्द्रलोकमे पहुँच जाता है, यथा-

> अत्रयात्रा महाचैत्र्यां कार्याक्षेत्रनिवासिभिः ।
> तारकज्ञानलाभाय क्षेत्रविघ्न निवर्तिनी ॥ ६१ ॥
> चन्द्रेश्वरं समभ्यर्च्ययद्यन्यत्रापि संस्थितः ।
> अघौघपटलींभित्वा सोमलोकमवाप्स्यति ॥ ६२ ॥
>
> (का० खं० अ० १४)

सिद्धेश्वरी आदि समीपी देवदर्शन ॥

मथुरापुरी यात्रा-(नक्खीघाट) वरणास्नान तथा भूमि भ्रमण इससे मथुराके यात्राका फल होता है, यथा-

> उत्तरार्का दुत्तरतो मथुरावरुणावधि । (का० रहस्य अ० १३)

॥ वैशाख ॥

वैशाख कृ० १ त्रिविष्टप, पिलपिला, तथा त्रिलोचन तीर्थ (त्रिलोचनघाट प्रसिद्ध, और पिलपिला नामक कूप

सेट सुरजनमल, बाबू गोपालदास के म० नं० ३/२४ मे है) स्नानारम्भ, यहाँके स्नान, तथा दर्शन वो पूजनका अमित महिमा है, परन्तु इस समय केवल एतनाही लिखा जाता है, कि अन्य स्थानोंके पाप केवल काशीके दर्शनसे छूट जाते हैं, और काशीमें जो पाप किया जाता है, यद्यपि वह पिशाच ही बना देता है तथापि प्रमाद बस जो पाप हो जाता है सो त्रिविष्टप (त्रिलोचन) तीर्थ पर स्नान करि त्रिलोचनलिङ्गके दर्शनसे दूर होजाता है, इसीसे समस्त भूमण्डलके तीर्थों मे श्रेष्ठ आनन्दकानन (काशी) और उसमे भी श्रेयरूप त्रिलोचनतीर्थ, वो त्रिलोचन लिङ्ग माना जाता है, यथा—

यदन्यत्रार्जितं पापं तत्काशीदर्शनाद् व्रजेत् ॥ २१/२ ॥
काश्यांतुयत्कृतं पापं तत्पैशाचपदप्रदम् ।
प्रमादात्पातकं कृत्वाशंभोरानन्दकानने ॥ २२ ॥
दृष्ट्वात्रिविष्टपं लिङ्गं तत्पापमपिहास्यति ।
सर्वस्मिन्नपिभूपृष्ठेश्रेष्ठमानन्दकाननम् ॥ २३ ॥
अतिश्रेष्ठतरं लिङ्गंश्रेयो रूपं त्रिलोचनम् ॥२९॥(का०खं०अ०७५)

तथा शान्तनवेश्वर, (घाटकिनारे), हिरण्यगर्भेश्वर, प्रणवविनायक, (शान्तनवेश्वरके ऊपर मढ़ीमे), नर्मदेश्वर, सरस्वतीश्वर, यमुनेश्वर अक्षरेश्वर, पञ्चाक्षेरश्वर, पादोदकतीर्थ (कूप त्रिलोचननाथके मन्दिरके पूरब) आदिमहादेव, (नर्मदेश्वरके पूरब, नं० ३/२४ मे), पार्वतीश्वर, (आदिमहादेवके मन्दिरमे), बालमीकेश्वर, अरुणादित्य, उद्दण्डविनायक, वाराणसीदेवी, मुण्डविनायक, त्रिविक्रमविष्णु आदि, (त्रिलो-

चननाथके घेरेमे) इत्यादि समीपी देवदर्शन ॥

* वैशाख कृ० १३ *एकादशमहारुद्रयात्रा-(त्रिलोचनघाट, तथा-इशरगङ्गीमे स्नान)

१-अग्निध्रेश्वर-(इशरगङ्गी अगनीश्वर तथा जागेश्वर प्रसिद्ध म० नं० ६६/६२ मे)

२-उर्वशीश्वर-(औसानगंज, गोलाबाग नं० ६०/१८७ मे)

३-नकुलेश्वर-(विश्वनाथजीके पास, हनुमानजीके मन्दिर नं० ७/३१ मे)

४-आषाढ़ेश्वर-(यह मूर्ति दो स्थान पर है-एक काशीपूरा राजा वेतियाके शिवाले नं० ९३/११७, दूसरी- मछरहट्टाके फाटकके भीतर, खेदू सोनारके मकानके समीप)

५-भारभूतेश्वर-(मछरहट्टाके फाटकके भीतर, श्री पं० शिवकुमारजी शास्त्री महामहोपाध्याके मकानके पीछे म० नं० २५/३१ के समीप)

६-लाङ्गलीश्वर-(कचौड़ीगलीके पश्चिम, खोवाबाजारमे)

७-त्रिपुरान्तकेश्वर-(सिगराका टिला, राय ईश्वरी प्रसादके वागमे म० नं० ६०/७४ मे)

८-मनः प्रकामेश्वर-(साक्षीविनायकके पूरब गलीमे)

९-प्रीतिकेश्वर-(साक्षीविनायकके, पश्चिम पिछवाडे, मंदिरके उत्तर गलीमे दर्वाज़ा है, जंगमगिरके म० नं० ६ मे)

१०-मदालसेश्वर-(कालिकागलीके पूरब, सदरी गली पर म० न० ४२/११७ मे)

११-तिलपर्णेश्वर-(दुर्गाकुण्ड, इन्हींके द्वारपर बलि प्रदान होता है)

इस यात्राके करनेसे मनुष्य रुद्र (शङ्कर) पदको प्राप्त होता है, अतएव इसे प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये यथा—

आग्नीध्रकुण्डे सुस्नातः पश्येदाग्नीध्रमीश्वरम् ।
उर्वशीशं ततोगच्छेत्ततस्तु नकुलेश्वरम् ॥ ६३ ॥
आषाढीशं ततोदृष्टा भारभूतेश्वरं ततः ॥
लाङ्गलीशमथालोक्य ततस्तु त्रिपुरान्तकम् ॥ ६४ ॥
ततोमनःप्रकामेशं प्रीतिकेशमथोव्रजेत् ॥
मदालसेश्वरं तस्मात्तिलपर्णेश्वरं ततः ॥ ६५ ॥
यात्रैकादशलिङ्गानामेषा कार्या प्रयत्नतः ।
इमां यात्रां प्रकुर्वाणो रुद्रत्वं प्राप्नुयान्नरः ॥ ६६ ॥
(का० खं० अ० १००)

इन एकादश रुद्रके समीपी जो २ देवता हों उनका भी दर्शन पूजन होता रहै ।

* वैशाख कृ० १४ * (त्रिलोचनघाट स्नान), निकुम्भेश्वर दर्शन, (विश्वनाथजीके घेरेमे, उत्तर पश्चिमके कोने, शृङ्गार गौरीके समीप) तथा—कुबेरेश्वर दर्शन (अन्नपूर्णाजी-के घेरेमे, पूरब, वो उत्तर के कोने गड़हेमे), विश्वनाथ, वो अन्नपूर्णा आदि समीपी देवदर्शन ॥

* वैशाख शु० ३ * (राधा, वा अक्षय ३ तथा परशुराम जयन्ती ३) इस दिन पिलपिलाह्रद (मो० त्रिलोचन) स्नानादि, वो त्रिलोचननाथ पूजनका माहात्म्य शंकरजी पार्वतीजीसे कहते हैं, कि पिलपिला ह्रदमें स्नान वो पिण्ड-दान करि भक्ति भाव युक्त उपवासी हो, त्रिलोचननाथका पूजन करि, रात्रीमे जागरण करै पुनः दूसरे दिन

(चौथ) को प्रातःकाल स्नान करि पुनः त्रिलोचन नाथकी षोड़शोपचार, वा पञ्चोपचारसे पूजन, वो पित्रोंके उद्देशसे हर्षपूर्वक अन्न और दक्षिणादि सहित धर्मघटोंका दान करि, पश्चात् शिवभक्तोंके साथ पारण करै, हेदेवी! (पार्वती) इस पुण्यके प्रभावसे लोग पार्थिवशरीरको त्यागकर, अवश्य मेरे आगे चलने वालेगण हो जाते हैं, यथा—

शुक्लराधतृतीयायां स्नात्वा पैलपिलेह्रदे ।
उपोषणपराभक्त्या रात्रौ जागरणान्विताः ॥ ६७ ॥
त्रिलोचनं पूजयित्वा प्रातः स्नात्वापि तत्रवै ।
पुनर्लिङ्गं समभ्यर्च्य दत्वा धर्म्मघटानपि ॥ ६८ ॥
स्वान्नान्सदक्षिणान्देविपितॄनुद्दिश्यहर्षिताः ।
विधायपारणं पश्चाच्छिवभक्तजनैः सह ॥ ६९ ॥
विसृज्यपार्थिवंदेहं तेनपुण्येन नोदिताः ।
भवन्ति देविनियतंगणाममपुरोगमाः ७० (का० खं० अ० ७९)

परशुरामेश्वर दर्शन—(नन्दनसाहुके महल्ला) इस तिथिको परशुराम तीर्थमे स्नान (परशुरामतीर्थ लोप होगया, इससे त्रिलोचनघाट स्नान) परशुरामेश्वर दर्शन पूजनसे, ज्ञाताज्ञात जैसा क्षत्रीहत्याका पाप हो सब छूट जाता है, यथा—

ततः परशुरामस्य तीर्थं चातीवसिद्धिदम् ।
यत्रक्षत्रवधात्पापाज्जामदग्न्यो विमुक्तवान् ॥ ७२ ॥
अद्यापिक्षत्रवधजं पापं तत्र प्रणश्यति ।
एकेनस्नानमात्रेण ज्ञानाज्ञान कृतेनच ॥७३॥ (का०खं०अ०८३)

* बैशाखशु० ७ * (गङ्गासत्तमी) गङ्गास्नान, गङ्गा, तथा गङ्गेश्वर (ज्ञानवापीके पूरब, पीपलतले, मूर्ति लोप होगई, भूमिकी मान्य की जाती है,) दर्शन, वो पूजन, विश्व-

नाथादि समीपी देवदर्शन ।

* वैशाख शु० १४ * (नरसिंह चतुर्दशी) त्रिलोचनघाट स्नान (सन्ध्या, तर्पण, त्रिलोचननाथदर्शन), तथा मत्स्योदरी तीर्थ स्नान, (पिण्डदान, तर्पण, अन्नदान, वा केवल स्नान) ओंकारेश्वर दर्शन, यहाँके स्नान वो पिण्डदानादि से पितृऋण, वो दर्शनसे आवागमन दुःख छूट जाते हैं, (मुक्ति हो जाती है) और इस यात्राको काशीनिवासी सदा करते आए, वो अब तक भी करते आते हैं, और सदा करना चाहिये, यथा —

विमुक्त परमक्षेत्रं ब्रह्माण्डादपिसर्वतः ।
ततोपिपरओंकारं उक्तोमत्स्योदरीतटे ॥ १०७ ॥
तत्रमत्स्योदरींस्नात्वास्वर्धुनीं वरुणाप्लुताम् ।
कृतकृत्यो भवेज्जन्तुर्नैवशोचति कुत्रचित् ॥ १०९ ॥
(का० खं० अ० ७४)

निरीक्ष्य कपिलेशान स्नात्वा मत्स्योदरीजले ।
कृत्वापिण्ड प्रदानानि पितृणामनृणो भवेत् ॥ ६९ ॥
(का० खं० अ० ७३)

राधशुक्ल चतुर्दश्यामथापि क्षेत्रवासिनः ।
तत्र यात्रां प्रकुर्वन्ति महोत्सवपुरःसराः ॥ ९८ ॥
(का० खं० अ० ३४)

स्नात्वामत्स्योदरीतीर्थे विलोक्योङ्कारमीश्वरम् ।
नजातु जायते जन्तुर्जननी जठरेक्वचित् ॥ ५९ ॥
(का० खं० अ० ७३)

महाकालेश्वर, नादेश्वरादि समीपी देवदर्शन ॥ तथा—प्रल्हादतीर्थ-(प्रह्लादघाट) स्नान, प्रहलादेश्वर (घाटके

उपर) तथा विदार नरसिंह (म० न० $\frac{10}{\text{८६}}$ मे) वो प्रह्लादकेशव (नरेन्द्रनाथ बंङ्गालीके घेरेमे) दर्शन, इनके सप्रेम दर्शन वो पूजनसे मनुष्य कभी यमराजके महाबली दूतोंको नही देखने पाता यथाः।

प्रह्लादतीर्थं तत्रैव नाम्ना प्रह्लादकेशवः।
भक्तैः समर्चनीयोहंमहाभक्तिसमृद्धये ॥ ११ ॥
महाबल नृसिंहोहमोंकारात्पूर्वतो मुने।
दूतान्महाबलान्यास्यान्नपश्येत्त तदर्चकः ॥ ८९ ॥
(का० खं० अ० ६१)।

तथा समीपी देवदर्शन।

* वैशाख शु० १५ * (त्रिलोचनघाट स्नान) हिरण्यगर्भेश्वर (घाट किनारे मढीमे) तथा त्रिलोचननाथ, नर्वदेश्वर (म० नं० $\frac{२}{६३}$ मे), आदिमहादेव (नं० $\frac{६}{२१}$ मे) वो महानादेश्वर, (आदि महादेवके घेरेमे), कामेश्वरनाथ, (समीपही म० नं० $\frac{२}{४}$ मे) महोत्कटेश्वर, (कामेश्वरनाथके घेरेमे) इत्यादि देवदर्शन, वैशाखस्नानं समाप्तम्।

ज्येष्ठमास।

काशीमे ४२ लिङ्ग प्रधान हैं, तिसमे चतुर्दश चतुर्दश लिङ्गके तीन विभाग हुये हैं, सो ज्येष्ठ कृ० १–से १४ तक प्रथम विभागकी यात्रा यहाँ लिखी जाती है, परन्तु स्नान स्थान, तथा समीपी देवता नही लिखे गए हैं, यात्रियोंको चाहिये कि गङ्गा स्नान–(जिसघाट पर जिस्को सुवीता हो) करिके प्रतिदिन एक २ महालिङ्ग, और उनके समीपी

देवतोंका बराबरदर्शन वो पूजन निम्न लेखानुसार करते रहे, स्वयं श्रीमहादेवजी श्रीपार्वतीजीसे कहते हैं, कि इन प्रथम विभागके महाचतुर्दश लिङ्गोकी यत्नपूर्वक यात्रासे कोई भी जीव हो दुःख सागर रूप संसारमे फिर नहीं उत्पन्न होता, और काशी क्षेत्रके यही १४ लिङ्ग परमोत्तम तत्व भी हैं, वो निश्चय करिके संसाररूप रोगग्रस्त लोगोके लिये यही परम औषध है, इन प्रत्येक लिङ्गोकी महिमाका आदि अन्त नही है, बस इसे पूर्ण रूपसे मैहीं जानता हूँ, दूसरे किसीको तो कुछ ज्ञान ही नही है, ।

अथ प्रथम १४ लिङ्ग यात्रा ।

*ज्येष्ठ कृ० १ *श्री ॐकारेश्वराय नमः (मछोदरीके उत्तर मो० छित्तनपुरा म० नं० [illegible] मे, हुकालेसन नामसे प्रसिद्ध)

* ज्येष्ठ कृ० २ * श्रीत्रिलोचननाथाय नमः (त्रिलोचन घाट प्रसिद्ध)

* ज्येष्ठ कृ० ३ * आदिमहादेवाय नमः (त्रिलोचननाथके पिछवाड़े पूर्वदिशा म० नं० ३/२९ मे)

* ज्येष्ठ कृ० ४ * कृत्ति वासेश्वराय नमः (हंसतीर्थ तालावके पश्चिम तटपर, राय ललनजी के वाटिका नं० ५९/४३-४४ मे

* ज्येष्ठ कृ० ५ * रत्नेश्वराय नमः (वृद्धकालके मार्गमे, सड़क पर)

* ज्येष्ठ कृ० ६ * चन्द्रेश्वराय नमः (सिद्धेश्वरीके घेरे मे मं० नं० ५५/२३ मे)

* ज्येष्ठ कृ० ७ * केदारेश्वराय नमः (केदारघाट प्रसिद्ध)

* ज्येष्ठ कृ० ८ * धर्मेश्वराय नमः (लाहोरीटोला, धर्म कूप मं० नं० ४०/१८ मे)

* ज्येष्ठ कृ० ९ * वीरेश्वराय नमः (सङ्कटाघाट, आत्मा वीरेश्वर प्रसिद्ध)

* ज्येष्ठ कृ० १० * कामेश्वराय नमः (त्रिलोचन गञ्जके समीप मं० नं० ३/४ मे)

* ज्येष्ठ कृ० ११ * विश्वकर्मेश्वराय नमः (ग्वालगड्डा, हनुमानगञ्जके समीप, अलईपुर स्टेशनकी नई सड़क पर)

* ज्येष्ठ कृ० १२ * मणिकर्णिकेश्वराय नमः (मणिकर्णिका घाटके ऊपर, काकारामकी गलीमे, महाराज वर्दवानके कोठी के घेरेमे म० नं० ५९/११)

* ज्येष्ठ कृ० १३ * अविमुक्तेश्वराय नमः (इनकी दो मूर्ति है, एक ज्ञानवापीके उत्तर फाटक पर, राधाकृष्णके धर्मशालके घेरेमे जालीके भीतर दो मूर्ति हैं, तिस्मे बड़ी मूर्ति अविमुक्तेश्वरकी मानी जाती है, और दूसरी विश्वनाथ जीके घेरेमे, पूरब और दक्षिणके कोण पर है)

* ज्येष्ठ कृ० १४ * श्रीविश्वेश्वराय नमः (प्रसिद्ध) यथा—

त्वयातुयानि पृष्ठानि यैरिदंक्षेत्रमुत्तमम्।
तानि लिङ्गानि वक्ष्यामि मुक्तिहेतूनि सुन्दरि॥ २८॥
ओंकारः प्रथमंलिङ्गं द्वितीयं च त्रिलोचनम्।
तृतीयश्च महादेवः कृतिवासाश्चतुर्थकम्॥ ३२॥
रत्नेशः पञ्चमंलिङ्गं षष्टचन्द्रेश्वराभिधम्।
केदारः सप्तमंलिङ्गंधर्मेशश्चाष्टमंप्रिये॥ ३३॥

वीरेश्वरं चनवमं कामेशं दशमं विदुः ।
विश्वकर्मेश्वरंलिङ्गं शुभमेकादशं परम् ॥ ३४ ॥
द्वादशं मणिकर्णीशमविमुक्तं त्रयोदशम् ।
चतुर्दशं महालिङ्गं ममविश्वेश्वराभिधम् ॥ ३५ ॥
मुनेचतुर्दशैतानिमहालिङ्गांनियत्नतः ।
दृष्ट्वा नजायतेजन्तुः संसारे दुःखसागरे ॥ ६५ ॥
क्षेत्रस्यपरमं तत्वमेतदेव प्रियेध्रुवम् ।
संसाररोगग्रस्तानामिदमेव महौषधम् ॥ ६६ ॥
एकैकस्यास्यलिंगस्य महिमाद्यन्तवर्जिकः ।
मयैव ज्ञायतेदेवि सम्यङ्नान्येन केनचित् ॥ ६८ ॥
(का० खं० अ० ७३)

* ज्येष्ठ शु० १ * (से १५ – अथवा – १ से – १० (दस-हरा) ताईं दशाश्वमेधघाट, (रुद्रसरोवर) स्नान, दशाश्वमेधेश्वर (दसहरेश्वर) ऊपर - (सीतलाजीके मढ़ीमे) दर्शन, इसस्नान वो दर्शनके करनेसे मनुष्योंके तिथि प्रमाण अर्थात् १ से – १५ ताईं जितने दिन स्नान किया जाता है, उतने जन्मके पाप नाश हो जाते हैं, वो शूलटङ्केश्वरादि समीपी देवदर्शन ॥ यथा –

ज्येष्ठमसि सिते पक्षे प्राप्य प्रतिपदं तिथिम् ।
दशाश्वमेधिकेस्नात्वा मुच्यते जन्मपातकैः ॥ ८७ ॥
ज्येष्ठशुक्लद्वितीयायां स्नात्वारुद्रसरोवरे ।
जन्मद्वयकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥ ८८ ॥
एवंसर्वासुतिथिषु, क्रमस्नाई नरोत्तमः ।
आशुक्लपक्षदशमी प्रतिजन्माघमुत्सृजेत् ॥ ८९ ॥
(का० खं० अ० ५२)

* ज्येष्ठ शु० ८ * ज्येष्ठवापीस्नान – (काशीपुरा,

भूतभैरवकी गली मे, ज्येष्ठवापी गुप्त हो गई, अतएव दशाश्वमेध घाट स्नान) ज्येष्टेश्वर दर्शन, तथा ज्येष्टविनायक (उसी मन्दिरमे) और ज्येष्ठागौरी - (ज्येष्ठेश्वर के पश्चिम, शङ्कर पं० के म० नं० ६३/४ के समीप) महोत्सव युत-इनके दर्शन, पूजन तथा वहाँ श्राद्ध करने वो रात्रि जागरण से, सर्व प्रकारकी संपति वो ऋद्धियोंका सदा लाभ होता है, पितृ अत्यन्त तृप्त होते है, वो यथाशक्ति दान देनेसे अन्तमे स्वर्गकी प्राप्ती तथा मोक्ष भी मिलता है, और अभागिनी स्त्री भी परम सौभाग्यको प्राप्त होती है, अर्थात् सबको सर्व प्रकारकी श्रेष्ठता (बड़ाई) मिलती है, अतएव निज कल्याण के इच्छा वाले मनुष्योंको चाहिये कि काशीमे सबसे प्रथम उक्त देवतादिका पूजनादि करे, यथा।

ज्येष्ठेमासि सिताष्टम्यां तत्रकार्यो महोत्सवः।
रात्रौ जागरणंकार्यं सर्वसंपत्समृद्धये॥ १४॥
ज्येष्ठांगौरीं नमस्कृत्य ज्येष्ठवापीपरिप्लुता।
सौभाग्यभाजनंभूया द्योषा सौभाग्यभागपि॥ १६॥
निवासेश्वरलिङ्गस्य सेवनात्सर्वसंपदः।
निवसन्ति गृहेनित्यं नित्यंप्रतिपदं पुनः॥ १७॥
कृत्वाश्राद्धं विधानेन ज्येष्ठस्थानेनरोत्तमः।
ज्येष्ठां तृप्तिंददात्येव पितृभ्यो मधुसर्पिषा॥ १८॥
ज्येष्ठतीर्थेनरः काश्यां दत्वादानानिशक्तितः।
ज्येष्ठान्स्वर्गानवाप्नोति नरोमोक्षंचगच्छति॥ १९॥
ज्येष्ठेश्वरोऽभ्यर्च्यः प्रथमं काश्यां श्रेयोर्थिभिर्नरैः।
ज्येष्ठांगौरीं ततोभ्यर्च्य सर्वज्येष्ठमभीप्सुभिः॥ २०॥
(का० खं० अ० ६३)

व्याघ्रेश्वर, मं० नं० ६२/८८ कन्दुकेश्वर मं०नं० ६२/८१ मे, भूतभैरवादि समीपी देवदर्शन, ।

ज्येष्ठ शु० १० (दसहरा) दशाश्वमेधघाटस्नान, दसहरेश्वर (दशाश्वमेधेश्वर, सीतलाजीके मढ़ीमे) केवल एकवार इस स्नान से दशाश्वमेधयज्ञ करिके अन्तमे अवभृथ स्नान करनेसे जो फल होता है, सो निश्चय मिलता है, और दशहरेश्वरके दर्शन वो पूजनसे दश जन्मके पाप दूर होजाते हैं, जिससे मनुष्यों को यमयातना नही देखनी पड़ती । यथा—

> तिथिं दसहरां प्राप्य दशजन्माघहारिणीम् ।
> दशाश्वमेधिके स्नातो यामीं पश्येन्न यातनाम् ॥ ९० ॥
> लिङ्गं दशाश्वमेधेशं दृष्ट्वा दशहरां तिथौ ।
> दशजन्मार्जितैः पापैस्त्यज्यते नात्र संशयः ॥ ९१ ॥
> दशाश्वमेधावभृथैर्यत्फलं सम्यगाप्यते ।
> दशाश्वमेधेतन्नूनं स्नात्वा दशहरा तिथौ ॥ ९४ ॥
> (का० खं० अ० ५२)

प्रयागेश्वर, बन्दीदेवी, शूलटङ्केश्वरादि समीपी देवदर्शन । तथा-

गङ्गेश्वर दर्शन (ज्ञानवापीके पूरव पीपरतले मूर्ति गुप्त है, भूमिकी पूजा होती है) इनके दर्शनसे सहस्रो जन्म के संचित पाप दूर होजाते हैं, यह गङ्गेश्वर लिङ्ग प्रायः कलिमे गुप्तही रहता है, अतएव इस भूमिही की पूजा करनी चाहिये, यथा —

> गङ्गेश्वरस्य लिङ्गस्य काश्यां दृष्टिः सुदुर्लभा ।
> तिथौ दशहरायांच योगङ्गेशं समर्चयेत् ॥ ५ ॥

तस्यजन्मसहस्रस्य पापं संक्षीयते क्षणात् ।
कलौ गङ्गेश्वरं लिङ्गं गुप्तप्रायं भविष्यति ॥ ६ ॥
(का० खं० अ० ९१)

ज्ञानवापी, तारकेश्वर, विश्वेश्वरादि समीपी देवदर्शन

* ज्येष्ठ शु० १४ * दशाश्वमेधघाटस्नान, ज्येष्ठविनायक दर्शन (काशीपुरा, ज्येष्ठेश्वरके मन्दिरमे) अपनी बड़ाई चाहने वालेको इसदिन इनका दर्शन वो पूजन करना चाहिये यथा–

ज्येष्ठो नाम गणाध्यक्षो ज्येष्ठोमे पुत्र संपदी १०३/२ ।
ज्येष्ठशुक्ल चतुर्दश्यां संपूज्यो ज्येष्ठताप्तये ॥ १०३/१ ॥
(का० खं० अ० ५७) तथा–

ज्येष्ठेश्वर, ज्येष्ठागौरी, भूतभैरवादि समीपी देवदर्शन ।

* ज्येष्ठ शु० १४ * (सोमवार तथा, अनुराधा नक्षत्र युक्ता) ज्येष्ठेश्वर दर्शन–वो पूजन यथोपचार होना चाहिये, यह पर्व यहाँकी महायात्रा है, इसी पर्व पर शंकरजी मन्दराचलसे काशीमे आय प्रथम यहीं ठहरे हैं, इस पर्वपर इनके दर्शन वो पूजनसे सूर्य्यके प्रकाश फैलनेसे जैसे अन्धकार दूर हो जाता है, तैसेही लोगोंके सैकड़ो जन्मोके बटोरे हुये पाप क्षणभरमे क्षय होजाते हैं, यथा–

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दश्यां सोमवारानुराधयोः ।
तत्पर्वणि महायात्रा कर्तव्या तत्र मानवैः ॥ ९ ॥
ज्येष्ठस्थानंततः काश्यां तदाभूदयि पुण्यदम् ।
तत्रलिङ्गं समभवत्स्वयं ज्येष्ठेश्वराभिधम् ॥ १० ॥
तल्लिङ्गदर्शनात्पुंसां पापं जन्मशतार्जितम् ।
तमोर्कोदयमप्येव तत्क्षणा देवनश्यति ॥ ११ ॥
(का० खं० अ० ६३)

ज्येष्ठागौरी भूतभैरवादि समीपी देव दर्शन ।

* ज्येष्ठ शु० १५ * दशाश्वमेध घाट स्नान समाप्तम् ।

आषाढ़मास ।

(आषाढ़ कृ० १–से १४ ताईं द्वितियविभागके चतुर्दश लिङ्गकी यात्रा) इस चौदह लिङ्गकी यात्राके करनेसे मनुष्य फिर कभी संसारमे लौटकर नही आता ।

* आषाढ़ कृ० १ * अमृतेश्वराय नमः–(मणिकर्णिका घाट, कुञ्जविहारी चौबेके मकान नं० १/२६ मे)

* आषाढ़ कृ० २ * तारकेश्वराय नमः–(ज्ञानवापी, गौरीशंकरमूर्तिके नीचे लिङ्ग लोप होगया है, भूमिकी पूजा होती है)

* आषाढ कृ० ३ * ज्ञानेश्वराय नमः (लाहौरीटोला, धनीराम खत्रीके मकान नं० ३१/३० मे)

* आषाढ़ कृ० ४ * करुणेश्वराय नमः (ललिताघाटके ऊपर लाहौरीटोला, त्रिसन्ध्येश्वरके समीप मं० नं० ६/३८ मे)

* आषाढ़ कृ० ५ * मोक्षेश्वराय नमः (करुणेश्वरसे सटेहुये, पूरबदिशामे, मं० नं० ६/३८ के घेरेमे)

* आषाढ़ कृ० ६ * स्वर्गद्वारेश्वराय नमः–(ब्रह्मनाल, विश्वनाथ सिंहके म० नं० १०/८० मे)

* आषाढ़ कृ० ७ * ब्रह्मेश्वराय नमः–(बङ्गालीटोलाके समीप, बालमुकुन्दका चौहट्टा, मँगरू घाटियाके मकानमे)

* आषाढ़ कृ० ८ * लाङ्गलीश्वराय नमः–(कचौड़ीगलीके पश्चिम खोवाबाजारमे)

* आषाढ़ कृ० ९ * वृद्धकालेश्वराय नमः–(दारानगर,प्रसिद्ध)

* आषाढ़ कृ० १० * वृषेश्वर-(इनकी दो मूर्ति है, (१ हरिश्चन्द्र स्कूलके घेरेमे पूरब और उत्तरके कोनेपर, (२) उसीके समीप, गोरखनाथके टिला, म० नं० ५०/३०, के भीतर)

* आषाढ़ कृ० ११ * चण्डीश्वर-(सदरबाजार, चण्डीदेवी-के समीप, पश्चिमदिशामे)

* आषाढ़ कृ० १२ * नन्दिकेश्वर- (ज्ञानवापी मूर्ति लोप होगई, नन्दीकेस्थानपर पूजे जाते हैं)

* आषाढ़ कृ० १३ * महेश्वर-(मणिकर्णिकाघाट, गङ्गातट मढ़ीमे)

* आषाढ कृ० १४ * ज्योतिरूपेश्वर-(काकारामकीगली महाराज बर्दवानके कोठीके समीप मठ, नं० ५१/६ में)

अमृतेशस्तारकेशो ज्ञानेशः करुणेश्वरः ॥ ४५ ॥
मोक्षद्वारेश्वरश्चैव स्वर्गद्वारेश्वरस्तथा ।
ब्रह्मेशो लाङ्गलश्चैव वृद्धकालेश्वरस्तथा ॥ ४६ ॥
वृषेशश्चैव चण्डीशो नन्दिकेशो महेश्वरः ।
ज्योतिरूपेश्वरंलिङ्गंख्यातमत्रचतुर्दशम् ॥ ४७ ॥
काश्यांचतुर्दशैतानि महालिङ्गानिसुन्दरि ।
इमानिमुक्तिहेतूनिलिङ्गान्यानन्दकानने ॥ ४८ ॥
एतान्याराधयेद्यस्तु लिङ्गानीह चतुर्दश ॥ ४९/२ ॥
नतस्यपुनरावृत्तिः संसाराध्वनिकर्हिचित्॥ ५०/१ ॥(का०खं०अ०७३)

* आषाढ़ कृ०१५ तथा शु०१ * (एकतीर्थीयात्रा) मणिकर्णिकाघाट स्नान, विश्वनाथदर्शन-(जैसा कि नित्ययात्रा की विधी वार्षिक यात्रा पृ०नं० १ मे है) इसको प्रतिदिन काशीवासियोंको अवश्य करनी चाहिये, यह वह यात्रा है कि जिससे और कोई (प्रयाग अवध, मथुरा, वा काशी ही

की अनेक) यात्रा न हो सकै तो वह प्रतिदिन यदि इसीको करता रहै तो मानो सब तीर्थ स्नान, वो यात्रा कर चुका, यथा

सर्वतीर्थेषुसस्नौस सर्वयात्रांव्यधात्सच ॥ १०४/२ ॥
मणिकर्ण्यांतुयःस्नातोयोविश्वेशंनिरैक्षत ॥ १०५/१ ॥
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं पुनः पुनः।
दृश्यो विश्वेश्वरो नित्यं स्नातव्या मणिकर्णिका ॥ ९ ॥
(का० खं० अ० १००)

* आषाढ़ शु० २ * (द्वितीयतीर्थी यात्रा) सूर्य्योंदयसे प्रथम पञ्चगङ्गा घाट स्नान, बिन्दुमाधवदर्शन (इनकी दो मूर्ति है, १ पञ्चगङ्गाघाट, न० ३१/१४ के घेरेमे, २ काठके हवेली के पिछवाड़े गुलावदास गुजराती वनियाँके मकानमे), मध्यान्ह मणिकर्णिका स्नान, विश्वेश्वर दर्शन यथा।

प्रातः पञ्चनदे स्नात्वा मध्याह्ने मणिकर्णिकाम्।
(इति लिङ्गपुराणे)

* आषाढ़ शु० ३ * (त्रितीर्थीयात्रा) प्रथम प्रयागतीर्थ, (दशाश्वमेध) घाट, पुनः पञ्चगङ्गा, तपश्चात् पुष्करिणी तीर्थ, (मणिकर्णिकाकुण्ड) स्नान, यथा।

काश्यां तीर्थत्रयी श्रेष्ठा नित्यं सेव्या प्रयत्नतः।
आदौ स्नात्वा प्रयागेतु पञ्चगङ्गांततः परम्।
ततः पुष्करिणीतीर्थे स्नात्वामुच्येत बन्धनात्। (लिङ्गपुराणे)

* आषाढ़ शु० ४ * (चतुस्तीर्थी यात्रा) प्रथम पिलपिला, (त्रिलोचन) तीर्थ स्नान, सन्ध्या तर्पणादि करि त्रिलोचन नाथदर्शन, पुनः पञ्चगङ्गास्नान बिन्दुमाधवदर्शन, मणिकर्णिका वो ज्ञानवापी स्नान, विश्वेश्वरदर्शन इस यात्राके करनेसे बहुत बड़े २ पापोसे संशुद्धि हो जाती है, इसको

महापापों की संशोधक प्रायश्चित कहा है, यथा।

पुण्येपिलपिलानाम्नीत्रिसरित्परिसेविते ॥ ४७ ॥
स्नात्वा गृह्योक्तविधिना तर्पणीयान्प्रतर्प्यच ॥ ४८ ॥
ततः पञ्चनदेस्नात्वा मणिकर्णिह्रदेन्ततः ॥ ५४ ॥
ततोज्ञानोदवाप्यान्तु स्नात्वाविश्वेशमर्चयेत्।
प्रायश्चित्तमिदं प्रोक्तं महापापविशोधनम् ॥ ५५ ॥
(का० खं० अ० ७९)

* आषाढ़ शु० ९ * (पञ्चतीर्थी यात्रा) प्रथम असी सङ्गम स्नान, असी सङ्गमेश्वर दर्शन, (असी सङ्गमेश्वरका उसी जगह दो स्थान है, एक श्रीमती बबुई राधादुलारी जीके स्थानके समीप म० नं० १/३२, वो दूसरा प्रथम मन्दिरके पीछे न० १/७ मे) पुनः दशाश्वमेध घाट स्नान दशाश्वमेधश्वर (सीतलाजीकी मढीमे) दर्शन, तथा वरणा सङ्गमस्नान, सङ्गमश्वर (आदिकेशवके नीचेके चौकमे), तथा आदिकेशव दर्शन, पुनः पञ्चगङ्गास्नान, बिन्दुमाधव दर्शन (पञ्चगङ्गा घेरा नं० ३१/३० मे) तथा मणिकर्णिका स्नान विश्वनाथ दर्शन, यथा।

प्रथमं चासिसम्भेदं तीर्थानां प्रवरं परम्।
ततोदशाश्वमेधाख्यं सर्वतीर्थनिषेवितम् ॥ १०८ ॥
ततः पादोदकं तीर्थमादिकेशवसन्निधौ।
ततः पञ्चनदं पुण्यं स्नानमात्रादघौघहृत् ॥ १०९ ॥
एतेषामपि तीर्थानां चतुर्णा मपि सत्तम।
पञ्चमं मणिकर्ण्याख्यं मनोवयवशुद्धिदम् ॥ ११० ॥
पञ्चतीर्थ्यां नरः स्नात्वा न देहं पाञ्चभौतिकम्।
गृह्णाति जातु चित्काश्यां पञ्चास्यो वाथ जायते ॥ ११४ ॥
(का० खं० अ० ८४)

* आषाढ़ शु० ६ * (षट्तीर्थी यात्रा) वरणा सङ्गम, असीसङ्गम, ज्ञानवापी, मणिकर्णिकाघाट, ब्रह्मकुण्ड (माणिकर्णिकाकुण्ड), धर्मनद (पञ्चगङ्गा), यह छवो भी एक प्रकारके योगके अङ्ग हैं, इनके सेवनसे जीव फिर कभी माताके उदरमे, उत्पन्न नही होता, अर्थात् आवागमनसे रहित हो जाता है, यथा।

पादोदकासि सम्भेदज्ञानोदमणिकर्णिकाः।
षडङ्गोयं महायोगो ब्रह्मधर्महृदावपि ॥ ७८ ॥
षडङ्गसेवनादस्माद्वाराणस्यां नरोत्तम।
नजातु जायते जन्तुर्जननीजठरे पुनः ॥ ७९ ॥

(इसीमे दशाश्वमेध घाटके मिला देनेसे तथा असीसङ्गमसे आरम्भ करनेमे सप्ततीर्थी यात्रा हो जाती है, जैसी कि आगे स्पष्ट है)-

* आषाढ़ शु० ७ * (सप्ततीर्थी अथवा सप्तायतन यात्रा) असी सङ्गम स्नान, असी सङ्गमेश्वर दर्शन (असी घाट न० २/२ वीं न० ३/५), केदार घाट स्नान, केदारेश्वर दर्शन (प्रसिद्ध), दशाश्वमेधघाट स्नान, दशाश्वमेधेश्वर दर्शन (सीतला जीके मढीमे), वरणा सङ्गम स्नान, वरणासङ्गमेश्वर (आदिकेवशके नीचेके चौकमे) तथा आदिकेशव दर्शन, त्रिलोचन घाट स्नान, त्रिलोचननाथ दर्शन (प्रसिद्ध), पञ्चगङ्गा स्नान, विन्दुमाधव दर्शन (न० ३/३० के घेरेमे), मणिकर्णिका स्नान, मणिकर्णिकेश्वर (काकाराम की गलीमे महाराज बरदवानके मकान न० ५१/३१ के समीप), तथा विश्वेश्वर दर्शन (प्रसिद्ध), इसयात्राके करनेका अमित फल है।

आयतन यात्रा ६६५२

१ एकायतन यात्रा :— (गंगास्नानकरके)
"पत्रैः पुष्पैः फलैः तोयैः पूज्यो विश्वेश्वरः सदा"।
(काशीखण्ड)

२ द्विरायतन यात्रा = "द्विलिंग यात्रा" —
"मणिकर्ण्यां नरः स्नात्वा मणिकर्णीशमर्चयेत्॥
ततो वाप्यां नरः स्नात्वा विश्वेशं पूजयेत्ततः॥
सर्व पाप विनिर्मुक्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते॥"
(नंदी पुराण)

३ त्र्यायतन यात्रा = "त्रिलिंगयात्रा" —
"अविमुक्तं च स्वर्लीनं तथा मध्यमकं पदं॥
(एत)ल्लिंगत्रयं देवि दृष्ट्वा पापानि नश्यन्ति॥
(लिंग पुराण)
(१) अविमुक्तं = अविमुक्तेश्वर
(२) स्वर्लीनं = स्वर्लीनेश्वर (मुहल्ला महादेवा — गहरा [illegible] घाट व राजघाट के बीच में — गंगातट)
(३) मध्यमकं पदं = मध्यमेश्वर (मंदाकिनी तीर्थ से उत्तर)

अथवा | १ ॐकारेश्वर, २ त्रिलोचनेश्वर, ३ [illegible]त्तिवासेश्वर"

४ चतुरायतन यात्रा = "चतुर्लिंग यात्रा" —
शैलेशं संगमेशं च स्वर्लीनं मध्यमेश्वरं॥

दृष्ट्वा न जायते मर्त्यः संसारे दुःखसागरे॥
(लिंगपुराण)

(१) खर्वीनेश्वर (महल्ला महादेवा–गंगातटे)
(२) संगमेशं = (वरणागंगा संगमपर) = वर्णासंगमेश्वर)
(३) शैलेशं = शैलेश्वर (मढ़िया घाट, वरणातट)
(४) मध्यमेश्वर (मंदाकिनी से उत्तर).

५ पंचायतन यात्रा :–

कृत्तिवासो मध्यमेशः ओंकारश्च कपर्दिकः॥
विश्वेश्वर इति ज्ञेयं पंचायतनमुत्तमं॥
(लिंगपुराण)

(१) कृत्तिवासेश्वर (हंसतीर्थ के पश्चिमतट, [illegible])
(२) मध्यमेश्वर – (मंदाकिनी तट)
(३) ओंकारेश्वर (मच्छोदरी से उत्तर, त्रिलोचनपुरा मे)
(४) कपर्दीश्वर (पिशाच मोचन तीर्थ = लेटाभंटा)

६ षडायतन यात्रा :–

पंचायतन यात्रा में केदारेश्वर मिलाने से.

७ सप्तायतन यात्रा :–

षडायतन यात्रा मे त्रिलोचनेश्वर मिलाने से.

८ अष्टायतन यात्रा –

दक्षेशः पार्वतीशश्च तथा पशुपतीश्वरः॥
गंगेशो नर्मदेशश्च गभस्तीशः सतीश्वरः।
अष्टमस्तारकेशश्च प्रत्येकमपि भो घटोद्भव॥
क्षयान्येतानि लिंगानि महापापोपशान्तये॥
का. रव. ९७-५८

अष्ट महालिङ्ग यात्रा।

(इस यात्राके करनेसे विघ्नोकी शान्ती, और महापापों का नाश होता है।

* आषाढ़ शु० ८ * दक्षेश्वराय नमः (वृद्धकालके न० २३/१ घेरेमे)

* आषाढ़ शु० ९ * पार्वतीश्वराय नमः (त्रिलोचन घाट, आदिमहादेवके घेरेमे नं० ३/२९)

* आषाढ़ शु० १० * पशुपतीश्वराय नमः (नन्दनसाहुके महल्लाके दक्षिण, पशुपतेसर महला प्रसिद्ध नं० ५५/४७)

* आषाढ़ शु० ११ * गङ्गेश्वराय नमः (ज्ञानवापीके पूर्व पीपलतले भूमि पूजन)

* आषाढ़ शु० १२ * नर्मदेश्वराय नमः (त्रिलोचन घाट, त्रिलोचननाथके पिछवाड़े नं० २/६२)

आषाढ़ शु० १३ गभस्तीश्वराय नमः (पञ्चगङ्गाघाट, मङ्गलगौरीके घेरेमे नं० २३/६५)

* आषाढ़ शु० १४ * सतीश्वराय नमः(वृद्धकालकी सड़क, रत्नेश्वरके समीप, पश्चिमपटरी, म० नं० ४१/६४ के घेरेमे)

* आषाढ़ शु० १५ * तारकेश्वराय नमः (ज्ञानवापीके पूरब, गौरीशङ्कर मूर्तिके नीचे भूमि पूजन) तथा- कर्णघण्टा तीर्थस्नान, व्यासेश्वर, वो कर्णघण्टेश्वर दर्शन (कर्णघण्टा प्रसिद्ध नं० ६०/९० बाबू श्रीकण्ठप्रसादसिंह चैनपुर निवासीके घेरेमे, तालावके दक्षिणतटपर मढ़ीमे उभय-लिङ्गविराजमान हैं)॥

आषाढ़शुक्ल १४ वा पूर्णिमाको—
~~पुनः~~ आषाढ़ेश्वर दर्शन (आषाढ़ेश्वरके दो स्थान हैं, १—काशीपुरा, महाराजा वेतियाके शिवाले नं० ९३/७ के घेरेमे, पश्चिमदिशा, २—मछरहट्टाके फाटकके भीतर, खेदसोनारके मकानके पास) उक्तयात्रासे मनुष्य कहींपर मरै, परन्तु वही गति प्राप्त होगी जोकि काशीमे मरनेवालेको मिलती है, (अर्थात् काशी का ज्ञान बना रहता है, और पापोंके फेरमे नही पड़ता, तथा-कलिकाल वो क्षेत्रज उपसर्गोंका भय भी नही होने पाता) अतएव काशीवासियोंको क्षेत्रसम्बन्धी पापोंको दूर करनेकी इच्छासे इसघण्टाकर्ण तीर्थमे स्नान करि. प्रयत्नपूर्वक व्यासेश्वरादि-कर्णघण्टेश्वर व आषाढ़ेश्वर-का दर्शन वो पूजन करना चाहिये ॥ यथा—

अष्टायतनयात्रान्या कर्तव्या विघ्नशान्तये ।
दक्षेशः पार्वतीशश्च तथा पशुपतीश्वरः ॥ ४९ ॥
गङ्गेशो नर्मदेशश्च गभस्तीशः सतीश्वरः ।
अष्टमस्तारकेशश्च प्रत्यष्टमि विशेषतः ॥ ५० ॥
दृष्टयान्येतानि लिङ्गानि महापापोपशान्तये । ५९/२ ॥
(का० खं० अ० १००)

घण्टाकर्णह्रदेस्नात्वा दृष्ट्वा व्यासेश्वरंनरः ।
यत्रकुत्रमृतो वापि वाराणस्यां मृतो भवेत् ॥ ७१ ॥
काश्यां व्यासेश्वरं लिङ्ग पूजयित्वा नरोत्तमः ।
न ज्ञानाभ्रश्यते क्वापि पातकै र्नाभिभूयते ॥ ७२ ॥
व्यासेश्वरस्यये भक्ता नतेषांकलिकालतः ।
नपापतो भयंक्वापि नचक्षेत्रोपसर्गतः ॥ ७३ ॥
व्यासेश्वरः प्रयत्नेन द्रष्टव्यः काशिवासिभिः ।
घण्टाकर्णकृतास्नानैः क्षेत्रपातकभीरुभिः ॥ ७४ ॥
(का० खं० अ० ९६)

आषाढि नार्चितंलिङ्गमाषढ़ीश्वरसंज्ञकम्।
दृष्ट्वाषाढ्यां नरो भक्त्या सर्वैः पापैः प्रमुच्यते ॥ २७ ॥
उदीच्यां भारभूतेशादाषाढ़ीशं समर्चयन्।
आषाढ्यां पञ्चदश्यां वै न पापैःपरितप्यते ॥ २८ ॥
(का० ख० अ० ९९)

श्रावण मास ॥

* श्रावण रविवार * वृद्धकाल (कालदम कूप प्रसिद्ध, म० न० ३२/१ के घेरेमे) इस कूपके जलसे स्नान, तथा पान करके (उसी जगह) वृद्धकालेश्वर, चतुर्मुखेश्वर, नागेश्वर, कालेश्वर, दक्षेश्वर, मालतीश्वर, मृत्युञ्जयादि समीपी देवदर्शन।

यह स्नान सर्व महिनेके रविवारको लिखा है, श्रावणमे केवल परजाय हो गई हैं, यहाँके जल पीने वो स्नानसे कुष्ट तथा सर्व ज्वरादि रोग छूट जाते हैं यथा।

न कुष्ठं नच विस्फोटा न रन्ध्रा न विचर्चिका।
पीतात्स्पृष्टात्प्रातिष्ठन्तिकफः कालतूमोदकात् ॥ ७६ ॥
नाग्निमान्द्यं नैव शूलं न मेहो न प्रवाहिका।
न मूत्रकृच्छ्रं नो पामा पानीयस्यास्य सेवनात् ॥ ७७ ॥
भूतज्वराश्च ये केचिद्येकेचिद्विषमज्वराः।
तेक्षिप्रमुपशाम्यन्ति ह्येतत्कूपोदसेवनात् ॥ ७८ ॥
(का० ख० अ० ३४)

* श्रावण - सोमवार * केदारकुण्ड (प्रसिद्ध) स्नान, केदारेश्वरका दर्शन, वो पूजन, यथा।

काश्यामन्यमिह स्थानं केदाराभिधमुत्तमम्।
तस्य केदारनाथस्य श्रावणे सोमवासरे ॥
पूजा कार्या विशेषेण साधनैर्विविधैःशुभैः॥ इति शिवरहस्ये।

यह यात्रा यदि हो सकै तो श्रावणके चारो सोम्वारको किया जाय।

सारनाथ वो मारकंण्डेश्वर दर्शन–शिष्टाचार(इनकी काशी खण्डमे लेख नहीं)

श्रावण, मङ्गलवार, दुर्गाकुण्ड (प्रसिद्ध) स्नान, श्रीदुर्गा देवी (म० न० २७/१ के समीप) दर्शन वो पूजन–यह यात्रा प्रत्येक महीनेके मङ्गलवार की है, परन्तु श्रावण भगवती का प्रिय दिन मानकर,किन्तु एक प्रकार की प्रजाय होगई है, इससे यहाँ लिखी गई, और अच्छाही है जिससे जब होसकै तभी दर्शन करै, इस्के करने से नव जन्मके संञ्चित पाप छूट जाते हैं, यथा।

अष्टम्यांच चतुर्दश्यां भौमवारे विशेषतः।
सम्पूज्या सततं काश्यां दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥ ८२ ॥
दुर्गाकुण्डेनरः स्नात्वासर्वदुर्गतिहारिणीम्।
दुर्गां सम्पूज्य विधिवन्नवजन्माघमुत्सृजेत् ॥ ८७ ॥
(का० खं० अ० ७२)

दुर्गविनायक, कुक्कुटेश्वर, चण्डभैरव.तिलपर्णेश्वर, (इन्हीके द्वारपर बलिप्रदान होता है) समीपी देव दर्शन तथा–

कामाक्षादेवी दर्शन (कमच्छा म० न० २१/१८९) देवी कुण्ड स्नान (देवीकुण्ड लोप होगया) अतएव देवीका विधिवत् पूजन होना चाहिये, यथा–

कामाक्षास्नान मनघ छेकमस्ति वरानने।
तत्र कुण्डं महाद्दिव्यं तज्जलं चामृतोपमम् ॥
तत्रापि श्रावणे मासि प्रत्यहं विधिवज्जनैः।
पूजा कार्या विशेषेण सर्वथा भौमवासरे ॥ (३० शिवरहस्ये)

॥ नव गौरी यात्रा ॥

* श्रावण शु ३ * गोप्रेक्षघाट (गायघाट) स्नान

१–सुखनिरमालिकागौरीदर्शन (गायघाट, कान्छामइयाके मकान नं० ४२/८४-८५ के घेरेमे, हनुमानजीके मन्दिरके समीप)

२–ज्येष्ठागौरी दर्शन (काशीपुरा भूतभैरवकी गली शङ्कर पण्डाके म० नं० ६२/१४ के समीप)

३-ज्ञानवापीमार्जन सौभाग्यगौरी दर्शन, (विश्वनाथजीके घेरेमे पश्चिम वो उत्तरके कोनेपर)

४–शृङ्गार गौरी (विश्वनाथजीके घेरेमे उत्तर वो पूरबके कोनेपर)

५–मीरघाट मार्जन, विशालाक्षीगौरी दर्शन, (लाहौरीटोला धर्मकूपके समीप म० नं० ४१/८१-८२ मे)

६–ललिता घाटमार्जन, ललितागौरी दर्शन, (ललिता घाट, म० नं० ३१/६३ मे)

७–भवानीगौरी दर्शन, (कालिकागली पं० द्वारिका प्रशाद वो कपिलदेवजीके मकान नं० २/२८ मे) तथा– श्रीअन्नपूर्णा दर्शन, (प्रसिद्ध)

८–पञ्चगङ्गा मार्जन, मङ्गलागौरी दर्शन (पञ्चगङ्गा घाट, म० नं० २१/८८ मे)

९–लक्ष्मीकुण्ड मार्जन–महालक्ष्मी गौरी दर्शन (लक्ष्मी कुण्ड प्रसिद्ध)

यह यात्रा समस्त महिनेके शु० ३ को होनी चाहिये, यहाँ केवल श्रावणमास गौरीप्रिय समुझकर रक्खीगई है इसके

करनेसे मनुष्य लोकपरलोक दोनोही जगह दुःख नहीं पाता यथा—

अतः परं प्रवक्ष्यामि गौरीयात्रामनुत्तमाम्।
शुक्लपक्षे तृतीयायां यायात्राविसमृद्धिदा ॥ ६७ ॥
गोप्रेक्षतीर्थे सुस्नाय सुखनिर्मालिकां व्रजेत्।
ज्येष्ठावाप्यां नरःस्नात्वा ज्येष्ठांगौरीं समर्चयेत् ॥ ६८ ॥
सौभाग्यगौरीं सम्पूज्या ज्ञानवाप्यां कृतोदकैः।
ततः शृङ्गार गौरीश्च तत्रैवच कृतोदकः ॥ ६९ ॥
स्नात्वाविशालगङ्गायां विशालाक्षीं ततो व्रजेत्।
सुस्नातो ललितातीर्थे ललितामर्चयेत्ततः ॥ ७० ॥
स्नात्वाभवानीतीर्थेथ भवानीं परिपूजयेत्।
मङ्गलाच ततोभ्यर्च्यविन्दुतीर्थकृतोदकैः ॥ ७१ ॥
ततोगच्छेन्महालक्ष्मीं स्थिरलक्ष्मीसमृद्धये।
इमां यात्रां नरः कृत्वाक्षेत्रेस्मिन्मुक्तिजन्मति ॥ ७२ ॥
नदुःखैरभिभूयेत इहामुत्रापि कुत्रचित्।७३ (का० खं० अ० १००)

* श्रावण शु० ५ * (नागपञ्चमी) वासुकीकुण्ड, तथा तक्षककुण्ड ("कर्कोटक वापी" नागकुवां) स्नान, (अलईपुर के समीप) वासुकीश्वर, अथवा तक्षकेश्वर, वा कर्कोटकेश्वर, तथा कर्कोटकनाग दर्शन (नागकुवाँ के समीप, प्राचीन मूर्ति लोप होगई,) इस यात्रा से मनुष्योंको नागलोक की प्राप्ती, तथा सकुटुम्ब सर्पभयसे निवृत्ति होजाती है यथा

यःस्नातो नागपञ्चम्यां कुण्डेवासुकिसंज्ञिते।
नतस्यविषसंसर्गो भवेत्सर्पसमुद्भवः ॥ ९ ॥
कर्तव्यानागपञ्चम्यां यात्रावर्षासु तत्रवै।
नागाः प्रसन्ना जायन्ते कुले तस्यापि सर्वदा ॥ १० ॥
तत्कुण्डात्पश्चिमेभागे लिङ्गं वैतक्षकेश्वरम्।

पजनीयं प्रयत्नेन भक्तानां सर्वसिद्धिदम् ॥ ११ ॥
मुनेतस्यात्तरेभागे कुण्डं तक्षकसंज्ञितम् ।
कृतोदकक्रियास्तत्र नसर्पैरभिभूयते ॥ १२ ॥
तत्रकर्कोटवापीचालिङ्गं कर्कोटकेश्वरम् ॥ २३ ॥
तस्यां वाप्यां नरः स्नात्वा कर्कोटेशं समर्च्यच ।
कर्कोटनागमाराध्य नागलोके महीयते ॥ २४ ॥
(का० खं० अ० ६६)

* श्रावण शु० ११ * (सप्तपुरीयात्रान्तरगत) द्वारावती—(शङ्खद्वारा) यात्रा, सङ्खद्धारास्नान, द्वारकेश्वर (तालावके पूरब दिशा तटपर) तथा द्वारिकाधीश दर्शन, (तालाबके दक्षिण तटपर मन्दिर)

शङ्खोद्धारप्रदेशेतु द्वारका परिकीर्तिता (काशीरहस्ये अ० १३)

* श्रावण शु० १४ * आदिमहादेव पूजन, (त्रिलोचन नाथके पूरब, पिछवाड़े, म० न० ३/२२ मे) इसदिन इनको पवित्रारोपण करना चाहिये, संसार मे जितने शिवलिङ्ग हैं सो सब महादेवके नामसे विख्यात हैं उसमे भी यह परमपूजनीय होनेके कारण, आदि महादेवके नामसे प्रसिद्ध हैं, जिसने इनका दर्शन वो पूजन किया निःसन्देह उसने त्रैलोक्य भरके समस्त शिवलिङ्गो का दर्शन करलिया, काशीमे जो मनुष्य एकबार भी इस आदि महादेवका दर्शन वो पूजन करलिया वह महाप्रलय तक बड़े हर्षके साथ शिवलोक मे वास करता है, और कहीं भी मरता है तो उसे शिवलोककी प्राप्ती होती हैं, यथा—

वाराणस्यामधिष्ठात्री देवतासाभिलाषदा ।
महादेवेति संज्ञावैसर्वलिङ्गस्वरूपिणी ॥ ३२ ॥

वाराणस्यां महादेवोदृष्टोयैर्लिङ्ग रूपधृक् ॥
तेन त्रैलोक्यलिङ्गानि दृष्टानीह नसंशयः ॥ ३३ ॥
वाराणस्यां महादेवं समभ्यर्च्य सकृन्नरः।
आभूतसंप्लवं यावच्छिवलोके वसेन्तदा ॥ ३४ ॥
पवित्रपर्वणिसदा श्रावणे मासियत्नतः।
लिङ्गेपवित्रमारोप्य महादेवे न गर्भभाक् ॥ ३५ ॥
(का० खं० अ० ६९)

भाद्रपद मास ॥

* भाद्रपद कृ० ३ * (कजली तीज) विशालाक्षी गौरी दर्शन, (लाहौरी टोला, धर्मकूपके समीप म० नं० ४१/८१।८२ मे) इस दिन जो व्रत रहकर भगवतीका दर्शन वो पूजन और रात्रि जागरण पुनः प्रातःकाल विशालतीर्थ (मीरघाट) स्नानकरि, चौदह कुमारियोंको यथाशक्ति वस्त्राभूषण पुष्पमालादिसे सुसज्जित करि भोजन करावै, दक्षिणा पान देकर आप साथियोंके सहित भोजन करै सोही पूर्णरीतिसे काशीवासके फलको प्राप्त होता है, और जिससे उक्त विधि न हो सके तौभी काशीवासियोंको चाहिये कि उपद्रवोंकी शान्ती और मोक्ष लक्ष्मीके प्राप्ति हेतु उक्त तिथिको विशालाक्षीदेवीका केवल दर्शन वो पूजन अवश्य करैं, उत्तम लोग (काशीवासी वा परदेसी) मोक्ष लक्ष्मीके सिद्धयर्थ, विशालाक्षीके निमित्त बहुत थोड़ा भी द्रव्य (चढ़ा) देते हैं, वा जप वो हवनादि करते हैं सो दोनोही लोकमे अनन्त हो जाते हैं, और पुरुषोहीको नही किन्तु विशालाक्षीके दर्शन वो पूजनसे स्त्रियों को भी बड़ा लाभ है, अर्थात् कुमारियोंको सुन्दर बर, और

गुर्विणियोंको उत्तम पुत्र, वो वन्ध्याको गर्भ, और सौभाग्य वतीको सदा सौभाग्य, वो विधवा को दूसरे जन्ममे सदा सौभाग्यकी प्राप्ती होती है, इत्यादि यथा-

भाद्रकृष्णतृतीयायामुपोषणपरैर्नृभिः ।
कृत्वा जागरणं रात्रौ विशालाक्षीसमीपतः ॥ ६ ॥
प्रातर्भोज्याप्रयत्नेनचतुर्दश कुमारिकाः ।
अलंकृता यथाशक्त्या स्रगम्बरविभूषणैः ॥ ७ ॥
विधायपारणं पश्चात्पुत्रभृत्यसमन्वितैः ।
सम्यग्वाराणसीवासफलं लभ्येतकुम्भज ॥ ८ ॥
तस्यां तिथौ महायात्रा कार्या क्षेत्रनिवासिभिः ।
उपसर्ग प्रशान्त्यर्थंनिर्वाणकमलाप्तये ॥ ९ ॥
मोक्षलक्ष्मीसमृध्यर्थं यत्रकुत्रनिवासिभिः ।
अप्यल्पमपियद्दत्तं विशालाक्ष्यैनरोत्तमः ॥ १२ ॥
तदानन्त्यायजायेत मुनेलोकेद्वयेपिहि ।
विशालाक्षीमहापीठे दत्तं जप्तंहुतंस्तुतम् ॥ १३ ॥
प्राप्यतेत्रकुमारीभिर्गुणशीलाद्यलंकृतः ।
गुर्विणीभिः सुतनयोवन्ध्याभिर्गर्भसंभवः ॥ १५ ॥
असौभाग्यवतीभिश्च सौभाग्यंमहदाप्यते ।
विधवाभिर्नवैधव्यं पुनर्जन्मान्तरेक्वचित् ॥ १६ ॥
(का० ख० अ० ७०)

तथा चौसट्ठी देवी दर्शन-(चौसट्ठीघाट) वो नवगौरी यात्रा-भी (श्रावण शु० ३-पृ० ५७ के अनुसार) यदि हो सके तो करना चाहिये ।

* भाद्र कृ० ४ * गणेश दर्शन वो पूजन (सप्तावर्णके अष्टविनायककी यात्रा) यह यात्रा यदि हो सके तो प्रति चौथको करे, और गणेशजीके प्रसन्नार्थ ब्राह्मणोको लड्डू खिलावे, इसके करनेसे किसी प्रकारका विघ्न नही आता,

और यह सब विनायक भक्तिमान लोगोंके सर्व कष्टोंको दूर करते हैं।

१–मोद विनायक–(मो० कचौड़ीगली, काशीकरवट, किशोरीलाल पण्डा के म० नं० ६ मे)

२–प्रमोद विनायक–(मो० कचौड़ीगली, हनुमान अग्निहोत्री म० नं० ९ मे)

३–सुमुख विनायक–(मो० कचौड़ीगली, मुस्मात बृज सुन्दरी के म० नं० ८ मे)

४–दुर्मुख विनायक–(मो० कचौड़ीगली, शंभू घाटिया के म० न० १७ मे)

५–गणनाथ विनायक–(विश्वनाथ जीके परिक्रमा मार्ग कचहरी में)

६–ज्ञान विनायक–(ज्ञानवापी पर)

७–द्वार विनायक–(विश्वनाथजीके द्वारपर)

८–अविमुक्त विनायक–(अविमुक्तेश्वरके मन्दिर मे)

यथा–सप्तमावरणे येचतांश्चवक्ष्येविनायकान् ॥ १२ ॥
मोदाद्याः पञ्चविघ्नेशाः षष्ठोज्ञानविनायकः।
सप्तमोद्वारविघ्नेशो महाद्वार पुरश्चरः ॥ ११३ ॥
अष्टमः सर्वकष्टौघानविमुक्तविनायकः।
अविमुक्ते ममक्षेत्रेहरेत्प्रणतचेतसाम् ॥ ११४ ॥

(का० खं० अ० ५७)

* भाद्र कृ० ६ *–अग्नीध्रेश्वर दर्शन (इशरगङ्गी, अग्नीश्वर तथा जागेश्वर प्रसिद्ध)

* भाद्र कृ० ८ *–(श्रीकृष्णजन्माष्टमी,) जन्माष्टमी रामनवमी, वावनद्वादशी, नृसिंहचतुर्दशी, तथा दोंनों एकादशी

आदि,त्रिष्णूत्सव के दिन,विष्णुवासर संज्ञक हैं, इस दिन महा-पुण्यकी समृद्धिके निमित्त श्रीकाशीस्थ विष्णुतीर्थकी यात्रा, तथा विष्णुमूर्तिका दर्शन वो पूजन प्रयत्नपूर्वक अवश्य करना चाहिये।

परन्तु काशी (पञ्चक्रोश) सीमान्तर्गत समस्त प्रधान श्रीशिवालिङ्गोंके साथ २ मोक्ष देनेवाली १९८९ श्रीसनातन विष्णुकी भी मूर्ति (इस विधिसे है कि ५०० नारायण रूपकी मूर्तियाँ, वो १०० जलशायी, ३० कच्छप औतार, २० मत्स्य औतार, १०८ गोपाल, १००० बौद्ध, ३० परशुराम, १०१ राम, और एक मूर्ति अकेली मुक्तिमण्डपमे विष्णुकी) है, सो अब इनमेसे कुछ तो स्वयम्, और कुछ यवनीराजधानीमे वो कुछ काशीमे घनी वस्ती होजानेके कारण, लोगोंके घरमे पड़ जानेसे लोप होगई, वो कई सौ मूर्तियां जो प्रगट भी हैं तो उन्मेसे कुछ ऐसे २ स्थानोपर है कि जहाँ प्रायः अबके सर्वसाधारण, मनुष्य श्रद्धापूर्वक नही जासक्ते, अतएव उन्मेसे षोड़शोकला सम्पन्न मुख्य २ सर्वके सुबीतेके अर्थ केवल षोड़श स्थानकी षोड़श मूर्तियोकी यात्रा इस तिथिको इस पुस्तकमे रक्खी गई हैं, जिस यात्राके न करनेसे चाहे विश्व-नाथका अनन्यभक्त भी क्यो नहो परन्तु वह भी अपने मनोरथकी सिद्धी विश्वेश्वर से नही पासक्ता।

(स्मर्ण रहै कि निम्न लिखित सर्वतीर्थोंमे स्नान, अथवा आदिमे (वरणासङ्गम) स्नान पश्चात् अपर स्थानोपर मार्जन करि २ दर्शन वो पूजन करते हुये, वर्णासंगमसे तीरे २

मीरघाट तक आना, पुनः ऊपर होजाना अर्थात् यात्रामे देवमूर्ति दहिने पड़ै, इसप्रकार यात्रा करना चाहिये)

॥ षोड़श बिष्णु मूर्ति के नाम वो स्थान ॥

१–आदिकेशवाय नमः (वरणासङ्गम प्रसिद्ध)

२–विदारनृसिंहाय नमः (प्रह्लादघाट म० नं० १०/८६ मे)

३–प्रह्लादकेशवाय नमः (प्रह्लादघाट नरेन्द्रनाथ वङ्गालीके हातेमे)

४–भृगुकेशवाय नमः (गोलाघाट)

५–त्रिविक्रमाय नमः (त्रिलोचनघाट, त्रिलोचननाथके घेरे मे)

६–नरनारायणाय नमः (माथाघाट म० नं० १/५४ मे)

७–गोपीगोविन्दाय नमः (लालघाट म० नं० २/६८ मे)

८–लक्ष्मीनृसिंहाय नमः (सीतलाघाट राजमन्दिर हनुमान जीके मन्दिरके घेरेमे)

९–श्रीविन्दुमाधवाय नमः (पञ्चगङ्गा म० नं० ३१/१० मे)

१०–वीरमाधवाय नमः (सेन्धियाघाट, आत्मावीरेश्वरके घेरेमे) तथा—

श्रीकृष्णेश्वराय नमः (सङ्कटाजीके दीवार मे पिछवाड़े जङ्गलेदार मढ़ी वसिष्ठेश्वरके समीप हरिश्चन्द्रेश्वरके सामने, जन्माष्टमीको इनके दर्शनका भी विशेष माहात्म्य है) समीपी देवदर्शन

११–गङ्गाकेशवायनमः (ललिताघाट ललिताजीके मन्दिरके घेरे म० नं० ३१/६३ मे)

१२–प्रयागकेशवायनमः (मानमन्दिरघाट लक्ष्मीनाराय-

णके नामसे प्रसिद्ध म० नं० ८६/८९ मे)

१३–स्वेतमाधवायनमः (विशालाक्षीके समीप)

१४–श्रीविष्णवेनमः (विश्वनाथजीके मन्दिरके घेरेमे दक्षिण वो पश्चिमके कोनेपर)

१५–ज्ञानमाधवायनमः (ज्ञानवापीके समीप)

१६–कालमाधवायनमः (काठकी हवेलीके पश्चिम वो उत्तरके कोनेपर) यथा–

सम्प्राप्य वासरं विष्णोर्विष्णुतीर्थेषु सर्वतः।
कार्या यात्रा प्रयत्नेन महापुण्यसमृद्धये॥९८॥ (का०खं०अ०१००)

श्रीविष्णुवाक्य मुनीकेप्रति।

नारायणाःशतं पञ्चशतञ्चजलशायिनः।
त्रिंशत्कमठरूपाणिमत्स्यरूपाणिविंशतिः॥ २०७॥
गोपालाश्चशतं सार्द्धं बुद्धाः सन्ति सहस्रशः।
त्रिंशत्परशुरामश्चरामाएकोत्तरंशतम्॥ २०८॥
विष्णुरूपोस्म्यहं चैकोमुक्तिमण्डपमध्यतः॥ २०९॥
(का० खं० अ० ६१)

(शिववाक्यं विष्णुप्रति) आदावनाराध्यभवं
मत्र्योमां भजिष्यत्यपि भक्तियुक्तः।
समीहितं तस्य न सेत्स्यतिध्रुवं परात्परान्मेम्बुजचक्रपाणे॥३१॥
(का० खं० अ० ९८)

* भाद्र कृ० १५ * पञ्च पुष्करिणी, ऋणमोचन, (लड्डूसलार, हनुमानफाटकके समीप), पापमोचन, (नौआपोखर), कपालमोचन, (लाटभैरव का तालाव), ऐतरणी, वैतरणी, (प्रसिद्ध) स्नान, (हनुमान फाटकसे वैतरणी तक मार्गही

१३

भाद्र वदी ८ को महालक्ष्मीका व्रतकरके, महालक्ष्मीकुण्डपरकी महालक्ष्मीका पूजन करना। नं० ४५।५३

मे पाँचो पोखरी हैं) इसमे स्नान करनेसे पञ्चभौतिक शरीर पुनः नही प्राप्त होता, तथा (देव, पित्र, ऋषि) तीनो ऋणसे मनुष्य उऋण होजाता है, इसकी सविस्तर कथा पद्मपुराणान्तर्गत स्वर्गखण्डमे है,) सुमन्तेश्वर तथा हनुमानजी (हनुमान फाटक हनुमानजी के मन्दिर नं० ३१/८३ मे) विश्वकर्मेश्वर (ग्वालगड्डा) धनिवन्तरेश्वर धनिवन्तर कुण्ड (धनेसरा तट बाबा नृसिंहदासजी महंत के स्थान नं० ३८/५० में) तथा हरिजननाथ (काजी की मण्डी, बलुआवीर के समीप म० नं० ४९/६४ ए० मे) इत्यादि मारगीय देवदर्शन ।

* भाद्र शु० ५ * (ऋषि पञ्चमी) सप्त ऋषियात्रा-

(यह यात्रा मुख्य दर्शनका माहात्म्य समझकर, सर्वसाधारणके सुबीतेके लिये ऐसी रीतिसे लिखी गई है कि जिसमे सर्वसाधारण से श्रद्धा युक्त एकही दिनमे होजाय)

१-(संकटा घाट स्नान) वसिष्ठेश्वरायनमः वो अरुन्धती दर्शन (संकटाजी के पीछे म० नं० ५८/६८ मे)

२-पुलहेश्वरायनमः- (ब्रह्मनाल, स्वर्गद्वार, विश्वनाथ सिंह के बैठक के द्वार पर)

३-पुलस्तीश्वरायनमः-(ब्रह्मनाल, जवविनायकके सामने, चतुर भुजजी सारस्वतके मकानसे सटे हुये पूरब दिशा जङ्गला वाली मढ़ी मे)

४-गौमृतश्वरायनमः-(गोदौलिया, श्रीकाशीराज बहादुर के शिवालय, नं० १०/११ के घेरेमें)

५—काश्यपेश्वरायनमः (जङ्गम वाड़ी जङ्गमबाबाके द्वारे सड़कपर)

६—अङ्गिरेश्वरायनमः—(जङ्गमवाड़ी के पश्चिम-हरिकेशनाथ के पास)

७—जमदग्नीश्वरायनमः (मो० मध्यमेश्वर, मध्यमेश्वरके समीप) इन सप्तमूर्ती की यात्रासे स्त्रियोंको वैधव्य पुरुषोंको स्त्रीवियोग दुःख, नही सहना पड़ता, और प्रजा तथा प्रजापति लोकमे सनमान सहित सूर्य्यवत् तेजयुक्त बास मिलता है, अर्थात् दोनो लोककी मनोवाञ्छाये पूर्ण होजाती हैं, यथा—

मूर्तिर्वसिष्ठारुन्धत्योस्तत्र पूजयेत् प्रयत्नतः ।
नस्त्री वैधव्यमाप्नोति नपुमां स्त्रीवियोगिताम् ॥ ७१ ॥
(का० खं० अ० ६१)

पुलहेशपुलस्त्येशौ स्वर्गद्वारस्य पश्चिमे ।
तौ दृष्ट्वा मनुजोलोके प्राजापत्ये महीयते ॥ १९ ॥
हरीकेशवनेरम्ये दृष्ट्वैवाङ्गिरसेश्वरम् ।
इहलोके वसेद्विप्र तेजसा परिवृंहितः ॥ २० ॥
काश्यामेतानि लिङ्गानि सेवितानि शुभैषिभिः ।
मनोभिवाञ्छितं दद्युरिहलोके परत्रच ॥ २२ ॥
(का० खं० अ० १८)

* भाद्र शु० ६ * (लोलार्क छठ्) लोलार्क कूप (भदैनी) स्नान, (शिष्टाचार, इसदिन यहाँ मेला होता है)

*भाद्र शु० ८ *महालक्ष्मी यात्रा—(सोरहिया, १६ दिनकी यात्रा है,) लक्ष्मीकुण्डस्नान पितृतर्पण, वो दान और लक्ष्मी दर्शन वो विधिवद् पूजन तथा मन्त्र जपादिसे मनु-

ष्य सदा लक्ष्मीवान् बना रहता है, वो मन्त्रों मे शीघ्र सिद्धि होती है यथा—

पितॄन्सन्तर्प्यविधिवत्तीर्थे श्रीकुण्डसंज्ञिते।
दत्वा दानानि विधिवन्नलक्ष्म्या परिमुच्यते॥ ६४॥
लक्ष्मीक्षेत्रं महा पीठं साधकस्यैव सिद्धिदम्।
साधकस्तत्र मन्त्राश्च नरः सिद्धिमवाप्नुयात्॥ ६५॥
(का० ख० अ० ७०)

(यह स्नान, भादो शु० ८ से कुआर कृ० ८ ताईं होता है)

*भाद्र शु० १५-*कपालमोचन तीर्थ (लाटभैरवके तलाव) मे स्नान, कुलस्तम्भ (लाटभैरव) तथा—कपालीश्वर दर्शन वो पूजन, (कपालीश्वरकी मूर्ति लोप होगई, तालावसे लाठभैरवकी ओर सीढ़ी चढ़तेही, ऊपर फरशपर भूमिका पूजन होता है) इस स्नान, वो दर्शन और पूजनसे अश्वमेध यज्ञका फल तथा मनुष्य रुद्रपदका अधिकारी होता है, यथा—

महाश्मशानस्तम्भोस्ति कोटीशाद्बहिर्दिक्स्थितः।
तस्मिन्स्तम्भेमहारुद्रस्तिष्ठते चोमयासह॥ ६४॥
तंस्तम्भं समलङ्कृत्य नरस्तत्पदमाप्नुयात्।
तत्रैव तीर्थंपरमं कपालेशसमीपतः॥ ६५॥
कपालमोचनं नाम तत्र स्नातोऽश्वमेधभाक्॥ ६६॥
(का० खं० अ० ९७)

आश्विन मास।

* आश्विन पितृपक्ष* (पितामरण तिथिको) पितृकुण्ड (पितरकुण्डामे) स्नान, वो श्राद्ध, तथा पित्रीश्वर (कुण्डके पश्चिम मूलचन्द कोइरीके मकानके समीप) दर्शन वो

पूजन करने से पितृलोग बहुतही सन्तुष्ट होते हैं यथा—

पित्रीशस्तच्यमदिशिपितृकुण्ड तदग्रतः ॥ १३५ ॥
तत्रश्राद्धकृतांपुसां तुष्येयुः प्रपि तामहाः ॥ १३६ ॥
(का० खं० अ० ९७)

* आश्विन कृ० २ * ललिताघाट स्नान ललिता देवी दर्शन, इनके दर्शन, वो पूजन, प्रणाम तथा स्तुति करनेसे सर्वत्रही अपने वाञ्छितका लालित्य लाभ होता है, किसी प्रकारका विघ्न नही होता यथा।

साचपूज्या प्रयत्नेन सर्वसंपत्समृद्धये।
ललितापूजकानांच जातुविघ्नो नजायते ॥ १९ ॥
इषेकृष्णद्वितीयायां ललितांपरिपूज्यवै।
नारी वा पुरुषो वापि लभते वाञ्छितं पदम् ॥ २० ॥
स्नात्वाचललितातीर्थे ललितां प्रणिपत्यवै।
लभेत्सर्वत्र लालित्यं यद्वा तद्वाऽनुलभ्यच ॥ २१ ॥
(का० खं० अ० ७०)

आश्विन कृ० ९-(मातृ ९) मातृकुण्ड (पितरकुण्डाके पश्चिम, ललापुरा) स्नान, जो कोई यहाँ स्नान करता है, पुनर्जन्मके भयसे छूट जाता है,और मातृकावोके प्रसादसे ईप्सित फलको पाता है, यथा—

तदुत्तरे मातृतीर्थे स्नातुर्जन्मभयापहत्।
तत्रस्नानं तुयः कुर्यान्नारी वा पुरुषोपिवा ॥ ४५ ॥
इप्सितं फलमाप्नोति मातॄणांचप्रसादतः ॥ ४६ ॥
(का० खं० अ० ९७)

* आश्विन शु० १ *(नवरात्रारम्भ)विश्वभुजागौरी(लाहौरीटोला,धर्मकूपके समीप) दर्शन,पूजन,इनके दर्शन पूजनसे सदा

विघ्नोका नाश होता है, और मनोरथकी सिद्धी होती है, किन्तु कुवारके नवरात्रभर यदि होसके तो इनकी यात्रा प्रयत्न पूर्वक करनी चाहिये क्योंकि विश्वभुजादेवीही सब कामनाओंसे सपन्न करती हैं, जो मनुष्य काशीमे विश्वभुजादेवीको प्रणाम नही करता, तोभला उस दुरात्माके बड़ेभारी उपद्रवोंकी शान्ती कैसे होसक्ती है, और जो पुण्यात्मा जन वाराणसी पुरीमे विश्वभुजादेवीकी स्तुती और पूजा करते हैं, उनको कभी विघ्नसमूह कोई बाधा नही पहुँचा सकते, यथा–

मुनेविश्वभुजा गौरी विशालाक्षी पुरः स्थिता ।
संहरन्ति महाविघ्नं क्षेत्रभक्ति जुषां सदा ॥ २१ ॥
शारदेनवरात्रेच कार्या यात्रा प्रयत्नतः ।
देव्याविश्वभुजायावै सर्वकामसमृद्धये ॥ २३ ॥
योनविश्वभुजांदेवीं वाराणस्यां नमेन्नरः ॥
कुतोमहोपसर्गेभ्यस्तस्य शान्तिर्दुरात्मनः ॥ २४ ॥
यैस्तु विश्वभुजादेवी वाराणस्यां स्तुतार्चिता ।
नहितान्विघ्नसंघातो बाधते सुकृतात्मनः ॥ २५ ॥
(का० खं० अ० ७०)

चौसट्ठी यात्रा (चौसट्ठीघाट) शारदीय नवरात्रमे शु० १–से–९ ताईं, इनके दर्शन वो पूजनसे भी अपने चिन्तित सिद्धि को मनुष्य पाजाता है, यथा–

आरभ्याश्वयुजः शुक्लां तिथिं प्रतिपदं शुभाम् ।
पूजयेन्नवमीं यावन्नरश्चिन्तितमाप्नुयात् ॥ ४८ ॥
(का० खं० अ० ४५)

श्रीदुर्गायात्रा–(नवरात्रभर दुर्गाकुण्ड स्नान, दुर्गादेवी (म० नं० २७ के समीप) दर्शन वो पूजन करनेसे नव

जन्मके सञ्चित पाप नष्ट हो जाते है यथा—

दुर्गाकुण्डे नरः स्नात्वा सर्वदुर्गतिहारणीम्।
दुर्गां सम्पूज्यविधिवन्नवजन्माघमुत्सृजेत्॥ ८७॥
(का० खं० अ० ७२) — पृष्ठ २२ श्री दुर्गाजीके निमित्त हैं
" ५६(५-१५)

नवगौरीयात्रा-(पृ० ५७ के अनुसार, यहयात्रा सब महिने के शु० ३ को होनी चाहिये यथा— पृष्ठ ५७

अतःपरं प्रवक्ष्यामि गौरीयात्रामनुत्तमाम्।
शुक्लपक्ष तृतीयायां यात्रा विश्वसमृद्धिदा॥ ६७॥
(का० खं० अ० १००)

यदि सब महीनेमे न होसकै तो आश्विन नवरात्रमे शु० ३ को करै, और यदि एकदिनमे नहोसके तो चाहिये कि नव दिनमे, प्रति दिन एक एक गौरीका दर्शन निम्न लेखानुसार, समीपी देवदर्शन युक्त अवश्य करना चाहिये।

१—मुखनिर्मालिकागौरी—गोप्रेक्षतीर्थ-(गायघाट,) वही स्नान, और वहीं, (काङ्क्षमैयाके मकानके घेरेमें, हनुमान जीके मन्दिरके पास) दर्शन वो पूजन यथा।

गोप्रेक्षतीर्थे सुस्नाय मुखनिर्मालिकांव्रजेत्॥ ६९॥
(का० खं० अ० १००)

* आश्विन शु० २ * ज्येष्ठवापी स्नान, (परन्तु ज्येष्ठवापी अब लोप होगई, अतएव मणिकर्णिका घाट स्नान) ज्येष्ठा गौरीदर्शन यथा।

ज्येष्ठावाप्यां नरः स्नात्वा ज्येष्ठां गौरी समर्चयेत्॥ ६९॥
(का० खं० अ० १००)

* आश्विन शु० ३ * सौभाग्यगौरीयात्रा-ज्ञानवापी स्नान, सौभाग्यगौरी दर्शन (विश्वनाथजीके घेरेमे पश्चिम वो उत्तरके कोनेमे) यथा।

सौभाग्यगौरी संपूज्या ज्ञानवाप्यां कृतोदकः ॥ ६१/२ ॥

(का० खं० अ० १००)

* आश्विन शु० ४ * शृङ्गारगौरी (ज्ञानवापी स्नान, वा मार्जन) शृङ्गारगौरी दर्शन (विश्वनाथजीके घेरेमे उत्तर वो पूरबके कोनेपर) यथा।

ततः शृङ्गार गौरींच तत्रैव च कृतोदकः ॥ ६१/२)

(का० खं० अ० १००)

* आश्विन शु० ५ * विशालाक्षी गौरी (विशालगङ्गा, अर्थात् मीरघाट स्नान) विशालाक्षी गौरी दर्शन (लाहौरी-टोला, धर्मकूप के समीप म० नं० ५१/८१-८२ मे) यथा।

स्नात्वाविशाल गङ्गायां विशालाक्षीं ततो व्रजेत् ॥ ७०/१ ॥

(का० खं० अ० १००)

* आश्विन शु० ६ * ललितागौरी (ललिताघाट स्नान उसी जगह ललितागौरी म० नं० ३९/६३ मे)दर्शन, वो पूजन यथा।

सुस्नातो ललितातीर्थे ललितामर्चयेत्ततः ॥ ७०/२ ॥ (का० खं० अ० १००)

* आश्विन शु० ७ * भवानी गौरी (कालिकागली शुक्रेश्वरके समीप पश्चिमदिशा म० नं० २/३५, अथवा-अन्नपूर्णा जी, प्रसिद्ध) भवानीतीर्थ स्नान, (भवानीतीर्थ लोप हो गया, अतएव मणिकर्णिका स्नान) भवानी दर्शन, यथा।

शुक्रेशात्पश्चिमाशायां भवानीं योऽभिवीक्षते ॥ ३४/१ ॥

(का० खं० अ० ६१)

स्नात्वा भवानीतीर्थेथ भवानीं परिपूजयेत् ॥ ६१/१ ॥

(का० खं० अ० १००)

* आश्विन शु० ८ * मङ्गलागौरी-पञ्चगङ्गास्नान, वो मङ्गलागौरी(म० नं० ३३/२५ मे)दर्शन, और पूजन, यथा।

मङ्गला चततोऽभ्यर्च्या विन्दुतीर्थकृतोदकैः ॥ ७८/१)

(का० खं० अ० १००)

(तथा—अन्नपूर्णाजीका दर्शन वो पूजन।)

* आश्विन शु० ९ * महालक्ष्मी गौरी दर्शन (लक्ष्मीकुण्ड) लक्ष्मी तीर्थ स्नान लक्ष्मी गौरी दर्शन वो पूजन यथा

ततोगच्छेन्महालक्ष्मी स्थिरलक्ष्मीसमृद्धये ॥ ८२/१ ॥ इति।

कार्तिक मास॥

सप्तपुरीयात्रान्तर्गत शरदऋतुमे काञ्ची (पञ्चगङ्गा)यात्रा

* कार्तिक कृ० १ * विन्दु तीर्थ (पञ्चगङ्गा) स्नान, विन्दुमाधव दर्शन, (यह यात्रा कार्तिक मासभरकी है,) यहाँके महिने भरकी यात्रासे, मनुष्य ब्रह्माण्ड मण्डल भेद कर ब्रह्मलोकको चला जाता है, प्रयागराजमे जो माघभर नहानेका पुण्य है, सो पुण्य काशी अन्तर्गत पञ्चनद तीर्थ पर कार्तिक मासमे केवल एकही दिन नहानेसे प्राप्त होता है, पञ्चनदमे स्नान, वो पितृतर्पण करि विन्दुमाधवके दर्शन करनेसे मनुष्य पुनर्जन्मका भागी नही होता, और पितृतर्पणमे जितने तिलके दाने रहते हैं, उतने वर्षके निमित्त उनके पितृ तृप्त हो जाते हैं, और श्राद्ध करनेसे अनेक योनीमे पड़े रहने पर भी पितृ मुक्त हो जाते हैं, वो इस तीर्थ पर जो कुछ धनदान किया जाता है उसका कल्पान्त पर्यन्त

क्षय नही होता, इत्यादि अमित माहात्म्य है, और जो लोग कार्तिक मासमे पापहारिणी पञ्चनद तीर्थमे स्नान नही करते वह आजलो गर्भहीमे वास करते हैं और फिर भी गर्भ वासी ही बने रहैंगे, अर्थात् चाहे कोई उत्तम कार्य भी करैं, तौभी उनकी मुक्ति नही हो सकती, अतएव सब लोगोंको चाहिये कि, यदि पूरा महिना भर न होसकै तो, पञ्चभीष्मभर (शु० ११ से पूर्णिमा पर्यन्त) व्रत करिके वा विना व्रतहीके अवश्य स्नान कर लेवैं यथा।

अतः पञ्चनदं नाम तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्।
तत्राप्लुतोनगृह्णीयाद्देहं ना पाञ्चभौतिकम्॥ ११६॥
अस्मिन्पञ्चनदीनांच संभेदेघौघभेदिनी।
स्नानमात्रात्प्रयात्येवभित्वा ब्रह्माण्डमण्डलम्॥ ११७॥
प्रयागे माघमासेतु सम्यक् स्नानस्य यत्फलम्।
तत्फलंस्याद्दिनैकेनकाश्यां पञ्चनदे ध्रुवम्॥ ११९॥
स्नात्वा पञ्चनदे तीर्थे कृत्वाच पितृतर्पणम्।
विन्दुमाधवमभ्यर्च्यनभूयो जन्मभाग्भवेत्॥ १२०॥
यावत्सङ्ख्यास्तिलादत्ताः पितृभ्यो जलतर्पणे।
पुण्ये पञ्चनदेतीर्थे तृप्तिः स्यात्तावदाब्दिकी॥ १२१॥
श्रद्धया यैः कृतंश्राद्धं तीर्थे पञ्चनदे शुभे।
तेषांपितामहामुक्ता नानायोनिगता अपि॥ १२२॥
तत्र पञ्चनदे तीर्थे यत्किञ्चिद्दीयते वसु।
कल्पक्षयेपि नभवेत्तस्य पुण्यस्य संक्षयः॥ १२६॥
यैर्नपञ्चनदेस्नानं कार्तिके पापहारिणि।
तेऽद्यापिगर्भेतिष्ठन्ति पुनस्तेगर्भवासिनः॥ १३५॥

का० खं० अ० ५९)

* कार्तिक शु० २ * (यमद्वितीया) यमघाट (संकटा-

घाट) स्नान, यमेश्वर, वो यमादित्य (वसिष्ठेश्वरकी सीढ़ी पर म० नं० ५६/२० मे) तथा — चित्रगुप्तेश्वर (रेशमकटरा) भार भूतेश्वर (गोविन्दपूरा पं० शिवकुमारशास्त्री म० म० उ० के समीप) दर्शन, इनकी यात्रा करनेसे मनुष्य यमलोकको नहीं देखता, और यमघाट पर श्राद्ध वो तर्पण करनेसे पितृऋणसे उरिण हो जाता है, यथा।

यमेशंच यमादित्यं यमेनस्थापितं नमन्।
यमतीर्थकृतस्नानो यमलोकं नपश्यति ॥ ११० ॥

(का० खं० अ० ५१)

तथा — भारभूतं ततोनत्वाचित्रगुप्तेश्वरंततः ॥ ९५ ॥

(का० खं० अ० १००)

चित्रगुप्तेश्वरंलिङ्गतदुदीच्यामघापहम् ॥ ३०० ॥

(का० खं० अ० ९७)

* कार्तिक शु० ३ — मङ्गलागौरी दर्शन, (पञ्चगङ्गा म० नं० २३/२० मे)

* कार्तिक शु० ४ * पञ्चगङ्गास्नान, विन्दुमाधव दर्शन तथा — धर्मकूपस्नान, इसतिथिको धर्मकूपपर स्नान करनेसे प्रयागस्नानसे सहस्रगुणा अधिक फल, वो वहाँ पिण्डदान करनेसे गयाके पिण्डदान, और ब्राह्मण भोजनसे अनेक वाजपेय यज्ञ करनेके समान, वो तर्पण करनेसे गया तर्पणसे कम फल नहीं होता, तथा ब्रत करि उत्सवके साथ जो धर्मेश्वरका धर्मकूपके जलसे स्नान कराय, पत्र पुष्प दुर्वा (दूब) धूप दीप नैवेद्यादिसे पूजन करता है, उसकी पूजा देवता लोग बड़ी प्रसन्नताके साथ मन्दारकी मालाओंसे करेंगे, और पुनः

जन्म पृथ्वी पर न होगा, यथा।

ये कार्त्तिके मासिसिताष्टमीतिथौ यात्रां करिष्यन्ति नराउपोषिताः।
रात्रौचवै जागरणं महोत्सवैर्धर्मेश्वरेतेनपुनर्भवाभुवि ॥ ५५ ॥
पत्रेण पुष्पेण जलेनदुर्वयायोधर्मंधर्मेश्वरमर्चयिष्यति।
समर्चयिष्यन्त्यमृतान्धसस्तं मन्दारमालाभिरतिप्रहृष्टाः ॥ ५६ ॥
(का० खं० अ० ७८)

यत्फलं तीर्थराजस्यस्नानेनपरिकीर्त्यते।
सहस्रगुणितंतत्स्याद्धर्मान्धुस्नानमात्रतः ॥ २५ ॥
यथा गयायांतृप्ताः स्युः पिण्डदानेपितामहाः।
धर्मतीर्थे तथैवस्युर्नन्यूनं नैवचाधिकम् ॥ ३३ ॥
धर्मकूपेनरः स्नात्वापरितर्प्यपितामहान्।
गयांगत्वाकिमधिकं कर्तापितृमुदावहम् ॥ ३२ ॥
तत्र योभोजयेद्विप्रान्यतिनोथतपस्विनः।
सिक्थेसिक्थे लभेत्सोथ वाजपेयफलं स्फुटम् ॥ ३८ ॥
(का० खं० अ० ८१)

* कार्तिक शु० १० * (यमुनाजयन्ती) पञ्चगङ्गा स्नान विन्दु माधव दर्शन, पुनः यमघाट (संकटाघाट) स्नान, यमेश्वर दर्शन।

* कार्तिक शु० ११ * (किन्तु समस्त महिनेकी एकादशीको) यत्नपूर्वक विष्णु तीर्थ (पञ्चगङ्गा) स्नान, विन्दुमाधव दर्शन, तथा शङ्खधारा स्नान, वो—द्वारिकानाथादि दर्शन, करना चाहिये यथा—

सम्प्राप्य वासरं विष्णोर्विष्णुतीर्थेषु सर्वतः।
यात्रा कार्याप्रयत्नेन महाफलसमृद्धये ॥
शङ्खोद्धारे हरिदिनेयत्फलंतत्फलंत्विह ॥ २९/२ ॥
(का० खं० अ० ८१)

* कार्तिक शु० १४ * (वैकुण्ठ चतुर्दशी) पञ्चगङ्गा स्नान,

विन्दुमाधव दर्शन, तथा मणिकर्णिका (कुण्ड वा गङ्गामे) स्नान, देवपितृ तर्पण करि दक्षिणा ब्राह्मणको देकरके, पुनः ढुण्ढिराज, दण्डपाणि, दण्डपाणीश्वर (दण्डपाणिके मन्दिरमें) महाकालेश्वर (ज्ञानवापी मंडपके पूरववो दक्षिणके कोनेमे पीपरके स्थान पर भूमि पूजन होता है) महेश्वर, (ज्ञानवापी मंडपके दक्षिण वो पश्चिमके कोने) ज्ञानवापी जल आचमन करि नन्दीश्वर, तारकेश्वर, द्रोपदादित्य (विश्वनाथजीके पास, हनुमानजीके, म० नं० ३⁄१ के, घेरेमे) विष्णु (विश्वनाथजीके घेरेमे दक्षिण फाटकसे घुसते वायें हाथ) वैकुण्ठेश्वर (विश्वनाथजीके सभामण्डपमे) दर्शन पूजन करि तव-विश्वेश्वरका दर्शन पूजन करै, पश्चात् अविमुक्तेश्वर दर्शन वो विश्राम करि, पुनः अन्नपूर्णादिका दर्शन वो पूजन करना चाहिये, इस दिन विन्दुमाधवको वेलपत्र, और विश्वनाथको तुलसीदल चढ़ानेका माहात्म्य प्रसिद्ध है, इस यात्रासे भी पुनर्जन्म नही होता, (इस यात्राके अन्तर्गत, एक प्रकारकी पञ्चतीर्थी यात्रा भी है) यथा।

सचैलमादौसंस्नाय चक्रपुष्करिणीजले।
सन्तर्प्यदेवान्सपितॄन्ब्राह्मणांश्चतथार्थिनः ॥ ३७ ॥
आदित्यं द्रौपदींविष्णुं दण्डपाणिं महेश्वरम्।
नमस्कृत्यततो गच्छेद्द्रष्टुंढुण्ढिविनायकम् ॥ ३८ ॥
ज्ञानवापीमुपस्पृश्य नन्दिकेशं ततोर्चयेत्।
तारकेशंततोभ्यर्च्य महाकालेश्वरं ततः ॥ ३९ ॥
ततः पुनर्दण्डपाणिमित्येषा पञ्चतीर्थिका ॥ ४० ॥

(का० खं० अ० १००)

कार्तिकस्यचतुर्दश्यां विश्वेशंयो विलोकयेत्।
स्नात्वाचोत्तर वाहिन्यां नतस्य पुनरागतिः॥ ११० ॥
(का० खं० अ० २१)

*कार्तिक शु० १५ *पञ्चगङ्गास्नान विन्दुमाधव, तथा उनके समीपी (पञ्चगङ्गेश्वर पञ्चगङ्गादेवी, द्वारिकाधीश, त्रेतावाले रामजी, लक्ष्मणबाला, मङ्गलागौरी, गभस्तीश्वर, मयूषादित्य जड़ाऊमन्दिरादि) दर्शन, तथा मणिकर्णिका स्नान, *श्रीविश्वेश्वर स्वरूपात्मक अङ्गमहा यात्रा-)

१-कृतवासेश्वराय नमः (ललाट) हंसतीर्थ (तालाबके पश्चिमतटपर)

२-ओंकारेश्वराय नमः (शिखा) छित्तनपुरा (मछोदरीके उत्तर)

३-श्रुतिश्वराय नमः (सिरके भूषण) मो० वरणा सङ्गम, आदि केशव के समीप,

४-आदिमहादेवाय नमः (कपाल) त्रिलोचन महादेवके पूरब गली मे।

५-त्रिलोचनाथाय नमः (नेत्र) त्रिलोचन घाट।

६- { गोकर्णेश्वराय नमः, भारभूतेश्वराय नमः } (दोनोकान) { दैलूकी गली, गोविन्द पुरा।

७- { विश्वेश्वराय नमः, अविमुक्तेश्वराय नमः } (दोनोदहिने हाथ) प्रसिद्ध,

८- { धर्मेश्वराय नमः — लाहौरीटोला मं० नं० ४°/१८
मणिकर्णिकेश्वराय नमः — मणिकर्णिका घाट
काकारामकी गली म. नं. ५६/३३
(दोनोबाँयाहाथ)

९—चन्द्रेश्वराय नमः (हृदय) सिद्धेश्वरीके घेरेमे म. नं. ७/७७

१०—आत्मावीरेश्वराय नमः (आत्मा) सैंधिया घाट ।

११—मध्यमेश्वराय नमः (नाभी) मैदागिन वगैचाके उत्तर,

१२—ज्येष्ठेश्वराय नमः (नितम्ब) काशीपुरा—भूतभैरव कीगली)

१३—केदारेश्वराय नमः (लिङ्ग) केदार घाट ।

१४—शुक्रेश्वराय नमः (शुक्र) कालिका गली म० नं० ३

१५—कालेश्वराय नमः
कपर्दीश्वराय नमः } दोनोचरण } वृद्धकाल, पिशाचमोचन,

१६—कोटिलिङ्गेश्वराय नमः (रोम) साक्षीविनायकके समीप, म० नं० ७/३ मे ।

चलता यथा—

सर्वेषामपिलिङ्गानां मौलित्वं कृतिवाससः ॥ १६७ ॥
ॐ कारेशः शिखाङ्गे यालोचनानि त्रिलोचनः ।
गोकर्णभारभूतेशौ तत्कर्णौ परिकीर्तितौ ॥ १६८ ॥
विश्वेश्वराविमुक्तौच द्वावेतौ दक्षिणौ करौ ।
धर्मेशमणिकर्णेशौ द्वौकरौ दक्षिणेतरौ ॥ १६९ ॥
कालेश्वरकपर्दीशौ चरणावतिनिर्मलौ ।
ज्येष्ठेश्वरो नितंबश्चनाभिर्वैमध्यमेश्वरः ॥ १७० ॥
कपर्दोस्यमहादेवः शिरोभूषा श्रुतीश्वरः ।
चन्द्रशोहृदयंतस्य आत्मा वीरेश्वरः परः ॥ १७१ ॥
लिङ्गंतस्यतु केदारः शुक्रं शुक्रेश्वरं विदुः ।
अन्यानि यानिलिङ्गानि परः कोटिशतानिच ॥ १७२ ॥
(का० खं० अ० ३३)

अथवा—(विश्वेश्वरादि ४२—लिङ्ग, वा—४२ लिङ्गमेसे

प्रथमश्रेणीके १४ लिङ्गकी यात्रा, इसदिन कुछ विशेष यात्रा होनी चाहिये) तथा—

* सोम कार्तिक दर्शन * (केदारघाट) उक्त यात्रावोंके विषै विष्णु भगवान, ध्रुवसे कहते है, कि यह यात्रा बड़ी पुण्यप्रद है; यथा,

काशीमिदानीं यास्यामिविश्वेश्वरविलोकने ।
अत्र यात्राऽस्ति महतीकार्तिक्यां बहुपुण्यदा ॥ ९ ॥

(का० खं० अ० २१)

॥ मार्गशीर्ष मास ॥

* अगहन कृ० १ * (अष्टभैरव यात्रा) यह यात्रा रवि वा मङ्गलवार अथवा अष्टमी वा चतुर्दशी तथा रवि वा मङ्गल वारको जब अष्टमी वा चतुर्दशी पड़ै, वा भैरवाष्टमीको एक दिनमे ही होनी चाहिये, समाप्तीमे कालभैरवका सविधि पूजन किया जाय, यही सब पर कोतवाल है, इस यात्रासे काशी अन्तर्गत कृत पापका दण्ड जोकि अतिभयंकर है, सो नही सहना पड़ता क्योंकि उसके करता यही है, यथा,

यामेमुक्तिपुरी काशीसर्वाभ्योपिगरीयसी ।
आधिपत्यंचतस्यास्ते कालराजसदैवहि ॥ ४६ ॥

(का० खं० अ० ३१)

और कदाचित किसीसे एकदिनमे न होसकै तो, इन दर्शनहीको परम मङ्गल मानकर, अ० कृ० १ से आरम्भ करि (प्रतिदिन एक भैरवका दर्शन करते हुये) कृ० ८ (भैरवाष्टमी) को, यात्रा (कालभैरवका व्रत रहकर पूजन करि) समाप्त करै, ।

॥ अष्टभैरवके नाम वो स्थान ॥

१-रुरुभैरवाय नमः (हनुमानघाट, घाट किनारे)

२-चण्डभैरवाय नमः (दुर्गाजीके घेरेके भीतर काली जीके मन्दिरमे)

३-असिताङ्गभैरवाय नमः (वृद्धकालके घेरेमे)

४-कपालभैरवाय नमः (लाटभैरव प्रसिद्ध)

५-क्रोधनभैरवाय नमः (कामाक्षाके मन्दिरके घेरेमे)

६-उन्मत्तभैरवाय नमः (देवरियागाँव, पञ्चक्रोशीके मार्गमे

७-संहारभैरवाय नमः (गायघाट, पाटन दरवाजेके पास)

८-भीषणभैरवाय नमः (भूतभैरव प्रसिद्ध) तथा-

कालभैरवाय नमः (प्रसिद्ध)

* अगहन कृ० ८ * (भैरवाष्टमी) कालोदककूप (मन्दिर के घेरेमे पश्चिम दिशा) स्नान, वो तर्पण, तथा व्रत रहकर कालभैरव पूजन, वो रात्रि जागरण, इसके करनेसे मनुष्य महापापोंसे छूट जाता है, और विधिवत पूजन करनेसे वर्ष-भरके विघ्न भी दूर हो जाते हैं, विश्वेश्वरका भक्त होने पर भी जो कोई कालभैरवकी भक्ति नहीं करता उनको भी काशीमे पद २ पर विघ्नोके समुदाय प्राप्त होते हैं, यथा-

भैरवा रुरुमुख्याश्च महाभयनिवारकाः।
सम्पूज्याः सर्वदा काश्यांसर्वसम्पत्तिहेतवः॥ १०३॥
(का० खं० अ० ७२)

मार्गशीर्षासिताष्टम्यां कालभैरव सन्निधौ।
उपोष्य जागरं कुर्वन्महापापैः प्रमुच्यते॥ १४३॥

कृत्वाचविविधांपूजां महासंभारविस्तरः।
नरोमार्गासिताष्टम्यां वार्षिकं विघ्न मुत्सृजेत् ॥ १४८ ॥
विश्वेश्वरेपियेभक्ता नोभक्ताः कालभैरवे।
काश्यांतेविघ्नसंघातं लभन्तेतु पदे पदे ॥ १४९ ॥
तीर्थे कालोदके स्नात्वा कृत्वातर्पणमत्वरः।
विलोक्यकालराजंच निरयादुद्धरेत्पितॄन् ॥ १५० ॥
यंयं सञ्चितयेत्कामं पापभक्षणसेवया।
वलिपूजोपहारैश्च तंतं ससमवाप्नुयात् ॥ १५४ ॥
(का० खं० अ० ३१)

॥ षड़ङ्गयोग यात्रा ॥

योगियोंको जो अनेक जन्मके महाकष्टसाध्य योग साधनसे मुक्ति प्राप्त होती है, सो षडङ्ग योगका फल काशीमे इस यात्रावोसे सहजहीमे प्राप्त होता है।

* अगहन कृ० ११ * (प्रथम षड़ङ्गयोग यात्रा) [1] वरणा सङ्गम, [2] धर्मनद (पञ्चगङ्गा), [3] ब्रह्मकुण्ड (मणिकर्णिकाकुण्ड) तथा [4] मणिकर्णिका घाट, [5] असी संगम, [6] ज्ञानवापी स्नान, यथा—

पादोदकासिसम्भेदज्ञानोदमणिकर्णिकाः।
षडङ्गोयं महायोगो ब्रह्मधर्मह्रदावपि ॥ १७६ ॥

* अगहन कृ० १२ * (द्वितीय षडङ्गयोग यात्रा) [1] गङ्गा स्नान, [2] विशालाक्षी, [3] ढुण्ढिराज, [4] दण्डपाणी, [5] श्रीविश्वेश्वर, [6] कालभैरव दर्शन यथा—

विश्वेश्वरो विशालाक्षी द्युनदी कालभैरवः।
श्रीमान् ढुण्ढिर्दण्डपाणिः षडङ्गो योग एषवै ॥ १७२ ॥

* अगहन कृ० १३ * (तृतीय षडङ्गयोग यात्रा) [1] ओंकारेश्वर, [2] त्रिलोचननाथ, [3] आत्मावीरेश्वर, [4] केदारेश्वर, [5] विश्वेश्वर, [6] कृत्तिवासेश्वर, दर्शन, यथा—

ओंकारः कृतिवासाश्च केदारश्च त्रिविष्टपः।
वीरेश्वरोध विश्वेशः षडङ्गो यमिहापरः॥ १७४॥
(का० खं० अ० ४१॥

यह षडङ्ग योग यात्रा प्रतिदिन होनी चाहिये, यदि प्रति दिन न होसकै तो प्रतिवर्ष तो अवश्य करना चाहिये, इससे अलभ्य मोक्षकी प्राप्ती सहजहीमे हो जाती है, यथा

एतत्षडङ्गयोयोगंनित्यं काश्यांनिषेवते।
संप्राप्ययोगनिद्रां सदीर्घाममृतमश्नुते॥ १७२॥
(का० खं० अ० ४१)

* अगहन शु० ११ * कालमाधव दर्शन, (काठकी हवेलीके सटे, पश्चिम वो उत्तरके कोनेपर) इनके दर्शन, पूजन, तथा रात्रि जागरणसे, कलिकालका भय छूट जाता है, वो श्रीविष्णुभगवानकी भक्ति प्राप्त होती है, जिससे मनुष्य यमलोक को नही देखता, यथा—

कालमाधवनामाहं कालभैरवसन्निधौ।
कलिश्कालो नकलयेन्मद्भक्तमितिनिश्चितम्॥ १८६॥
मार्गशीर्षस्य शुक्लाया मेकादश्यामुपोषितः।
तत्र जागरणं कृत्वा यमंनालोकयेत्क्वचित्॥ १८७॥
(का० खं० अ० ६१)

* अगहन शु० १४ * (लोटाभण्टा) पिशाचमोचन तीर्थ स्नान, सन्ध्या, तर्पण, पिण्डदान, अन्नदान, शिवयोगी भोजन, कपर्दीश्वर दर्शन से पितर यदि पिशाच योनीमे पड़े होंतो उससे छूटकर उत्तम योनीको प्राप्त होते हैं, और करता स्वयम् पिशाचत्वको नही प्राप्त होता, तथा दान वो ब्राह्मण, साधु भोजनादिका फल अनन्तगुणा होजाते हैं, जो ब्राह्मण प्रतिवर्ष यहां

के इस यात्राको करते है, वह तीर्थमे दान लेनेके पापसे छूट जाते है, यथा–

मार्गशुक्लचतुर्दश्यां कपर्दीश्वरसन्निधौ ।
स्नात्वान्यत्रापि मरणान्न पैशाच्यमवाप्नुयुः ॥ ८० ॥
अस्मिस्तीर्थे महापुण्ये येस्नास्यन्तिह मानवाः ।
पिण्डांश्च निर्वपिष्यन्ति सन्ध्यातर्पणपूर्वकम् ॥ ७५ ॥
दैवात्पैशाच्यमापन्नास्तेषां पितृपितामहाः ।
तेपि पैशाच्यमुत्सृज्य यास्यन्ति परमां गतिम् ॥ ७६ ॥
पैशाचमोचने तीर्थे सम्भोज्य शिवयोगिनम् ।
कोटिभोज्यफलं सम्यगेकैकपरिसङ्ख्यया ॥ ८४ ॥
इमां सांवत्सरी यात्रां ये करिष्यन्ति मानवाः ।
तीर्थप्रतिग्रहात्पापान्निसरिष्यन्ति तेनराः ॥ ७८ ॥
(का० खं० अ० ५४)

किन्तु इस विषयकी असही वामनपुराण, वो सनत्कुमार संहिता आदिमे भी लेख है ।

* अगहन शु० १५ * गोपी गोबिन्द तीर्थ (लालघाट) स्नान, गोपीगोविन्द (उसी स्थानपर, उपर चढकर, म० नं० ³⁄₈ मे) दर्शन, वो पूजन, इसके करनेसे मनुष्य भगवानके किसी मायामे नही पड़ता, यथा (विन्दुमाधव उवाच)

गोपीगोविन्दतीर्थे तु गोपीगोविन्दसंज्ञकम् ।
समर्च्य मान्नरो भक्त्या मम मायां नसंस्पृशेत् ॥ १९ ॥
(का० खं० अ० ६१)

तथा–(काशीरहस्यानुसार नगरप्रदक्षिणकी यात्रा) नगर प्रदक्षिण (वाराणसी प्रदक्षिणा) प्रथम गङ्गा स्नान करके नित्ययात्रा = (वार्षिक यात्रा पृ० १ के अनुसार, ढुण्ढिराज, दण्डपाणि, ज्ञानवापी, द्रौपदादित्य, विष्णुभगवान,

पुनः विश्वनाथका दर्शन वो पूजन) करि बिश्वेरसे आज्ञा माँगि, मुक्तिमण्डप (ज्ञानवापी) से मौन नियमले (मौन होकर) मोदादि पञ्च विनायकको (वार्षिक यात्रा पृ० ६२ अनुसार १ से ५ तक को) प्रणाम करि, यात्राको चलना चाहिये ।

१ मणिकर्णिकायै नमः (मणिकर्णिका घाटपर, मार्जन वो आचमन करि, यदि मौनयात्रा न सपर सकै तो, यहाँही मौन विसर्जन करि आगे चला जाय)

२ मणिकर्णिकेश्वराय नमः (घाटके ऊपर काकारामकी गली महाराज बर्द्धवानकी कोठीके म० नं० ५९/११ के घेरेमें)

३ सिद्धविनायकाय नमः (वहीं तीरे आते सीढ़ीपर)

४ गङ्गाकेशवाय नमः
५ ललितादेव्यै नमः } (ललिताघाट म० नं० ३९/५३ मे)

६ जरासिन्धेश्वराय नमः (मीरघाट, मूर्ति लोप होगई है, करारे परसे गङ्गाजीमे अक्षत फूल फेका जाता है, उसी जहम ऊपर एक मूर्ति भी है, कोई २ उसीका पूजन करते हैं)

७ रामेश्वराय नमः
८ सोमेश्वराय नमः
९ दालभ्येश्वराय नमः } (मानमन्दिर घाट)

१० शूलटङ्केश्वराय नमः ।
११ आदिवाराहेश्वराय नमः (महादेव महाराजके राममन्दिरके घेरे म० नं० १६/७० मे)
१२ बन्दीदेव्यै नमः (बलभद्रपण्डाके म० नं० १६/६८ मे) } दशाश्वमेधघाट

१३ दशाश्वमेधेश्वराय नमः (दशाश्वमेधघाट सीतला-जीके मन्दिरमें)

१४ चतुःषष्टिदेव्यै नमः (चौसट्ठीघाट)

१५ सर्वेश्वराय नमः (पाण्डेघाट)

१६ क्षेमेश्वराय नमः
१७ रुक्माङ्गदेश्वराय नमः } (क्षेमेश्वरघाट)

१८ गौरीकुण्डाय नमः
१९ केदारेश्वराय नमः } (केदारघाट)

२० हनुमदीश्वराय नमः
२१ रामेश्वराय नमः
२२ सीतेश्वराय नमः } (हनुमानघाट)

२३ लोलार्ककूपाय नमः
२४ लोलार्कादित्याय नमः
२५ कुण्डोदरेश्वराय नमः
२६ अमरेश्वराय नमः
२७ अर्कविनायकाय नमः } (भदैनी लोलार्ककूप प्रसिद्ध)

२८ असीसङ्गमाय नमः
२९ असीसङ्गमेश्वराय नमः
३० जगन्नाथाय नमः (प्रसंगात्) } (असीघाट)

(सीतलदासजीके स्थानसे होते हुये नारेमेसे दुर्गाजी)

३१ दुर्गाकुण्डाय नमः
३२ दुर्गविनायकाय नमः
३३ दुर्गादेव्यै नमः } (दुर्गाकुण्ड)

(दुर्गाजीसे पच पेड़वा, सुर्जनकी सराय, पटियां, बजरडीहा, होते हुये मडुहाडीह आना चाहिये ।)

३४ शालकण्टकविनायकाय नमः (मडुआडीह)

३५ कुष्माण्ड़विनायकाय नमः (फुलवरिया गाँव)

३६ चण्ड़ीदेव्यै नमः
३७ मुण्ड़विनायकाय नमः
३८ चण्डीश्वराय नमः
३९ पाशपाणिविनायकाय नमः
(सदरबाज़ार कम्प)

४० नन्दीश्वराय नमः (मलदाहिया)

४१ नन्दीश्वरीदेव्यै नमः (नदेसरमहाराज बनारसके कोठीमे, वहांसे वरणा किनारे होते हुये, चौकाघाट वढ़ैयाके तालावपर आना, यदि एकदिनमे न होसकै तो यहाँ ही टिकरहकर, सवेरे नित्यक्रयासे निवृत्त हो स्नान करि पुनः वरणातटसे यात्रा आरम्भ करना)

४२ शैलेश्वरी देव्यै नमः
४३ शैलेश्वराय नमः
(मढ़ियाघाट)

४४ प्रयागसंज्ञकलिङ्गाय नमः (मढ़िया वो ककरहाघाट के मध्यमे)

४५ शान्तिकरीगौर्यै नमः (ककरहाघाट)

४६ कुन्तीश्वराय नमः (कोनियांघाटके ऊपर, गाँवमे, पकड़ीके नीचे)

४७ वरणासङ्गमाय नमः
४८ सङ्गमेश्वराय नमः
४९ आदिकेशवाय नमः
५० केशवादित्याय नमः
५१ खर्वविनायकाय नमः
५२ नक्षत्रेश्वराय नमः
(वरणासंङ्गम)

(आदिकेशवके पिछवाड़े, किलामे)

५२ प्रह्लादेश्वराय नमः
५२/१ विदारनृसिंहाय नमः
५२/२ प्रह्लादकेशवाय नमः (नरेन्द्र-नाथ बंङ्गालीके घेरेमे) } (प्रहलादघाट)

५३ भृगुकेशवाय नमः (गोलाघाट) "त्रिलोचन"

५४ त्रिलोचनेश्वराय नमः (त्रिलोचनघाट) = "पिलपिला तीर्थ"

५५ नरनारायणाय नमः (माथाघाट)

५६ पञ्चगङ्गायै नमः
५७ विन्दुमाधवाय नमः
५८ मङ्गलागौर्यै नमः
५९ गभस्तीश्वराय नमः (मङ्गलागौरीके म० नं० २३/८५ मे) } (पञ्चगङ्गाघाट)

+ जगन्नाथाय नमः
६० बीररामेश्वराय नमः (रामघाट)

६१ अग्नीश्वराय (अङ्गारकेश्वराय) नमः (म० नं० ६४/१ मे)
६२ उपशान्तेश्वराय नमः (म० नं० ६४/४ मे) } (अग्नीश्वरघाट = गणेशघाट)

६३ नागेश्वराय नमः (वावाजानकी दासजीके स्थानके समीप म० नं० ६४/३४ मे)
६४ हरिश्चन्द्रेश्वराय नमः (म. नं. ५६/८३ मे)
६५ वसिष्ठेश्वराय नमः (म० नं० ५६/७८ मे) = "वसिष्ठ+वामदेव"
६६ वीरेश्वराय नमः (आत्मावीरेश्वर प्रसिद्ध)
६७ वासुकीश्वराय नमः (म० नं० ५६/७१ मे)
६८ पर्वतेश्वराय नमः (म० नं० ५६/७५ मे) } (सङ्कठाघाट, सेंधियाघाट)

६९ महेश्वराय नमः (घाटकिनारे मढ़ीमे)
७० मणिकर्णिकायै नमः (यहाँ स्नान, वा मार्जन करना) } (मणिकर्णिकाघाट)

(मणिकर्णिकाघाटसे ज्ञानवापी आना, मार्जन वो आचमन करना) पुनः

७१ विश्वनाथाय नमः
७२ अन्नपूर्णादेव्यै नमः
७३ ढुण्ढिराजाय नमः
७३/१ साक्षीविनायकाय नमः
७३/२ दण्डपाणये नमः
७३/३ ज्ञानवाप्यै नमः
} (विश्वनाथजी)

(ज्ञानवापीमे अक्षत छोड़कर, ब्राह्मणोको दक्षिणा दे यात्राकी समाप्ती करि घर २ जाना)

"यह यात्रा करनेवाला - नगर (काशी) मे किये हुये पापोंसे छूट जाताहै याने निष्पाप हो जाताहै -"

॥ पौषमास ॥

= बकरीकुण्ड = उत्तरार्क कुण्ड = अर्क कुण्ड

पौषके रविवारको उत्तरार्क (अलईपुर, बकरियाकुण्ड) की वार्षिक यात्रा, काशीवास तथा काशीके अनेक यात्रा ओंका पूर्ण फल देती है, अतएव काशीवास फलाभिलाषी भक्तजनोंको चाहिये कि इस यात्राको प्रतिवर्ष बराबर करते रहें, यथा। +

उत्तरार्कस्य देवस्य पुष्ये मासि रवेर्दिने।
कार्या सांवत्सरी यात्रा नरैः काशीफलेप्सुभिः ॥ ५७ ॥
(का० खं० अ० ४७)

+ पौषमासके रविवारको, भगवान, कामनारहित, एकभोजी, वृती, स्नान मार्जनादिक करके, गुड़ हविमार्य सूर्यका दर्शन पूजन, होम, दान, करताहै, वह निरसन्देह आयाम सब विगारपत्याहै, का. खं. ४७६३

* पौष कृ० ७ * विधीश्वराय नमः (नीमवाली ब्रह्मपुरी, पं० रमाँनाथव्यासके समीप, उमाँदत्तजी मिश्रगङ्गापुत्रके म० नं० ५६ मे) यह यात्रा नन्दीपुराणानुसार,

* पौष कृ० १५ * (केदार अन्तर्गृही यात्रा) इस यात्राके करनेसे भैरवीयातना नही होती, ॥ केदारघाट स्नान, वो सङ्कल्प करि यात्राको चलना,

१ आदिमणिकर्णिकायै नमः
२ केदारेश्वराय नमः
३. गणपतये नमः ।
४ दण्डपाणये नमः ।
५ भैरवाय नमः ।
६ स्कन्दाय नमः ।
७ अन्नपूर्णायै नमः ।
८ पार्वत्यै नमः ।
९ दक्षिणामूर्तये नमः ।
१० चण्डगणाय नमः ।
११ इन्द्रद्युम्नेश्वराय नमः ।
१२ कालञ्जराय नमः ।
१३ नन्दीकेशेश्वराय नमः ।
१४ दधिचीश्वराय नमः ।
१५ नीलकण्ठेश्वराय नमः ।
१६ गौरीकुण्डाय नमः ।
१७ हरपापतीर्थाय नमः ।
१८ हरपापेश्वराय नमः ।
१९ किरातेश्वराय नमः ।

(केदारघाट)

२० लम्बोदरविनायकाय नमः । (केदारजीके समीप,

सोनारपुरा, "चिन्तामणि विनायक" प्रसिद्ध म० नं० ६/९ मे)

२१ शत्रुघ्नेश्वराय नमः —
लल्लूजीके धर्मशालेके समीप
म० नं० ४/१७ मे

२२ भरतेश्वराय नमः —
काशीनाथशास्त्रीके म०नं० ४/४८ मे

२३ लक्ष्मणेश्वराय नमः —
अनन्यशास्त्रीके म० नं० ४/१६ मे

२४ रामेश्वराय नमः —
हनुमानजीके मन्दिरके घेरे
म० न० ५/१९ मे

२५ सीतेश्वराय नमः —
तत्रैव-नीमके जड़मे

२६ हनुमदीश्वराय नमः —
म० नं० ५/१९ मे

२७ रुरुभैरवाय नमः —
घाटकिनारे

(हनुमानघाट) — entries २१–२७

२८ स्वप्नेश्वराय नमः —
(बादशाहगञ्ज म० नं० ३/२६७ मे)

२९ स्वप्नेश्वरीदेव्यै नमः
तत्रैव,

शिवालेघाटके पास — entries २८–२९

३० अक्रूरेश्वराय नमः (अक्रूरघाट भदैनी)

३१ चामुण्डादेव्यै नमः
३२ चर्ममुण्डादेव्यै नमः
३३ महारुण्डादेव्यै नमः

(लोलार्ककूपके पास भदैनी) — entries ३१–३३

३४ कर्धमेश्वराय नमः ३५ अर्कविनायकाय नमः ३६ पराशरेश्वराय नमः (म० नं० २/२१७ मठमे) ३७ उद्दालकेश्वराय नमः (तत्रैव) ३८ अपरेश्वराय नमः ३९ कुण्डोदरेश्वराय नमः ४० लोलार्कतीर्थाय नमः ४१ लोलार्काय नमः ४२ शुष्केश्वराय नमः । ४३ जनकेश्वराय नमः	(लोलार्ककूपके पास भदैनी)
४४ असीसङ्गमाय नमः ४५ संङ्गमेश्वराय नमः १ म० नं० १/३५ मे २ म० नं० १/४२ मे	(असीसङ्गम)
४६ सिद्धेश्वराय नमः ४७ सिद्धेश्वरीदेव्यै नमः ४८ स्थाणुलिङ्गेश्वराय नमः ४९ कुरुक्षेत्रतीर्थाय नमः	(कुरुक्षेत्र)
५० दुर्गाकुण्डाय नमः ५१ दुर्गविनायकाय नमः ५२ दुर्गादेव्यै नमः ५३ कालरात्री देव्यै नमः ५४ चण्डभैरवाय नमः	(दुर्गाकुण्ड)

५५ द्वारेश्वराय नमः
५६ शूर्पकर्णेश्वराय नमः
५७ कुक्कुटेश्वराय नमः
५८ जाङ्गलीश्वराय नमः
५९ तिलपर्णेश्वराय नमः
} (दुर्गाकुण्ड)

६० मुकुटेश्वराय नमः
६१ वराकादेव्यै नमः
} (डौड़ियाबीर)

६२ शङ्खोद्धारतीर्थाय नमः
६३ द्वारिकानाथाय नमः
६४ द्वारिकेश्वराय नमः
६५ शङ्कुकर्णेश्वराय नमः
} (शङ्खूधारा)

६६ वैजनाथेश्वराय नमः
६७ कहोलेश्वराय नमः
६८ कामाक्षादेव्यै नमः म० नं० २१/१८९ मे
६९ क्रोधनभैरवाय नमः तत्रैव
७० बटुकभैरवाय नमः
७१ घृष्णीश्वराय नमः
} (कमच्छा)

७२ ब्रह्मपदपदेश्वराय नमः
७३ लवेश्वराय नमः म नं ५५/३३ के समीप
७४ कुशेश्वराय नमः तत्रैव
} (लकसा)

७५ रामकुण्डाय नमः
७६ रामेश्वराय नमः
} (रामकुण्ड)

७७ लक्ष्मीकुण्डाय नमः
७८ करवीरेश्वराय नमः मं० नं० ५०/१४ मे
७९ महालक्ष्मीश्वराय नमः (नृसिंह बाबू बङ्गाली मं० नं० ५०/२६ मे
} (लक्ष्मीकुण्ड)

८० कुणिताक्षविनायकाय नमः मं० नं० ५०/२० मे
८१ महालक्ष्मीदेव्यै नमः
} (लक्ष्मीकुण्ड)

८२ महाकालीदेव्यै नमः
८३ महासरस्वतीदेव्यै नमः
८४ शिखिचण्डीदेव्यै नमः
८५ उग्रेश्वराय नमः
} (लक्ष्मीकुंड)

८६ रुद्रसरोवर तीर्थाय नमः
८७ शूलटङ्केश्वराय नमः
८८ दशाश्वमेधतीर्थाय नमः
८९ बन्दीदेव्यै नमः
९० दशाश्वमेधेश्वराय नमः
९१ गोव्याघ्रेश्वराय नमः
९२ मान्धातेश्वराय नमः
} (दशाश्वमेधघाट)

९३ चतुःषष्टिदेव्यै नमः (चौसट्ठीघाट)

९४ वक्रतुण्डविनायकाय नमः (सरस्वतीविनायक, राणामहल म० नं० २०/१८ ए, के समीप)

९५ पातालेश्वराय नमः
(म० नं० २८/५१ के समीप)
९६ सिद्धेश्वराय नमः
९७ हरिश्चन्द्रेश्वराय नमः
९८ नैऋतेश्वराय नमः
९९ अङ्गिरसेश्वराय नमः
} (बङ्गालीटोला)

१०० पुष्पदन्तेश्वराय नमः मं० नं० ४८/४६ मे
१०१ एकदन्तविनायकाय नमः
१०२ गरुड़ाय नमः
१०३ गरुड़ेश्वराय नमः मं० नं० ३२/२५६
} (बंगालीटोला)

१०४ सर्वेश्वराय नमः
(मं० न० २५/२६ मे)
१०५ सोमेश्वराय नमः
} (पाँड़ेघाट)

१०६ नारदेश्वराय नमः
(मं० न० $\frac{२४}{३८}$ तैलंगमठ मे)
१०७ वभ्राटकेश्वराय नमः
१०८ अत्रीश्वराय नमः
१०९ अनुसुयादेव्यै नमः
११० अनुसूयेश्वराय नमः
(नारदघाट)

१११ मानः सरोवर तीर्थाय नमः
११२ मानः सरोवरेश्वराय नमः
११३ सुराभाण्डेश्वराय नमः
(डौड़ियावीरके समीप म० नं० $\frac{२७}{२९}$ मे=तिलभाण्डेश्वर नाम से प्रसिद्ध)
११४ विभाण्डेश्वराय नमः
११५ कहोलेश्वराय नमः
११६ नर्मदेश्वराय नमः
(म० नं० $\frac{१३}{२४}$ मे)
११७ सुरेश्वराय नमः
११८ पद्मसुरेश्वराय नमः
(मानसरोवर)

११९ क्षेमेश्वराय नमः
१२० चित्राङ्गदेश्वराय नमः —
(कुमारस्वामी का म० नं० $\frac{२४}{१०९}$ में)
१२१ चित्राङ्गदेश्वरीदेव्यै नमः —
—— (तत्रैव)
१२२ रुक्माङ्गदेश्वराय नमः
(क्षेमेश्वरघाट)

१२३ अम्बरीषेश्वराय नमः
१२४ तारकेश्वराय नमः
१२५ आदिमणिकर्णिकायै नमः
१२६ केदारेश्वराय नमः
(केदारघाट)

यथा-पुरः केदारनाथस्य क्षेत्रमन्तर्गृहं स्थिताम् ।
पूर्वस्यां दिशिगङ्गार्धं भागं तीर्थसमन्वितम् ॥
अर्धक्रोशं चाग्निदिशि लोलार्कशान्तदक्षिणे ।
सर्वपापप्रशमनं शङ्खोद्धारान्तनैर्ऋतम् ॥
पश्चिमे वैद्यनाथातं रमातीर्थं तु वायुदिक् ।
उत्तरे शूलटङ्कान्तमीशान्यक्रोशमर्धकम् ॥
एतन्मध्ये सुराभाण्डलिङ्गादीनि बहुस्यच ।
श्रीविश्वनाथकेदारकाश्यां केदारनामतः ॥
सद्यस्तारयते लोकान् भैरवीयातनां विना ।
इ० केदारखण्डे केदारमाहात्म्ये अ० ३)

* पौष शु० १५ * (चारोधाम यात्रा) नरनारायण तीर्थ, (=बद्रीनारायण,- माथाघाट (त्रिलोचनघाट वो गायघाटके बीचमे) स्नान, नरनारायण (=बद्रीनारायण) दर्शन (माथा-घाटके ऊपर मं० $\frac{१}{२४}$ मे), इस यात्रासे मनुष्य गर्भवाससे छूट जाता है, किन्तु साक्षात् नारायणका रूपही होता है, यथा ।

नरनारायणे तीर्थे नरनारायणात्मकम् ।
भक्त्यासमर्च्य मां स्युर्वै नरनारायणात्मकाः ॥ १६ ॥
(का० खं० अ० ६१)

नरनारायणाख्यं हि ततस्तीर्थं शुभप्रदम् ।
तत्तीर्थमज्जनात्पुंसांगर्भवासः सुदुर्लभः ॥ २१ ॥
(का० खं० अ० ८४)

पुरुषोत्तमपुरी-(जगन्नाथ यात्रा)रामघाट तथा अस्सीघाट) स्नान, दर्शन, श्रीरामेश्वरयात्रा=मीरघाट

द्वारावती,-(द्वारिका यात्रा)-सङ्खूधारा) इस यात्रामे स्नान, तर्पण, श्राद्ध, दर्शन, ब्राह्मण, अभ्यागत भोजन, तथा दान, आदि जैसा कि तीर्थोंमे किया जाता है, करना चाहिये

॥ माघमास ॥

(माघकी किसी ७ को जब रविवार पड़े तब, आदि-केशवके समीप पादोदक तीर्थमे प्रातःकाल मौन होकर स्नान करि) केशवादित्य (आदिकेशवके समीप) वा द्वादशादित्य, (जिनके पृथक् २ स्थान हैं,) यात्रा करना चाहिये, इसके करनेसे मनुष्य सात जन्मोके पापोंसे छूट जाता है, यथा ।

अगस्ते रथसप्तम्यां रविवारो यदाप्यते ।
तदापादोदकेतीर्थे आदिकेशव सन्निधौ ॥ ७६ ॥
स्नात्वोषसि नरोमौनी केशवादित्य पूजनात् ।
सप्तजन्मार्जितात्पापान्मुक्तो भवतितत्क्षणात् ॥ ७७ ॥
(का० ख० अ० ५१)

* माघ कृ० १ - से - शु० १५ * ताई (दशाश्वमेध) प्रयागघाट स्नान, प्रयागमाधव, प्रयागेश्वर, [बन्दीदेवीके समीप, बलभद्र पण्डाके मकान नं० मे] दर्शन, वो पूजनसे समस्तपापोंसे मनुष्य छूट जाता है, किन्तु दस अश्वमेघ यज्ञ करनेका फल होता है और जो माघमासमे महिना भर सनियम भक्ति पूर्वक स्नान करि प्रयाग माधव वो प्रयागेश्वरका दर्शन करता है, वह इस लोकमे धन धान्य पुत्रादि संपतियोंको पाकर परम भोगको भोगता है, और अन्तमे मोक्षको प्राप्त होता है, माघमासमे काशी प्रयागेश्वरके समीप उक्त अघ-हारी प्रयाग तीर्थपर सर्व तीर्थ स्नान, करने आते है, विशेष फलकी इच्छा वालेको वहाँ केश मुण्डन, पिण्डदान, तथा अनेक प्रकारके दान, बहुत भावसे करना चाहिये, माघमासमे

प्रयाग जानेसे जो फल सुना गया है, और गङ्गा यमुनाके सङ्गमपर स्नान करनेसे जो पुण्य होता है, तथा सूर्यग्रहणमे कुरुक्षेत्रमे स्नान, और अनेक दानसे जो फल होता है, सो माघमासमे काशी अन्तर्गत दशाश्वमेध (प्रयाग) घाट पर स्नान करनेसे, उसका दसगुना अधिक फल होता है, हा ! सूर्य्यके मकर राशिमे चले आने पर माघमासमे अरुणोदय समय जिन लोगोने काशीके प्रयाग तीर्थमे स्नान नही किया उनको भला मोक्ष कहाँसे मिलेगा, ? अर्थात् कहीं नही, यथा—

उदग्दशाश्वमेधान्मां प्रयागाख्यंचमाधवम्।
प्रयागतीर्थे सुस्नातो दृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते ॥ २९ ॥
काश्युद्भवे प्रयागे ये तपसि स्नान्ति संयताः।
दशाश्वमेधजनितं फलं तेषां भवेद् ध्रुवम् ॥ ३८ ॥
प्रयागमाधवं भक्त्या प्रयागेशं च कामदम्।
प्रयागे तपसि स्नात्वा येर्चयन्त्यन्वहं सदा ॥ ३९ ॥
धनधान्यसुतर्द्धीस्ते लब्ध्वा भोगान्मनोरमान्।
भुक्त्वेहपरमानन्दं परं मोक्षमवाप्नुयुः ॥ ४० ॥
प्राप्य माघमघारिंच प्रयागेशसमीपतः।
प्रातः प्रयागे संस्नाति सर्वतीर्थानि मामनु ॥ ४४ ॥
वपनं तत्र कर्तव्यं पिण्डदानं च भावतः।
देयानि तत्र दानानि महाफलमभीप्सुना ॥ ३४ ॥
प्रयागे गमने पुंसां यत्फलं तपसि श्रुतम्।
तत्फलं स्याद्दशगुणमत्र स्नात्वा ममाग्रतः ॥ ३० ॥
गङ्गायमुनयोः सङ्गे यत्पुण्यं स्नानकारिणाम्।
काश्यां मत्सन्निधावत्र तत्पुण्यं स्याद्दशोत्तरम् ॥ ३१ ॥
दानानि राहुग्रस्तेर्के ददता यत्फलं भवेत्।

कुरुक्षेत्रे हि तत्काश्यामत्रैव स्याद्दशाधिकम् ॥ ३२ ॥
काश्यां माघः प्रयागेयैर्न स्नातो मकरार्कगः ।
अरुणोदयमासाद्य तेषां निःश्रेयसं कुतः ॥ ३७ ॥

(का० खं० अ० ६१)

* माघ कृ० ४ * [बड़े गणेशकी यात्रा] गणेशपूजन तथा ब्राह्मणोंको लड्डूदान करना चाहिये यथा।–

कुर्यात्प्रतिचतुर्थीह यात्रा विघ्नेशितुः सदा ॥ ५३ ॥
ब्राह्मणेभ्यस्तदुद्देशा देया वै मोदका मुदे ॥ ५४ ॥

(का० खं० अ० १००)

* माघ कृ० १४ * अविमुक्तेश्वर दर्शन, [अविमुक्तेश्वरकी ज्ञानवापीके उत्तर फाटक पर धर्मशालेके घेरेमे जँगलाके भीतर जहाँ दो लिङ्ग स्थापित हैं, बड़ी मूर्ति अविमुक्तेश्वरकी मानी जाती है, और २ विश्वनाथजीके घेरेमे पूरब वो दक्षिणके कोने पर, इनके दर्शन वो पूजन वो रात्रि जागरणसे मनुष्य योगीजनोंकी परमगतिको पाता है, और उसको अपने सञ्चित पापोंसे कुछ डर नही, अविमुक्तेश्वरके दर्शन वो पूजन करनेवालोंको, देखकर यमराज दूरहीसे प्रणाम करता है, हा ! विश्वेश्वर पीठ (स्थान) इस अविमुक्त महाक्षेत्रमे जिन लोगोंने परमोत्तम अविमुक्तेश्वर लिङ्गका दर्शन नही किया, वह सब बड़ेही मोहान्ध हैं ॥ यथा

कृष्णायांमाघभूतायामविमुक्तेशजागरात् ।
सदा विगतनिद्रस्य योगिनो गतिभाग्भवेत् ॥ ८९ ॥
किं बिभेति नरोधीरः कृतादघशिलोच्चयात् ।
अविमुक्तेशलिङ्गस्य भक्तिवज्रधरो यदि ॥ ९१ ॥

द्रष्टारमविमुक्तस्य दृष्ट्वा दण्डधरो यमः।
दूरादेव प्रणमति प्रबद्धकरसम्पुटः ॥ ९४ ॥
अविमुक्ते महाक्षेत्रे विश्वेशसमधिष्ठिते।
यैर्न दृष्टं विमूढास्तेऽविमुक्तं लिङ्गमुत्तमम् ॥ ९३ ॥

(का० खं० अ० ३९) तथा—

कृतवासेश्वर दर्शन वो पूजन, (हंसतीर्थ तालावके पश्चिम तटपर, रायलल्लनजीकेवाटिका नं० ४९/४२-५८ मे) माघ कृ० १४ को उपवास करके रात्रि जागरण करि इनके पूजन करनेसे भी परम गति प्राप्त होती है, यथा

माघकृष्णचर्तुदश्यामुपोष्य निशि जागृयात्।
कृत्तिवासेशमभ्यर्च्य यः स यायात्परां गतिम् ॥ ४४ ॥

(का० अ० ६८)

* माघ शु० १५ * सप्तपुरी यात्रान्तर्गत हेमन्तऋतुमे अवन्तिकापुरी (हंसतीर्थ, कृतिवाशेश्वर, वृद्धकाल) कीयात्रा, हंसतीर्थ, वृद्धकाल कूपस्नान वा मार्जन, कृतवासेश्वर, वृद्धकालेश्वरादि दर्शन, यथा

वृद्धकालपुरोभागे कृत्तिवासेश्वरावधि।
काकलपुरी ज्ञेयाह्यवन्तिह्यवतो जगत् ॥

(इति काशीरहस्ये अ० १३)

॥ फाल्गुनमास ॥

* फाल्गुन कृ० १४ * (महाशिवरात्री) यद्यपि ऐसे दिन शिवलिङ्ग मात्रके दर्शनका माहात्म्य है, तथापि प्रीतिकेश्वर महादेव—(साक्षीविनायकके पीछे पश्चिम दिशा जङ्गमगिरके म० नं० ६ मे) दर्शन, वो यहाँके जागरणका अतिमाहात्म्य है, इसके करनेसे शङ्करके समीपीगणकी पदवी

माघ शुक्ल चतुर्थी

) का. खं. $\frac{५५}{७८}$ —

"माघ शुक्ल चतुर्थ्यां तु नक्तव्रत परायणाः
ये त्वां दुण्ढे ऽर्चयिष्यन्ति तेऽर्च्याः स्युः सुरसुहाम्"

— तत्र विशेषता "डुंढी कृत यात्रा प्रकाश पृष्ठ १०७ के अन्तमें —

"माघ शुक्ल चतुर्थी को स्नान व नक्त व्रत करके, दुण्ढिराज गणेश को श्वेत तिल के लड्डू, यथोपचार पूजन, से — क्षेत्र सिद्धी, उपद्रवों की शान्ति, मन कामनाओं की प्राप्ति और सब देवता, उसके ऊपर अनुकूल होते हैं"

प्राप्त होती हैं यथा

तत्सान्निधौ प्रीतिकेशस्तत्र प्रीतिर्ममप्रिये ।
तत्रोपवासादेक स्मात्फलमब्द शताधिकम् ॥ २१८ ॥
एकं जागरणं कृत्वा प्रीतिकेश उपोषितः ।
गणत्वपदवी तस्यानिश्चिता मम पर्वणि ॥ २१९ ॥

(का० खं० अ० ९७)

ऐसाही लिङ्गपुराणमे भी लिखा है, ॥

सूचना-फाल्गुन शु० ८ यदि गुरुवार पुष्य नक्षत्र व्यतीपात योग युक्त हो तो उसदिन ज्ञानवापी कूपपर स्नान, वो तर्पण और पिण्डदानादि करनेका, गयामे स्नान, पिण्डदान, तथा पुष्कर तीर्थमे तर्पण करनेसे कोटिगुणा अधिक फल मिलता है, (यदि किसीको पञ्चक्रोशी यात्रामे ऐसा पर्व पड़ जाय तो पञ्चकोश स्थानसे ज्ञानवापी पर आकर पिण्डदानादि करि पुनः उसी स्थान पर जाकर यात्रामे मिल जाना चाहिये, क्योंकि ऐसा पर्व जल्दी नही मिलता) यथा।

फल्गुतीर्थेनरः स्नात्वा सन्तर्प्य च पितामहान् ।
यत्फलं समवाप्नोति तदत्र श्राद्धकर्मणा ॥ ३५ ॥
गुरुपुष्यासिताष्टम्यां व्यतीपातो यदा भवेत् ।
तदात्र श्राद्धकरणाद्गयाकोटिगुणं भवेत् ॥ ३६ ॥
यत्फलं समवाप्नोति पितृन्संतर्प्य पुष्करे ।
यत्फलं कोटिगुणितं ज्ञानतीर्थे तिलोदकैः॥३७॥ (का०खं०अ०३३)

* पञ्चक्रोशी यात्रा *

* फाल्गुन शु० २ * पञ्चक्रोशी यात्रा (यद्यपि इस यात्रा के निमित्त मास वो कालके विचारकी कोई आवश्यकता

नही है, क्योंकि ऐसे कार्यमे जब श्रद्धा उत्पन्न हो तभी शुभ काल है, इस विषयमे श्रीपार्वतीजीके प्रश्नोंका श्रीशङ्करजीने ऐसाही उत्तर दिया है, यथा।

यथाकथञ्चिद्देवेशि पञ्चक्रोशप्रदक्षिणम्।
कुर्यादेव न मासादि चिन्तयेद्धर्मकोविदः॥
स एव शुभदः कालो यस्मिन् श्रद्धोदयो भवेत्।

(इति ब्रह्मवैवर्त पुराणे)

तथापि दक्षिणायन, वो उत्तरायण, दोनो अयनोंमे काशी प्रदक्षिणा विशेष पुनीत मानी गई है, सोई शङ्करजी भी श्रीपार्वती देवीसे कहते हैं, कि हेसुन्दरी मै भी भैरवके भयसे सर्वदा दक्षिणायन, तथा उत्तरायन दोनो अयनोंमे काशीकी प्रदक्षिणा (पञ्चक्रोशी) यात्रा करता हूं॥ यथा

दक्षिणे चोत्तरे चैव ह्ययने सर्वदा मया।
क्रियते क्षेत्रसाक्षिरायंभैरवस्य भयादपि॥

(इति सनत्कुमारसंहितायाम्)

यह अत्यन्त ध्यान देनेकी वार्ता है कि जब साक्षात श्रीविश्वनाथजी काशीमे वास करनेके निमित्त, भैरवका मानि भय सदा दोनो अयनोंकी पञ्चक्रोश यात्रा करते हैं, तो फिर काशी वासी मनुष्य क्यो न सदा इस यात्राको करैं, यदि दोनो यात्रा न होसकै तो वर्षमे एक तो अवश्य करना चाहिये, यथा।

काश्यांतिष्ठतियोनित्यं स्नातिभागीरथी जले।
कुर्यात्सांवत्सरींयात्रां पंचक्रोशत्यसुन्दरि॥

(इति ब्रह्मवैवर्तपुराणे)

इस प्रदक्षिणाका माहात्म्य श्रीशङ्करजी श्रीमुखसे श्रीपार्वतीजीसे कहते हैं, कि " हे भामिनी जिसने काशीका त्रैलोक्य पावनी प्रदक्षिणा (पञ्चकोशी) करी, वह सातो द्वीप, सातो समुद्र सम्पूर्ण पर्वतों सहित पृथ्वी मात्रकी प्रदक्षिणा कर चुका " यथा ।

काशीप्रदक्षिणा येन कृता त्रैलोक्य पावनी ।
सप्तद्वीपा साब्धिशैला कृता तेन प्रदक्षिणा ॥

(इति नारदीयपुराणे)

इसी अभिप्रायको लेकर एक उत्तरायण यात्रा जो परमपुनीत और सर्व प्रकार सुखद, वसन्तऋतु अन्तर्गत (जिसमे न तो विशेष उष्णता है, वो न शीत, और न वर्षा) परम सोहावन फाल्गुन मास है, श्रीकाशी के धर्मज्ञ रसिक जनों ने भी महानोत्सवके सहित प्रतिवर्ष इस यात्राका नियम रक्खा है, और सबसे विशेष तो इस यात्रामे यह लाभ है कि अहर्निस एक विलक्षण आनन्द, (श्रीराम जानकी, लक्ष्मण, तथा श्रीकृष्ण राधिका वो बलदेवजी, लीलाविग्रह मूर्तियाँ मनोहर शृङ्गार धारण किये हुये हाथी आदि सवारियों पर विराजमान, काशी परिक्रमा करते हैं, और विश्रामस्थलों पर चरित्र भी होते जाते हैं, इत्यादि) भगवत दर्शन वो चरित्रोंका देखना, किसी न किसी प्रकार भगवत स्मरण होता ही रहता है, श्री गोस्वामी तुलसीदासजी महाराजकी वह महा वाक्य (रामहिं सुमिरिय

गाइय रामहिं। संतत सुनिय रामगुन ग्रामाहिं) इसी यात्रामे चरितार्थ होती है,।

और सोई सब परमानन्द लाभ समुझ कर, इस दीनने भी फालगुन शुक्लपक्ष ही इस ग्रन्थ मे निश्चित किया है॥

॥ पञ्चक्रोशीयात्राविधि ॥

ब्रह्मवैवर्तपुराण, काशीरहस्य, तथा शिवपुराण, की अनुमतिसें, यह यात्राविधि है (जिसका निर्वाह यथाशक्ति यात्रियोंको अवश्य करना चाहिये) सो नीचे लिखी जाती है,।

पञ्चक्रोशयात्राके एक दिन प्रथम, प्रातः काल उठकर, नित्ययात्रा (काशीयात्रा पृ० १ के अनुसार, मणिकर्णिका स्नान, ढुण्ढिराज, दण्डपाणी, नन्दिकेश्वर, तारकेश्वर, महाकालेश्वर, दर्शन, वो पूजन, ज्ञानोदकसे मार्जन वो आचमन करि, द्रौपदादित्य, विष्णु भगवान, तद्पश्चात विश्वनाथ जी का दर्शन, वो पूजन) करि, पञ्चक्रोशकी आज्ञा माँग, पुनः अविमुक्तेश्वर, और अन्नपूर्णा वो कालभैरव का दर्शन, वो पूजन करना, (यदि होसकै तो अन्तर्गृही यात्रा भी करलेवै,) और उसदिन हविष्य (खीर) एक वार भोजन करिके सनियम रहना, दूसरे दिन स्नानादि उक्त विधिसे नित्ययात्रा करि मुक्तिमण्डपमे आय अक्षत छोड़ना और निम्न प्रकार प्रतिज्ञा करना,

॥ प्रतिज्ञामन्त्र ॥

काश्यां प्रजातवाक्कायमनोजनितमुक्तये।
ज्ञाताज्ञातविमुक्त्यर्थं पातकेभ्योहितायच॥

पञ्चक्रोशात्मकंलिङ्गं ज्योतिरूपसनातनम्।
भवानीशङ्कराभ्यांच लक्ष्मीश्रीशविराजितम्॥
ढुण्ढिराजादिगणपैःषट्पञ्चाशद्भिरावृतम्।
द्वादशादित्यसहितं नृसिंहैः केशवैर्युतम्॥
कृष्णरामत्रययुतं कूर्ममत्स्यादिभिस्तथा।
अवतारैरनेकैश्च युतं विष्णोः शिवस्य च॥
गौर्यादिशक्तिभिर्जुष्टंक्षेत्रं कुर्यात्प्रदक्षिणम्।

पुनः श्रीविश्वनाथजी, तथा श्रीअन्नपूर्णाजी से प्रार्थना क्रिया जाय,।

॥ प्रार्थनामन्त्र ॥

पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं करिष्ये विधिपूर्वकम्।
प्रीत्यर्थं तव देवेश सर्वाघौघप्रशान्तये॥

पुनः ढुण्ढिराजका पूजन करिके प्रार्थना करना,

॥ प्रार्थनामन्त्र ॥

ढुण्ढिराजगणेशान महाविघ्नौघनाशन।
पञ्चक्रोशस्य यात्रार्थं देह्याज्ञां कृपया विभो॥

पुनः मौन होकर ज्ञानवापी के उत्तरफाटक से आय केवल श्री विश्वनाथजीके मन्दिरकी ३ प्रदक्षिणा करि साष्टाङ्ग दण्डवत करिके, तत्पश्चात् (काशी वार्षिक यात्रा पृ० ६२ के अनुसार, मोद, प्रमोद, सुमुख, दुर्मुख, गणनाथ) पञ्चविनायकका पूजन करि, पुनः मणिकर्णिकापर आकर स्नान, (वा मार्जन) करि यदि न सपरे तो मौन विसर्जन करके पञ्चक्रोशके देवताओंका पूजन करते हुये यात्रामार्गसे चलना,

॥ आवश्यक सूचना ॥

प्रतिग्रह, परान्नभोजन, परस्त्री पर कुदृष्टि, वा अयोग्यभाषण, वा अन्य धन ग्रहण, असत्य वो कुवाक्य भाषण, निन्दा, दुर्जन सङ्ग, तथा सर्व प्रकारकी पापबुद्धि और सीमा भीतर मल मूत्र त्याग, थूकना, तेल लगाना, वा तेल और पान, वो मांस मदिरा, और कुधान्यादि अभक्ष्य, चारपाई पर सोना, मैथुन, सवारी, जूता, छाता तथा चापल्यता, (कूदना, उछलना) आदि अयोग्य वस्तुवोंको प्रयत्नपर्वक त्याग देना चाहिये,

और मौन (वा भगवत् स्मरण करते) देवतोंको जल अक्षत. पुष्प, यथाशक्ति दक्षिणादि चढ़ाते, दीन दुखी वो ब्राह्मण साधु आदि मंगनोंको भी यथाशक्ति परितोष करते, श्रीराम कृष्णादि लीलास्वरूपोंमे साक्षात्कार भाव रखते हुये, वो भजन कीर्तन सुनते सुनाते, चलना, उपवास वा एक वार हविष्य अन्न (पवित्र तथा – खीर) भोजन, वो, भूमि शयन, करना चाहिये।

इस प्रकार पञ्चक्रोशीकी यात्रा जो लोग करते हैं, महाफलके भागी होते हैं,

रात्री निवास काशी रहस्यमे १–२–३–४ और शिव रहस्यमे ७ रात्री लिखा हुवा है, (यह फाल्गुनकी यात्रा शिवरहस्यहीके मतिसे सातरात्री निवासकी रक्खी गई है) परन्तु किसी २ ग्रन्थमे कोई नियम नही रक्खागया है, जिससे जितने दिनमे सपरै कर सकता है, केवल इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि पञ्चक्रोशमार्ग कहीसे किञ्चित् मात्र भी न छूटे, यदि देवदर्शनादि किसी कारणसे कही छोड़ा भी

जाय तो फिर वहाँहीं से ग्रहण किया जाय, और निम्नलिखित प्रधान देवके प्रार्थनाओके मन्त्र जहाँ कि रात्री निवास होगा, वहाँसे दूसरे दिन चलते समय, पूजनके पश्चात् पढ़े जाने चाहिये।

॥ पञ्चक्रोशीके देवतावोंके नाम वो स्थान ॥

१ मणिकर्णिकायै नमः (मणिकर्णिकाघाट तथा कुण्ड)

२ मणिकर्णिकेश्वराय नमः (काकारामकी गली महाराज वर्द्वानके म० न० ५९६/११ के घेरेमे) वहां से फिर नीचे आना

३ सिद्धविनायकाय नमः (उसी मार्गहीमे सीढ़ी पर, पुनः घाटपर उतर कर तीरे २ चलना)

४ गङ्गाकेशवाय नमः
५ ललितादेव्यै नमः } (ललिताघाट)

६ जरासिन्धेश्वराय नमः (मीरघाट मूर्तीलोप)

७ सोमेश्वराय नमः
८ दालभ्येश्वराय नमः } (मानमन्दिरघाट)

९ शूलटङ्केश्वराय नमः
१० वाराहेश्वराय नमः (महादेवघाटियाके राममन्दिरमे)
११ दशाश्वमेधेश्वराय नमः (सीतलाजीके मंदिरमे)
१२ बन्दीदेव्यै नमः (म० नं० १६/८८ मे) } (दशाश्वमेधघाट)

१३ सर्वेश्वराय नमः (पाँड़ेघाट) (पांडेजी के बैठका के पीछे + पांडे घाट के पास मे)

१४ केदारेश्वराय नमः (केदारघाट)

१५ हनुमदीश्वराय नमः (हनुमानघाट)

१६ लोलार्काय नमः
१७ अर्कविनायकाय नमः } (भदैनी प्रसिद्ध)

१८ सङ्गमेश्वराय नमः (असीघाट)

(कोई २ यहाँसे दुर्गाजी जाते हैं, औरविशेषतः यहींसे दुर्गादेवी आदिका पूजन करते हैं)

१९ दुर्गाकुण्डाय नमः
२० दुर्गविनायकाय नमः
२१ दुर्गादेव्यै नमः } [दुर्गाकुण्ड प्रसिद्ध]

(असी पर भी एक विश्राम स्थान है, और यहाँ की अधिष्ठात्री दुर्गादेवी हैं, परन्तु समीप होनेके कारण, लोग ठहरते नहीं, अतएव असीघाट मार्जन, वो ब्राह्मणको लड्डूदान, तथा स्वयं भी कुछ फलहारी जलपान करि किञ्चित् विश्राम करिके चलना, चलते समय दुर्गाजीकी प्रार्थना करना)

॥ श्रीदुर्गा प्रार्थना ॥

जय दुर्गेमहादेवि जय काशीनिवासिनि ।
क्षेत्रविघ्नहरे देवि पुनर्दर्शननमस्तुते ॥

(पुनः आगे चलना)

२२ विश्वक्सेनेश्वराय नमः [करमैतापुर गाँव]।

२३ कर्दमतीर्थायनमः
२४ कर्दमेश्वरायनमः (यहाँ कालातिल चढ़ाना चाहिये)
२५ कर्दमकूपायनमः (इसमे मुख दखनाचाहिये)
२६ सोमनाथेश्वराय नमः
२७ विरूपाक्षाय नमः
२८ नीलकण्ठेश्वराय नमः } (कदवाँ-ग्राम)

(रात्री निवास प्रातः नित्य क्रिया वो स्नान करि, कर्दमेश्वर पूजन, पश्चात् प्रार्थना)

कर्दमेशमहादेव काशिवासिजनप्रिय ।
त्वत्पूजनान्महादेव पुनर्दर्शन नमोऽस्तुते ।

(पुनः आगे चलना)

२९ नागनाथेश्वराय नमः (अमराग्राम)
३० चामुण्डादेव्यै नमः (अवडे ग्राम)
३१ मोक्षेश्वराय नमः
३२ करुणेश्वराय नमः (देल्हना ग्राम)
३३ वीरभद्रायनमः
३४ विकटाक्षदुर्गायै नमः
३५ उन्मत्तभैरवाय नमः (देउरा ग्राम)
३६ नीलगणाय नमः
३७ कालकूटगणाय नमः
३८ विमलादुर्गायै नमः
३९ महादेवेश्वराय नमः
४० नन्दीकेश्वरायनमः
४१ भृङ्गीरीटगणाय नमः
४२ गणप्रियाय नमः (मौंस ग्राम)
४३ विरूपाक्षाय नमः
४४ यक्षेश्वराय नमः (मातलदेईचक)
४५ विमलेश्वराय नमः (प्रयागपुर)
४६ मोक्षदेश्वराय नमः
४७ ज्ञानदेश्वराय नमः
४८ अमृतेश्वराय नमः (असावरी ग्राम)

४९ गन्धर्वसागराय नमः
५० भीमचण्डीदेव्यै नमः
५१ चण्डविनायकाय नमः
५२ रविरक्ताक्ष गन्धर्वाय नमः
५३ नरकार्णवतारशिवाय नमः

(भीमचण्डी ग्राम)

(द्वितीय निवास प्रातः नित्य क्रिया करि, स्नान करिके भीमचण्डी पूजन, पश्चात् प्रार्थना)—

भीमचण्डप्रचण्डानि मम विघ्नानि नाशय ।
नमस्तेऽस्तुगमिष्यामि पुनर्दर्शनकोऽस्तुते ॥

(पुनः आगे चलना.)

५४ एकपादगणाय नमः (कुचनार, ग्राम)
५५ महाभीमाय नमः (हरपुर ग्राम, हरी तलाव)
५६ भैरवाय नमः
५७ भैरव्यै नमः
(हरसोत, ग्राम)
५८ भूतनाथेश्वराय नमः (दीनदासपुर)
५९ सोमनाथेश्वराय नमः (लगोटिया हनुमान प्रसिद्ध)
६० सिन्धुसरोधनतीर्थाय नमः (वहीं एक तालाब है)
६१ कालनाथेश्वराय नमः (जनसा ग्राम)
६२ कपर्दीश्वराय नमः (" ")
६३ कामेश्वराय नमः (चौखण्डी ग्राम)
६४ गणेश्वराय नमः "
६५ वीरभद्रगणाय नमः "
६६ चारुमुखगणाय नमः "
६७ गणनाथेश्वराय नमः (भटौली, ग्राम)

६८ देहलीविनायकाय नमः (इनको लड्डू, लावा, चिउरा, ऊख, सत्तू चढ़ता है)
६९ षोड़शविनायकाय नमः (डेहरिया विनायक के पिछवाड़े)
(डेहरिया विनायक प्रसिद्ध)

७० उद्दण्डविनायकाय नमः

७१ उत्कलेश्वराय नमः (हीरम पुर ग्राम)

७२ रुद्राणीदेव्यै नमः

७३ तपोभूम्यै नमः (यह रुद्राणीकी तपोभूमि है)

७४ वरणातीर्थाय नमः (करौनाग्राम, रामेश्वर प्रसिद्ध)

७५ रामेश्वराय नमः
७६ सोमेश्वराय नमः
७७ भरतेश्वराय नमः
७८ लक्ष्मणेश्वराय नमः
७९ शत्रुघ्नेश्वराय नमः
८० द्यावाभूमीश्वराय नमः
८१ नहुषेश्वराय नमः
(इनको गङ्गाजल चढ़ाने का बड़ा माहात्म्य है)
(करौना ग्राम, रामेश्वर प्रसिद्ध)

(यह तृतीय विश्राम स्थानहै, प्रातः नित्यक्रिया से निवृत्त हो वरणा मे स्नान पिण्डदान तर्पणादि करि पुनः रामेश्वर पूजन करिके पश्चात प्रार्थना)

श्रीरामेश्वर रामेण पूजितस्त्वं सनातनः।
आज्ञां देहि महादेव पुनर्दर्शन नमोस्तुते॥

(पुनः आगे चलना)

८२ असंख्याततीर्थेभ्यो नमः (तालाब)
८३ असंख्यातलिङ्गेभ्यो नमः (मन्दिरमे)
(वरणापार भुलनीवारी)

८४ देवसन्ध्येश्वराय नमः (कसेमा ग्राम)

८४/१ पञ्चपाण्डवेश्वराय नमः } (शिवपूर)
८४/२ द्रौपदीकूपाय नमः }

(शिवपूर, पञ्च पाण्डवेश्वरका दर्शन, वो पूजन, करि रात्री निवास करना, यह चतुर्थ निवास स्थान है, परन्तु यहाँ किसी ग्रन्थके प्रमाणसे निवास नही पाया जाता है, अनुमानसे सिद्ध होता है कि, रामेश्वरकी मंज़िल कुछ कड़ी पड़ती है, जिसकी थकाहट रहती है, तथा यात्रियोंके घरवाले यहाँ मिलनेको आते हैं, इसीसे यहाँ भी निवासस्थल नियत हो गया, और इसी कारण धर्मशालें आदि भी बनगये हैं, वो पञ्चपाण्डवेश्वर प्रधान देवता भी यहां माने गये हैं, अतएव यहां भी चतुर्थ विश्राम करके, प्रातः नित्यक्रियासे निवृत हो, स्नान करि, पञ्चपाण्डवेश्वरका दर्शन करि, आगे चलना)

८५ पाशपाणिविनायकाय नमः (सदर बाज़ार)

८६ पृथ्वीश्वराय नमः (खजुरी, ग्राम, पिसनहरिया कूप)

८७ स्वर्गभूम्यै नमः (सारङ्ग तालाव, यहाँ केवल फाल्गुन मे ठाकुरजी रात्री निवास करते हैं, इसीसे फाल्गुनकी यात्रा मे एक यहाँ भी निवास होता है, यहाँ प्रधान देवता कोई नही है, प्रातः उठकर, नित्यक्रिया स्नानादि करि, आगे चलना होता है)

८८ यूपसरोवरतीर्थाय नमः (सोनातालाव, दीनदयालपुर, यहां तालावसे थोडी मट्टी निकाल कर बाहर फ़ेंकना होताहै।

८९ वृषभध्वज तीर्थाय नमः* } (कपिलधारा)
९० वृषभध्वजेश्वराय नमः }

*"वृषभध्वज तीर्थ- खालिसपुर- यह गाँव, पंडित गोकुल पाठक जी का है"

(कपिलधारा यह पञ्चम विश्रामस्थान है, प्रातः उठकर नित्य क्रियासे निवृत्त होकर, स्नान, पिण्डदान, तर्पण, गोदानादि जो कुछ करना हो करिके पुनः वृषभध्वजेश्वर पूजन पश्चात् प्रार्थना]–

वृषभध्वजदेवेश पितॄणां मुक्तिदायक।
आज्ञां देहि महादेव पुनर्दर्शन नमोऽस्तुते ॥

(पुनः जव वोते हुवे आगे चलना)

९१ ज्वालानृसिंहाय नमः (कोटवा गाँव) "यह गांव काशीजी के क्षेत्र का है"
९२ वरुणासङ्गमाय नमः
९३ आदिकेशवाय नमः
९४ सङ्गमेश्वराय नमः
९५ खर्वविनायकाय नमः (आदिकेशवके पीछे क्लिासे)
(आदिकेशव)

९६ प्रह्लादेश्वराय नमः (प्रहलाद घाट)
९७ त्रिलोचनाय नमः (त्रिलोचन घाट)

९८ पञ्चगङ्गायै नमः
९९ विन्दुमाधवाय नमः
१०० गभस्तीश्वराय नमः
१०१ मङ्गलागौर्यै नमः
(पञ्चगङ्गा घाट)

१०२ वशिष्ठेश्वराय नमः
१०३ वामदेवेश्वराय नमः
(संकटा घाट)

१०४ पर्वतेश्वराय नमः (सेंधिया घाट),

१०५ महेश्वराय नमः (घाट किनारे मढ़ीमें)
१०६ सिद्धविनायका नमः (ऊपर सीढ़ीपर)
(मणिकार्णिका घाट)

१०७ सप्तावर्णविनायकाय नमः (जवविनायक, ब्रह्मनाल,

यहाँ शेष जव छोड़कर, यात्राकी समाप्ती होती है। पुनः मणिकर्णिका घाट पर जाना]

१०८ मणिकर्णिकायै नमः ।

यहाँ स्नान करि, विश्वनाथजीके मन्दिर को आना, प्रथम (काशी वार्षिक यात्रा पृ० ६२ के अनुसार, मोद, प्रमोद, सुमुख, दुर्मुख, गणनाथ) पञ्चविनायकों की पूजा करिके पुनः ढुण्ढिराज, दण्डपाणि, का दर्शन करते, ज्ञानवापीसे होते हुये द्रुपदादित्य (हनुमानजीके मन्दिरमे) पुनः विश्वनाथजीके मन्दिरके घेरेमे विष्णु भगवान, तथा विश्वनाथजी और अन्नपूर्णादिका दर्शन करि, पुनः साक्षीविनायक होते हुये, ज्ञानवापी के उत्तर फाटक से, सभामण्डप (ज्ञानवापीमे आना) बैठकर प्रदक्षिणाके समस्त देवतावों का नाम ले २ कर अक्षत छोड़ना, पुनः—विश्वनाथजीकी प्रार्थना करना ।

पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं यथावद्या मयाकृता ।
न्यूना सम्पूर्णतां यातुत्वत्प्रसादादुमापते ॥

अक्षत छोड़ानेवाले ब्राह्मणको, तथा अपर ब्राह्मण जोकि वहाँ उपस्थित हों, दक्षिणा देकर श्रीविश्वनाथजीके समीप जाकर इस प्रकार प्रार्थना करना चाहिये ।

॥ विश्वेश्वर निकट प्रार्थनामन्त्र ॥

जय विश्वेश विश्वात्मन् काशीनाथ जगद्गुरो ।
त्वत्प्रसादान्महादेव कृता क्षेत्रप्रदक्षिणा ॥
अनेकजन्मपापानि कृतानि मम शङ्कर ।

...लिङ्गप्रदक्षिणात् ॥
...राहित्यं पापकर्मणाम् ।
...कालो गच्छतु नः सदा ॥
...महादेव सर्वज्ञ सुखदायक ।
...श्चित्तं सुनिर्वृतं पापानां त्वत्प्रसादतः ॥
...पुनः पापरतिर्मास्तु धर्मबुद्धिः सदाऽस्तुमे ।

पुनः अपने २ घर जाकर यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन कराके कुटुम्बोंके सहित आप भोजन करै, इति ।

* फाल्गुन शु० १५ * (होलिकादहन दिन) दालभ्येश्वर दर्शन (मानमन्दिर घाट) —

इनके दर्शनसे महाफल प्राप्त होता है, [ऐसा सनत्कुमारसंहितामे लिखा है]

॥ चैत्रमास कृष्णपक्ष ॥

* चैत्र कृ० १ * चतुष्षष्ठी यात्रा—[चौसठी दर्शन, चौसट्टीघाट] इस वार्षिक यात्रासे विघ्नोकी शान्तीके अतिरिक्त काशीवासियोंको औरभी बहुत लाभ होता है, वो न करने से अनेक विघ्न प्राप्त होते हैं यथा—

चैत्रकृष्णप्रतिपदि तत्र यात्रा प्रयत्नतः ।
क्षेत्रविघ्नप्रशान्त्यर्थं कर्तव्या पुण्यकृज्जनैः ॥ ५२ ॥
यात्रां च सांवत्सरिकीं यो न कुर्यादवज्ञया ।
तस्य विघ्नं प्रयच्छन्ति योगिन्यः काशिवासिनः ॥ ५३ ॥
(का० खं० अ० ४५)

योगिनी चौसठ है, उन्मेसे६० चौसट्टी घाटपर (रानामहल मे)

और वाराही (मीरघाट हरीराम पण्डाके म० नं ४२/५५ में) मयूरी (लक्ष्मीकुण्ड) शुकिका (डौरिया तीर) कामाक्षा-(कामाक्षामे) हैं, परन्तु यात्रा चौसट्टीघाट ... होती है.

(और चैत्र कृ० १ से १४ ताई तृतीय विभागका दुदश लिङ्ग यात्रा होना चाहिये, इसका आरम्भ चौसट्टी यात्राके प्रथम वा पीछे, जब चाहे कर सकते है,)

प्रथम—कृ० १—शैलेश्वराय नमः (मढ़ियाघाट)

* चैत्र कृ० २—* संगमेश्वराय नमः (वरणा संगम)

* चैत्र कृ० ३—* स्वर्लीनेश्वराय नमः (प्रहलादघाट वो राजघाटके बीचमे, मुहल्ला महादेवा, गङ्गातट पर म०न० ११/३८ मे)

चैत्र कृ० ४—मध्यमेश्वराय नमः (मधमेश्वर प्रसिद्ध मुहल्ला मैदागिन, कम्पनी बागके उत्तर, राजाशिव प्रसादके कोठीके पीछे)

* चैत्र कृ० ५—* हिरण्यगर्भेश्वराय नमः (त्रिलोचन-घाट किनारे मढ़ीमें)

*चैत्र कृ० ६—*इशानेश्वराय नमः (वासकाफाटक, कुन्दी गढ़ टोलाकी गली, मठमे)

* चैत्र कृ० ७—* (सीतलासप्तमी, श्रीवन्दी देवी जयन्ती), गोप्रेक्षेश्वराय नमः (गौरीशंकर प्रसिद्ध लालघाट गोपीगोविन्दके मन्दिर नं० ३/६८ मे) तथा—

वन्दीदेवी दर्शन (दशाश्वमेधघाट बलभद्र पण्डाके मकान नं० ३६/४८ मे) और सीतला दर्शन (दशाश्वमेधघाट प्रसिद्ध)

* चैत्र कृ० ८ * वृषभध्वजेश्वराय नमः (कपिलधारा)

* चैत्र कृ० ९ * उपशान्तेश्वराय नमः (नयाघाटके ऊपर, अंगारकेश्वरकी गली म० नं० ६४/४ में)

* चैत्र कृ० १० * ज्येष्ठेश्वराय नमः (काशीपुरा, भूतभैरव की गलीमे)

* चैत्र कृ० ११ * निवासेश्वराय नमः (काशीपुरा - भूतभैरवकी गलीमे)

* चैत्र कृ० १२ * शुक्रेश्वराय नमः (कालिकागली)

* चैत्र कृ० १३ * व्याघ्रेश्वराय नमः (काशीपुरा, भूतभैरव की गलीमे म० नं० ६२/८८ मे)

* चैत्र कृ० १४ * जम्बुकेश्वराय नमः (बड़गणेशके उत्तर द्वार पर). इस यात्रा के करनेसे मनुष्योके सर्वकार्य सिद्ध हो जाते है, और पुनः जन्म नही होता, यथा।

समारभ्य प्रतिपद यावत्कृष्ण चतुर्दशी।
एतत्क्रमेगकर्तव्यान्येतदाय तनानिवै ॥ ६१ ॥
इमांयात्रांनरः कृत्वानभूयोऽर्य्यभि जायते ॥ ६१/१ ॥

(का० ख० अ० १००) तथा—

इसी तिंथिको व्रतयुत केदारघाट स्नान, तथा ३ घूट केदारघाटका जलपान, केदार दर्शन, करनेका माहात्म्य, स्वयम श्रीशंकर जी श्रीपार्वतीसे कहते है, कि हे प्रिये यहांके तीन घूंट जलपान करनेसे मनुष्योके हृदयमे मेरेलिङ्ग स्वरूपका वास हो जाता है, हिमालयके केदारो दक पानसे जो फल मिलता है वही फल यहाँ भी प्राप्त होता है, और जो कोई एक वार भी इसकेदारेश्वरका दर्शन करलेता है, वह मेरा

अनुचर हो जाता है, अतएव प्रयत्न करकर काशीमें केदारेश्वरका दर्शन करना चाहिये यदि कोई हिमालयकी यात्रा किया चाहे तो उनलोगोंको यही बुद्धी देना चाहिये की काशी हीमे केदारेश्वरको स्पर्शकरके तुम कृत कृत्य हो जावोगे यथा।

चैत्रकृष्ण चतुर्दश्या मुपवासंविधायच।
त्रिगण्डूषा न्पिवन्प्रातर्हृल्लिंग मधितिष्ठति ॥ ६१ ॥
केदारोदक पानेनयथा तत्र फलंभवेत्।
तथात्र जायते पुंसांस्त्रीणां चापि नसंशयः ॥ ६२ ॥
केदारेशं सकृद्दष्ट्वा देविमेऽनुचरोभवेत्।
तस्मात काश्यां प्रयत्नेन केदारेशं विलोकयेत् ॥ ६६ ॥
केदारंगन्तुकामस्य बुद्धिर्देयानरैरियम्।
काश्यांस्पृशंस्त्वंकेदारं कृतकृत्यो भविष्यसि ॥ ६० ॥
(का० खं० अ० ७७

× * चैत्र कृ० १५ * भागीरथी तीर्थ (मणिकर्णिका स्मशानके दक्षिण, विश्वनाथसिंहके अराड़के नीचे) स्नान, वो प्रयत्न पूर्वक विधिवत् पिण्डदान, तर्पण, ब्राह्मण भोजन, तथा भागीरथीश्वर (विश्वनाथसिंहके अराड़मे) दर्शन करना चाहिये इस कृत्यके करनेसे मनुष्य संपूर्ण ब्रह्महत्यासे छूटजाता है, और जिनके पुरखे अधोगतिको प्राप्त हुये रहते हैं, वह ब्रह्मलोकमे पहुँचा दिये जाते हैं यथा।

ततोभागीरथेस्तीर्थं ब्रह्मनालाच्चदक्षिणे।
तत्रस्नात्वानरः सम्यङ्मुच्यते ब्रह्महत्यया ॥ १५७ ॥
भागीरथीश्वरंलिङ्गं स्वर्गद्वारस्य सन्निधौ।
दर्शनाद्ब्रह्महत्यायाः पुरश्चरण मुच्यते ॥ १५८ ॥

अशुभां गति मापन्ना यस्यपूर्वेपितामहाः ।
तेन भागीरथी तीर्थे तर्पणीयाः प्रयत्नतः ॥ १५९ ॥
तत्र भागीरथी तीर्थे श्राद्धंकृत्वा विधानतः ।
ब्राह्मणान् भोजयित्वातु ब्रह्मलोकेनयेत्पितॄन् ॥ १६० ॥

(का० खं० अ० ६१)

पुनः श्रीविश्वनाथ जीके दर्शनको जाना, प्रथम ढुण्ढिराज, दण्डपाणी दर्शन, वो पूजन, पुनः ज्ञानोदकसे मार्जन आचमन कर, द्रौपदादित्य, (हनुमान जीके मन्दिरमे अक्षवटके नीचे) दर्शन, पुनः विष्णु भगवान, (विश्वनाथके घेरेमे दक्षिण वो पश्चिमके कोनेपर) दर्शन करि, पश्चात्– श्रीविश्वेश्वरकी यथा शक्ति षोड़सो वा पञ्चोपचार पूजन करि प्रार्थना करना । यथा—

हेप्रभो ! इसमति मन्दने आपकी कृपावो सहायतासे, आपके काशीकी वार्षिक यात्रा किया, जोकि आपके अर्पण है, यदि इसमे कुछ त्रुटी रहगई होतो उस्को आप सम्हारलें, और इस दीनको अपने चरणकी भक्ति देकर, सर्व प्रकारके कष्टोंको दूर करें, आपको अनेक प्रणाम है,

प्रणाम् करि पुनः श्रीअन्नपूर्णा जीका पूजन करि प्रार्थना किया जाय,

हे जगत् जननी ! इसशिशु अयानने आपकी सहायतासे आपके प्रसन्नार्थ आपके काशीकी वार्षिक यात्रा किया है, इसमे जो कुछ त्रुटी रहगई हो उसको सुधारि अपने चरण कमलकी भक्ति देइ बालकके सर्व दुःखोंको दूर करें,

प्रणाम करि पुनः साक्षी विनायकका [illegible] प्रणाम
करि प्रार्थना करना,

हे कृपाल ! मैने काशीकी वार्षिक [illegible] किया है
आपसाक्षी रहना, पुनः कालभैरव जाना, उन[illegible] पूजन करि
प्रार्थना करना,

हे प्रभो ! यह दीन यद्यपि पापका समुद्र है, तथापि आपकी ही कृपासे सर्व पाप नाशिनी आपके श्रीकाशींकी वार्षिक यात्रा किया है, अब कृपा करके इसमे जो कुछ त्रुटी हो उसको पूर्ण करके अपने चरणोंकी प्रीति और अभय दान दीजिये, आपके चरणोंमे वारंबार प्रणाम है, प्रणाम करि यात्राकी समाप्ती करि अपने घर जाना,

इस यात्रामे अनेकबार चारोधामकी यात्रा, तथा गया श्राद्ध, वो सप्तपुरी यात्रादि किन्तु भूमण्डल भरके तीर्थोंकी यात्रा हो चुकी, अतएव इसके समाप्तीमे उत्साह पूर्वक हवन वो ब्राह्मण भोजनादि यथा शक्ति सविस्तर महोत्सवके साथ होना चाहिये ।

॥ इति ॥